अप्प-विहवो

(आत्म वैभव)

आचार्य वसुनन्दी मुनि

ग्रंथ	:	अप्प विहवो (आत्म वैभव)
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
ग्रंथकार	:	अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	आर्यिका वर्धस्वनंदनी
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
संस्करण	:	द्वितीय 1000 (सन् 2021)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति (पंजी.)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

संपादकीय

ज्ञानाद्वितं वेत्ति ततः प्रवृत्तिं, रत्नत्रये संचित कर्म मोक्षः।
ततस्ततः सौख्यमबाध मुच्चैस्तेनात्रयत्नं विदधाति दक्षः॥

मनुष्य ज्ञान से हित को जानता है, हित का ज्ञान होने से रत्नत्रय में प्रवृत्ति करता है, रत्नत्रय में प्रवृत्ति करने से संचित कर्मों से मोक्ष होता है और संचित कर्मों के मोक्ष से निर्बाध उत्तम सुख की प्राप्ति होती है, इसलिये चतुर मनुष्य ज्ञान में प्रयत्न करते हैं।

भव्य-नराः ज्ञानरथाधिरूढाः, व्रजन्ति शीघ्रं शिवपत्तनञ्च।
अज्ञानिनो मौढ्यरथाधिरूढाः, व्रजन्ति श्वभ्राभिधपत्तनं वै॥

ज्ञान रूपी रथ पर सवार हुए भव्य जीव शीघ्र मोक्षरूपी नगर को प्राप्त होते हैं और मूर्खतारूपी रथ पर सवार हुए अज्ञानी जीव निश्चय से नरकरूपी नगर को प्राप्त होते हैं।

चेतना के क्षितिज पर उदीयमान सम्यग्ज्ञान का आदित्य अज्ञान रूपी तम को तिरोहित कर वस्तु का सम्यक् अवबोध कराने में समर्थ होता है और सम्यग्ज्ञान का यह मिहिर श्रुताभ्यास स्वाध्याय से तेजस्विता को प्राप्त होता है। ''सम्यग्ज्ञान का वह सूर्य कषायों का अवशोषण, भोग रूपी कीटाणुओं का नाश, सम्यगावबोध का प्रकाश फैलाता है।'' स्वाध्याय में निरत व्यक्ति के लिये मोक्ष रूपी दुर्ग तक पहुँचने में बाधक संसार का यह दुर्गम व दुर्लंघ्य सा प्रतीत होने वाला गिरी राईवत् हो जाता है जिससे मोक्ष यात्रा सरल व सुगम हो जाती है।

अतः भव्य जीवों के हितार्थ आचार्य श्री ने मूलभाषा प्राकृत में

ग्रंथों का लेखन किया, जिससे भाषा को जीवंतता भी प्राप्त हो और सद्साहित्य के आलोक से संपूर्ण विश्व प्रकाशित हो सके।

यह ग्रंथ 378 गाथाओं में अनुबद्ध किया गया है। यह ग्रंथ मानो आत्मा के वैभव का दिग्दर्शन कराने वाला ही है। इस ग्रंथ में 12 अध्याय हैं और इसका सौष्ठव यह है कि प्रत्येक अध्याय के प्रारंभ में दो-दो तीर्थंकरों के नमन रूप दो-दो मंगलाचरण निबद्ध हैं। इस प्रकार 12 अध्यायों में 24 तीर्थंकरों का स्तवन मन आह्लादित करने वाला, विशुद्धिवर्द्धक व शांतिकारक है। प्रथम द्रव्याधिकार के अन्तर्गत षट् द्रव्यों का निरूपण है व द्वितीय उपयोगाधिकार में शुभ, अशुभ व शुद्धोपयोग की स्थिति आदि का वर्णन है। गुणस्थानों के नाम व स्वरूप के लिये तृतीय गुणस्थान नामक अधिकार है। जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य व पाप रूप नव पदार्थों का ज्ञान कराने वाला चतुर्थ पदार्थाधिकार है। सम्यक्त्व के स्वरूप उसके भेदों व अंगों का कथन करने वाला पंचम सम्यक्त्वाधिकार है। षष्टम अधिकार में सम्यग्ज्ञान का निरूपण किया गया है। सम्यक्चारित्र व निश्चय चारित्र का वर्णन सप्तम सम्यक्चारित्र अधिकार में किया गया है।

मिस्सठाणवट्टी जह, णो णाणी णेव होदि अण्णाणी।
मिस्सं मिस्ससद्धाइ, णाणं हु जत्तंतरं तस्स।।190।।
तह अविरदसद्दिट्ठी, ण संसारमग्गी मोक्खमग्गी ण।
जत्तंतरो जीवोत्थि चदुत्थ-ठाणवट्टि-अविरदो।।191।।

अर्थ–जिस प्रकार मिश्र गुणस्थानवर्ती न ज्ञानी और न अज्ञानी होता है। मिश्र श्रद्धा से उसका ज्ञान मिश्र जात्यन्तर होता है उसी प्रकार विरत सम्यग्दृष्टि न संसारमार्गी है न मोक्षमार्गी है। वह जीव जात्यंतर है। चतुर्थगुणस्थानवर्ती अविरत अर्थात् व्रत या चारित्र से रहित होता है।

संयम, व्रतादि का मूल वैराग्य का कथन करने वाला वैराग्य नामक अष्टमाधिकार है। अशुभ ध्यान से निवृत्ति शुभ ध्यान में प्रवृत्ति हेतु ध्यान का कथन करने वाला नवम ध्यानाधिकार है। आध्यात्मिक व मार्मिक संबोधन के लिये दसवाँ आत्मबोधाधिकार है। मरण के भेद, समाधि के स्वरूप आदि का वर्णन करने वाला ग्यारहवाँ समाधिसिद्धि अधिकार है एवं समय का अर्थात् आत्मा का कथन करने वाला बारहवाँ समयसाराधिकार है।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। जन-जन के श्रद्धापुंज परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का संयम, तप, ज्ञान, साधना का सौरभ सहस्रों वर्षों तक संपूर्ण विश्व को सुरभित करता रहे। गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करें। परम पूज्य गुरुवर श्री के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!.....।।

''जैनम् जयतु शासनम्''

श्री शुभमिति माघ शुक्ल दशमी
श्री वीर निर्वाण संवत् 2547
सोमवार 22.2.2021
श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली-बौलखेड़ा,
कामां, भरतपुर (राज.)

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण 15
द्रव्य स्वरूप 16
द्रव्य भेद व जीव स्वरूप 16
पंचविध अजीव द्रव्य 16
पुद्गल स्वरूप व चार भेद 17
षड्विध पुद्गल 17
षड्भेद दृष्टांत 17
धर्म द्रव्य 17
अधर्म-द्रव्य 18
आकाश द्रव्य 18
काल द्रव्य 18
द्रव्य प्रदेश संख्या व खंडाखंड निर्देश 19
शुद्ध व अशुद्ध द्रव्य 19
जीव सर्वोत्तम 20
जीव भेद 20
त्रिविध भव्य 20
सम्यक् आचरण 21
शाश्वत शुद्ध जीव 21
संज्ञी-असंज्ञी 21
संज्ञी-संज्ञी भेद 22
त्रस जीव 22
स्थावर जीव व भेद 22
साधारण जीव 23
नित्य निगोदिया 23
इतर निगोदिया 24
अह विदिय-उवजोगाहियारो 25
द्वितीयाधिकार मंगलाचरण 25
आत्म वैभव भेद 25
पौद्गलिक वैभव 25
भाव पुण्य-पाप हेतु 26
मिश्रवैभव 26
आत्मभाव भेद 27
शुभाशुभाशुद्ध भाव 27
तीन योग 27
गुणस्थान में अशुभ भाव 28
उपयोग व भाव एकार्थवाची 28
अशुभ भाव फल 28
शुभोपयोग भेद व फल 28
शुभोपयोग कहाँ? 29
शुद्धोपयोग कहाँ 29
शुद्धोपयोग फल 30
उपयोग भेद 30
उपयोग का सद्भाव 31
इदि विदियाहियारो 31
अह तिदिय-गुणट्ठाणाहियारो 32
तृतीयाधिकार मंगलाचरण 32
गुणस्थान निष्पत्ति 32
दर्शन व चारित्र मोहनीय अपेक्षा गुणस्थान 33
योग से गुणस्थान 33
गुणस्थान नाम 33

मिथ्यात्व गुणस्थान 34
सासादन गुणस्थान 34
मिश्र गुणस्थान 35
उपशम सम्यक्त्व 36
क्षायोपशमिक व क्षायिक सम्यक्त्व . 36
चतुर्थ गुणस्थानवर्ती शिवमार्गी नहीं . 37
एकदेश मोक्षमार्गी 37
देशविरत गुणस्थान 37
प्रमत्तविरत 38
प्रमत्तभाव के कारण 38
अप्रमत्त विरत 38
अपूर्वकरण गुणस्थान 39
अनिवृत्तिकरण गुणस्थान 40
सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान 40
उपशांत मोह गुणस्थान 41
क्षीणमोह गुणस्थान 41
संयोग केवली गुणस्थान 41
अयोग केवली गुणस्थान 42
सिद्ध 42
अह चदुत्थ-णवपदत्थाहियारो 43
चतुर्थाधिकार मंगलाचरण 43
मुक्त जीव 43
शुद्धाशुद्ध जीव स्वभाव 43
अजीव द्रव्य 44
आस्रव 44
आस्रव प्रत्यय 44
आस्रव बंध का हेतु 45
शुभाशुभास्रव 45
बंध तत्व 46
चतुर्विध बंध 46
बंध से भ्रमण 46
पाप व पुण्य 46
योग व कषाय से बंध 47
कषाय-बंध हेतु 47
रागी कर्म बद्धक 47
ज्ञानी कौन? 48
संवर तत्त्व 48
संवर प्रत्यय 48
संवर भेद 49
भाव संवर 49
निर्जरा व भेद 50
द्रव्य निर्जरा 50
सविपाकी-अविपाकी निर्जरा 50
सविपाकी निर्जरा 50
अविपाकी निर्जरा 51
व्रतों द्वारा अविपाकी निर्जरा 52
मोक्ष हेतु-संयम स्थानादि 52
राग-द्वेष क्षय 52
मोहक्षय से कर्मक्षय 53
शाश्वत शुद्ध द्रव्य 53
कर्महीन में विकार नहीं 53
कर्मनष्ट होने पर पुनर्जन्म नहीं 53
धर्मादि द्रव्य विभावी नहीं 54
मुक्त जीव, संसारी नहीं 54
पुण्य-प्रशस्त कर्म 54
शुभ कर्म प्रकृतियाँ 55
धर्म प्रवर्तक 55
निर्वाण हेतु शुभ प्रकृतियाँ 55
पाप फल भोगी 56
अप्रशस्त प्रकृति पाप हेतु 56
पापप्रकृति 56
पुण्यानुबंधि पुण्यादि चार भंग 57
पाप-पुण्य-फल 57
मंगलोत्तम शरण 59

पुण्य शिव हेतु भी 59
अह पंचम-सम्मत्ताहियारो 61
पंचमाधिकार मंगलाचरण 61
आत्म धर्म 61
सम्यक्दर्शन स्वरूप 61
सम्यक्त्व लक्षण 62
सम्यक्त्व के पर्यायवाची 62
सम्यग्दर्शन भेद 62
कारण कार्य 63
व्रत वृद्धि 63
अनंतानुबंधी कषाय 64
चारित्र सन्मुख 64
सम्यक्त्वयुत क्रिया 64
चारित्राभाव 65
देशव्रत 65
उत्तमश्रावक 65
श्रेण्यारोहक 65
आज्ञा सम्यग्दृष्टि 66
मार्ग सम्यग्दृष्टि 66
उपदेश सम्यग्दृष्टि 66
सूत्र सम्यग्दृष्टि 67
बीज सम्यग्दृष्टि 67
संक्षेप सम्यग्दृष्टि 67
विस्तार सम्यग्दृष्टि 68
अर्थ सम्यग्दृष्टि 68
अवगाढ़ सम्यग्दृष्टि 68
परमावगाढ़ सम्यक्त्व 69
निश्चय सम्यग्दर्शन बिना नहीं संभव 69
अभेद रत्नत्रय 69
मोक्षमार्गी कौन? 70
अविरत सम्यग्दृष्टि मोक्षमार्गी नहीं .. 70
उपचार से देशव्रती मोक्षमार्गी 70
अविरत सम्यग्दृष्टि शिवपथोन्मुख 71
उपचार से मोक्षमार्गी-सोदाहरण 71
शिवमार्ग मे गति 72
एकांतदृष्टि मिथ्यादृष्टि 72
रत्नत्रय ही मोक्षमार्ग 73
चतुर्थ गुणस्थानवर्ती व्रती नहीं 73
नि:शंकित 74
नि:कांक्षित 74
निर्विजुगुप्सा 74
अमूढ़दृष्टि 75
उपवृंहण 75
स्थितिकरण 75
वात्सल्य 76
प्रभावना 76
निश्चय सम्यग्दृष्टि 76
वीतराग सम्यक्त्व 77
अह षष्टम-सम्मण्णाणाहियारो 78
षष्टाधिकार मंगलाचरण 78
सम्यक्त्वाविनाभावी 78
सम्यग्ज्ञान स्वरूप 78
सम्यग्ज्ञान अंग 79
सम्यग्ज्ञान भेद 79
सम्यग्ज्ञान हेतु 80
स्वार्थ व परार्थ ज्ञान 80
सम्यग्ज्ञान माहात्म्य 81
सविकल्प ज्ञान 81
कर्म क्षयार्थ समर्थ 81
अह सत्तम-सम्मचरियाहियारो 83
सप्तमाधिकार मंगलाचरण 83
सम्यक् चारित्र स्वरूप 83
चारित्र ही सार 83
चारित्र भेद 84

सामायिक चारित्र 84
छेदोपस्थापना चारित्र 84
परिहार विशुद्धि चारित्र 85
सूक्ष्म सांपराय चारित्र 85
यथाख्यात चारित्र 85
निश्चय सामायिक 86
शुद्धात्मलीनता प्रतिक्रमण 86
आत्मलीनता वंदना 86
व्यवहार व निश्चय स्तुति 87
निश्चय प्रत्याख्यान 87
निश्चय-व्यवहार कायोत्सर्ग 87
उभय भ्रष्ट 87
व्यवहार बिना निश्चय,
निश्चय बिना व्यवहार नहीं 88
पुण्य-कारण 88
यथार्थ साधु 88
चारित्र बिना आत्मशुद्धि नहीं 89
अह अट्ठम-वेरग्गाहियारो 90
अष्टमाधिकार मंगलाचरण 90
वैराग्य बिना चारित्र नहीं 90
यथार्थ बोध 90
वैराग्य हेतु 91
अशुचि देह 91
पुण्यकर्म, रत्नत्रय का हेतु 92
देह विरक्ति 92
पंचविध संसार 92
भवासक्त शिवमार्गी नहीं 93
संसारी-मुक्त 93
भोग त्याज्य 93
वैराग्य मोक्षमूल 94
णवम-झाणाहियारो 95
नवमाधिकार मंगलाचरण 95
शुभध्यान सुगति-हेतु 95
अशुभध्यान दुर्गति हेतु 95
आर्तध्यान 96
आर्त्तध्यान भेद 96
आर्त्तध्यान सद्भाव 96
रौद्र ध्यान 97
रौद्रध्यान भेद 97
रौद्रध्यान सद्भाव 97
धर्मध्यान 98
धर्मध्यान भेद 98
पंच धारणा 99
धर्म ध्यान सद्भाव 99
धर्मध्यान कारण 99
शुक्ल ध्यान 100
शुक्ल ध्यान सद्भाव 101
प्रशस्त ध्यान ध्यातव्य 101
अह दहमो अप्पबोहाहियारो 103
दशमाधिकार मंगलाचरण 103
आत्मसंबोधन 103
अह एयारहमो समाहि-सिद्धाहियारो 112
एकादशाधिकार मंगलाचरण 112
द्विविध धर्म 112
आधि-व्याधि-उपाधि त्याग 113
आधि 113
व्याधि 114
उपाधि 114
समाधि के पर्यायवाची 114
सामधि मरण ही सार्थकता 114
समाधिमरण परीक्षा काल 115
रत्नत्रय रक्षा समाधि 115
सल्लेखना 116
समाधिमरण किसका? 116

समभाव स्थिरता 116
मृत्युकाल अनिश्चित 117
पंचविध मरण 117
बाल-बाल व बाल मरण 117
बालपंडित मरण 118
पंडित मरण 118
पंडित-पंडित मरण 119
पंडित मरण पश्चात् सात-आठ भव 119
बाल मरण से संख्यात भव 119
मिथ्यादृष्टि को शिवप्राप्ति अनिश्चित
काल 120
सल्लेखना कब? 120
आहार ग्रहण कारण 121
आहार त्याग कारण 121
सल्लेखना फल 121
अह बारस-समयसाराहियारो 122
द्वादशाधिकार मंगलाचरण 122
समयार्थ 122
सिद्धत्व ही समयसार 122
व्यवहार व मोक्षमार्ग 123
आत्मरत्नत्रय 123
निश्चय से जीव अभेद 123
रागी ही कर्म बंधक 124
राग रहित बंध नहीं 125
संकोच-विस्तार शक्ति युतात्मा 125
आत्म प्रदेश समान 125
असंख्यात प्रदेशी द्रव्य 125
शुद्ध नय से जीव शुद्ध 126
बंधापेक्षा जीव मूर्तिक 126
व्यवहार से विकारी भावों का
कर्ता व भोक्ता 126
शुद्ध नय से शुद्ध भाव कर्ता 127
स्वभावात्मा शुद्ध है 127
अंतिम मंगलाचरण 127
ग्रंथकार की लघुता 129
प्रशस्ति 130

अप्प-विहवो

(आत्म वैभव)

अंतरंग के वैभव का दिग्दर्शन कराने वाला यह ग्रंथ मानो आत्मदर्पण ही हो। आत्मा की वास्तविक निधि व उसको प्राप्त करने के मार्ग के मानचित्र के समान **'आत्मवैभव'** नामक यह अनुपम ग्रंथ है।

अप्प-विहवो
(आत्म वैभव)
अह पढम-दव्वाहियारो

मंगलाचरण

णमिदूण सव्व-सिद्धे, णिच्च-णिय-भाव-संपण्ण-सुद्धे य।
सग-पर-सिद्धि-णिमित्तं, वोच्छामि हु अप्प-विहवं हं।।1।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **णिच्च-णियभाव-संपण्ण-सुद्धे य**-नित्य, निज भाव संपन्न और शुद्ध **सव्व-सिद्धे**-सभी सिद्धों को **णमिदूण**-नमस्कार करके **सग-पर-सिद्धि-णिमित्तं**-स्व-पर सिद्धि के निमित्त **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) **अप्प-विहवं**-आत्म वैभव नामक ग्रंथ को **वोच्छामि**-कहता हूँ।

जीवादी सड-दवियं, सड-कम्मो धम्मो भासिदो जेण।
सय-इंदेहि वंदिदं, आदि-बंभं णमंसामि तं।।2।।

अन्वयार्थ-**जेण**-जिनके द्वारा **जीवादी**-जीव आदि **सड-दवियं**-षट् द्रव्य **सड-कम्मो**-षट् कर्म और **धम्मो**-धर्म **भासिदो**-कहा गया है (मैं) **तं**-उन **सय-इंदेहि**-शत इंद्रों से **वंदिदं**-वंदित **आदि-बंभं**-आदि ब्रह्मा को **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

चदुयालस्स हु पढमं, तित्थयर-मजियणाहं वंदित्ता।
दव्वहियारं वोच्छं, कल्लाणत्थं भवि-जीवाण।।3।।

अन्वयार्थ-**चदुयालस्स**-चतुर्थकाल के **पढमं**-प्रथम **तित्थयरं**-तीर्थंकर **अजियणाहं**-श्री अजितनाथ भगवान् की **वंदित्ता**-वंदना करके **भवि-जीवाण**-भव्य जीवों के **कल्लाणत्थं**-कल्याण के लिए **हु**-निश्चय से **दव्वहियारं**-द्रव्याधिकार **वोच्छं**-कहूँगा।

द्रव्य स्वरूप

दव्वं सल्लक्खणयं, उप्पादव्वय-धुवत्त-जुदं अत्थि।
गुणा सय धुवा णिच्चा, सुप्पादव्वया पज्जाया।।4।।

अन्वयार्थ-दव्वं-द्रव्य **सल्लक्खणयं**-सत् लक्षण वाला है **अत्थि**-अस्ति (या सत्) **उप्पादव्वय-धुवत्त-जुदं**-उत्पाद, व्यय व ध्रौव्य से युक्त है। **गुणा**-गुण **सय**-सदा **धुवा**-ध्रुव व **णिच्चा**-नित्य होते हैं तथा **पज्जाया**-पर्याय **सुप्पादव्वया**-उत्पाद और व्यय से सहित होती हैं।

द्रव्य भेद व जीव स्वरूप

दव्वं दुविहं जीवो, अजीवो जिणवसहेण णिद्दिट्ठं।
चेयण-जुत्तो जीवो, तव्विवरीअ-इदरो पणहा।।5।।

अन्वयार्थ-जिणवसहेण-श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्र के द्वारा **जीवो**-जीव व **अजीवो**-अजीव (रूप से) **दव्वं**-द्रव्य **दुविहं**-दो प्रकार का **णिद्दिट्ठं**-निर्दिष्ट किया गया है **चेयण-जुत्तो-जीवो**-चेतना से युक्त जीव है **तव्विवरीओ**-उससे विपरीत **इदरो**-इतर (अर्थात् अजीव) है (जो) **पणहा**-पाँच प्रकार का कहा गया है।

पंचविध अजीव द्रव्य

पणविह-अजीव-दव्वं, पोग्गल-धम्माधम्मा कालो खं।
कया ण जीवो जीवो, होज्ज णो जीवो वि अजीवो।।6।।

अन्वयार्थ-अजीव-दव्वं-अजीव द्रव्य **पणविहं**-पाँच प्रकार का (कहा गया) है **पोग्गल-धम्माधम्मा**-पुद्गल, धर्म, अधर्म **कालो**-काल व **खं**-आकाश। **अजीवो**-अजीव **कया**-कभी **जीवो**-जीव **ण**-नहीं होता (और) **जीवो**-जीव **वि**-भी (कभी) **अजीवो**-अजीव **णो**-नहीं **होज्ज**-हो सकता।

पुद्गल स्वरूप व चार भेद

पूरण-गलण-सहावो, फास-रस-गंध-वण्ण-संजुत्तो य।
अणु-खंध-देस-पदेस-भेयादो पोग्गलो चदुहा।।7।।

अन्वयार्थ-पोग्गलो-पुद्गल **पूरण-गलण-सहावो**-पूरन-गलन स्वभाव वाला है **फास-रस-गंध-वण्ण-संजुत्तो य**-स्पर्श, रस, गंध और वर्ण से संयुक्त है **अणु-खंध-देस-पदेस-भेयादो**-अणु, स्कंध, देश व प्रदेश के भेद से (पुद्गल) **चदुहा**-चार प्रकार का कहा गया है।

षड्विध पुद्गल

थूल-थूलो थूलो हु, थूल-सुहुमो सुहुम-थूलो सुहुमो।
सुहुम-सुहुमो छव्विहो, पोग्गलो तह वि मुणेदव्वो।।8।।

अन्वयार्थ-थूल-थूलो-स्थूल-स्थूल **थूलो**-स्थूल **थूल-सुहुमो**-स्थूल सूक्ष्म **सुहुम-थूलो**-सूक्ष्म-स्थूल **सुहुमो**-सूक्ष्म **तह**-तथा **सुहुम-सुहुमो**-सूक्ष्म-सूक्ष्म (इस प्रकार) **हु**-निश्चय से **पोग्गलो**-पुद्गल **छव्विहो**-छः प्रकार का **वि**-भी **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए।

षड्भेद दृष्टांत

पुढवी जलं च छाया, चउरिंदिय-विसय-कम्म-परमाणू।
दिट्ठंता णादव्वा, पोग्गल-छब्भेयाण कमसो।।9।।

अन्वयार्थ-पुढवी-पृथ्वी **जलं**-जल **छाया**-छाया **चउरिंदिय-विसय-कम्म-परमाणू च**-चार इंद्रिय विषय, कर्म और परमाणु (ये) **कमसो**-क्रमशः **पोग्गल-छब्भेयाण**-पुद्गल के छः भेदों के **दिट्ठंता**-दृष्टान्त **णादव्वा**-जानने चाहिये।

धर्म द्रव्य

जीव-पोग्गला किरिया-सीला तह जहाजोग्गं गच्छंति।
धम्मो तस्स कारणं, होज्ज जलयराण जह तोयं।।10।।

अन्वयार्थ-जीव-पोग्गला-जीव व पुद्गल **किरिया-सीला**-क्रियाशील होते हैं **तह**-तथा **जहाजोग्गं**-यथायोग्य **गच्छंति**-गमन करते हैं, **धम्मो**-धर्म द्रव्य **तस्स**-उसका (अर्थात् गमन का) **कारणं**-कारण है **जह**-जिस प्रकार **जलयराण**-जलचर जीवों के (गमन के) लिए **तोयं**-जल (कारण) **होज्ज**-होता है।

अधर्म-द्रव्य

जीवो पोग्गलो ठंति, जदि अधम्मो सहयारि-हेदू ता।
धम्मसहा धम्मीणं, तरुछाया जहा पहियाणं।।11।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव व **पोग्गलो**-पुद्गल **जदि**-यदि **ठंति**-ठहरते हैं **ता**-तो (उनके ठहरने में) **अधम्मो**-अधर्म द्रव्य **सहयारि-हेदू**-सहकारी कारण होता है **जहा**-जैसे **धम्मीणं**-धर्मियों के लिए **धम्मसहा**-धर्मसभा व **पहियाणं**-पथिकों के लिए **तरुछाया**-वृक्ष की छाया।

आकाश द्रव्य

जो अवगाहण-दादुं, सक्को सव्व-दव्वाण आगासो।
ववहार-णिच्छयादो, वसंति स-पदेसे सव्वाणि।।12।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सव्व-दव्वाण**-सभी द्रव्यों के लिए **अवगाहण-दादुं**-अवगाहन देने में **सक्को**-समर्थ है (वह) **ववहारादो**-व्यवहार से **आगासो**-आकाश द्रव्य है **णिच्छयादो**-निश्चय से **सव्वाणि**-सभी द्रव्य **स-पदेसे**-अपने-अपने प्रदेश में (ही) **वसंति**-निवास करते हैं।

काल द्रव्य

कालो ण कायो अत्थि, पिहं पिहं होज्ज सव्व-कालाणू।
सव्व-दव्वाण वट्टण-हेदू एग-पदेसि-कालो।।13।।

अन्वयार्थ-कालो-काल द्रव्य **कायो**-काय **ण**-नहीं है **अत्थि**-अस्ति है **कालो**-काल द्रव्य **सव्व-दव्वाण**-सभी द्रव्यों के **वट्टण-हेदू**-वर्तन का हेतु है **एग-पदेसी**-एक प्रदेशी है **सव्व-कालाणू**-सभी कालाणु **पिहं-पिहं**-पृथक्-पृथक् **होज्ज**-होते हैं।

द्रव्य प्रदेश संख्या व खंडाखंड निर्देश

जीवो धम्माधम्मा, लोगागासो असंख-पदेसी य।
पोग्गलो संखासंख-अणंता आगासाणंतो।।14।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **धम्माधम्मा**-धर्म, अधर्म द्रव्य **य**-और **लोगागासो**-लोकाकाश **असंख-पदेसी**-असंख्यात प्रदेशी हैं **पोग्गलो**-पुद्गल **संखासंख-अणंता**-संख्यात, असंख्यात व अनंत प्रदेशी है **आगासाणंतो**-तथा (संपूर्ण) आकाश अनंत प्रदेशी है।

कालासंखो खंडा, जीव-ख-धम्माधम्माण पदेसा।
अखंडा पोग्गलस्स य, खंडाखंड-खंडाखंडा।।15।।

अन्वयार्थ-कालासंखो-काल द्रव्य असंख्यात प्रदेशी है, **खंडा**-(इसके प्रदेश) खंड रूप हैं **जीव-ख-धम्माधम्माण**-जीव, धर्म, अधर्म और आकाश के **पदेसा**-प्रदेश **अखंडा**-अखंड होते हैं **पोग्गलस्स**-पुद्गल के (प्रदेश) **खंडाखंड-खंडाखंडा य**-खंड, अखंड व खंडाखंड रूप में होते हैं।

शुद्ध व अशुद्ध द्रव्य

धम्माधम्मा कालो, आगासो सय सुद्धो णादव्वो।
पोग्गल-सुद्धासुद्धा, जीवे सुद्धे णो असुद्धो।।16।।

अन्वयार्थ-धम्माधम्मा-धर्म, अधर्म **कालो**-काल (व) **आगासो**-आकाश द्रव्य **सय**-सदा **सुद्धो**-शुद्ध **णादव्वो**-जानना चाहिए **पोग्गल**-

सुद्धासुद्धा-पुद्गल शुद्ध व अशुद्ध (दोनों प्रकार से है) तथा **जीवे**-जीव **सुद्धे**-शुद्ध होने पर (कभी) **असुद्धो**-अशुद्ध **णो**-नहीं होता।

जीव सर्वोत्तम

सव्व-दव्वेसु जीवो, उत्तमो तहा सव्व-पदत्थेसुं।
सव्व-तच्चेसु णिच्चं, उत्तमो अवि अत्थिकाएसु।।17।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **णिच्चं**-नित्य **सव्व-दव्वेसु**-सभी द्रव्यों में **उत्तमो**-उत्तम है **सव्व-पदत्थेसुं**-सभी पदार्थों में उत्तम है। **सव्व-तच्चेसु**-सभी तत्त्वों में **उत्तमो**-उत्तम है **तहा**-तथा **अत्थिकाएसु**-सभी अस्तिकायों में **अवि**-भी (जीव) **उत्तमो**-उत्तम है।

जीव भेद

जीवो दुविहो णेयो, भव्वाभव्वा मुत्तो संसारी।
सण्णि-असण्णि-भेयेण, दुविहो संसारी जीवो वि।।18।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **दुविहो**-दो प्रकार के **णेयो**-जानने चाहिए **भव्वाभव्वा**-भव्य व अभव्य (अथवा) **मुत्तो**-मुक्त (व) **संसारी**-संसारी। **सण्णि-असण्णि-भेयेण**-संज्ञी व असंज्ञी के भेद से **संसारी**-संसारी **जीवो**-जीव **वि**-भी **दुविहो**-दो प्रकार के हैं।

त्रिविध भव्य

भव्वो होज्जा तिविहो, आसण्ण-दूर-दूराणुदूरा य।
बिविहा लहंति मोक्खं, दूराणुदूराभव्वोव्व य।।19।।

अन्वयार्थ-भव्वो-भव्य **तिविहो**-तीन प्रकार के **होज्जा**-होते हैं **आसण्णो**-आसन्न **दूर-दूराणुदूरा य**-दूर व दूरानुदूर **बिविहा**-आदि के दो प्रकार के जीव **मोक्खं**-मोक्ष **लहंति**-प्राप्त करते हैं **य**-और **दूराणुदूरा-अभव्वोव्व**-दूरानुदूर अभव्य के समान है।

सम्यक् आचरण

भव्वो पावदि मोक्खं, जदि जदणेणं आचरदे सम्मं।
रयणत्तय-धारि-मुणी, लहदि मोक्खं थोगकालम्मि।।20।।

अन्वयार्थ-जदि-यदि **भव्वो**-भव्य जीव **जदणेणं**-यत्नपूर्वक **सम्मं**-सम्यक् **आचरदे**-आचरण करता है (तो वह) **मोक्खं**-मोक्ष **पावदि**-प्राप्त करता है **रयणत्तय-धारि-मुणी**-रत्नत्रय धारी मुनि **थोगकालम्मि**-अल्पकाल में **मोक्खं**-मोक्ष **लहदि**-प्राप्त करते हैं।

शाश्वत शुद्ध जीव

णिक्कम्मो जो मुत्तो, लोयग्गठिदो सुद्ध-सहावी सो।
तस्स हु सुद्धावत्था, ण अवि खयदि अणंतकालम्मि।।21।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिक्कम्मो**-निष्कर्म है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **मुत्तो**-मुक्त है (वह) **लोयग्गठिदो**-लोक के अग्र भाग में स्थित **सुद्ध-सहावी**-शुद्ध स्वभावी है **तस्स**-उनकी **सुद्धावत्था**-शुद्ध अवस्था **अणंतकालम्मि**-अनंत काल में **अवि**-भी **ण खयदि**-नष्ट नहीं होती।

संज्ञी-असंज्ञी

जो मणजुत्तो सण्णी, जोग्गो सिक्खालावादिं गहिदुं।
मणरहिदो हि असण्णी, लहदि णो सो मोक्ख-मग्गं वि।।22।।

अन्वयार्थ-सिक्खालावादिं-शिक्षा, आलाप आदि **गहिदुं**-ग्रहण करने के **जोग्गो**-योग्य **जो**-जो **मणजुत्तो**-मन से युक्त है **सो**-वह **सण्णी**-संज्ञी है **मणरहिदो**-मन से रहित **हि**-ही **असण्णी**-असंज्ञी कहलाता है (वह) **मोक्ख-मग्गं**-मोक्षमार्ग **वि**-भी **णो लहदि**-प्राप्त नहीं करता।

संज्ञी-संज्ञी भेद

चदुविहो सण्णि-जीवो, माणुस-सुर-णिरय-तिरिय-भेयादो।
होज्ज असण्णी दुविहो, भेयादो तस-थावराणं।।23।।

अन्वयार्थ-माणुस-सुर-णिरय-तिरिय-भेयादो-मनुष्य, देव, नरक व तिर्यंच के भेद से **सण्णि-जीवो**-संज्ञी जीव **चदुविहो**-चार प्रकार के हैं। **असण्णी**-असंज्ञी जीव **तस-थावराणं**-त्रस व स्थावर के **भेयादो**-भेद से **दुविहो**-दो प्रकार के **होज्ज**-होते हैं।

त्रस जीव

होज्ज बेइंदियादो, पंचिंदिय-पेरंतं सव्व-तसा।
बे-ति-चदु-पंचिंदिया, णिवसंति खलु तसणालीए।।24।।

अन्वयार्थ-बेइंदियादो-दो इंद्रिय से **पंचिंदिय-पेरंतं**-पंचेंद्रिय पर्यन्त **खलु**-निश्चय से **सव्व-तसा**-सभी जीव त्रस **होज्ज**-होते हैं **बे-ति-चदु-पंचिंदिया**-दो, तीन, चार व पाँच इंद्रिय जीव **तसणालीए**-त्रसनाली में ही **णिवसंति**-निवास करते हैं।

स्थावर जीव व भेद

पुढवी जलग्गि-वाऊ-वणप्फदि-काइगा एइंदिया य।
थावर-थावर-सीलो, णिवसंति ते सव्व-लोयम्मि।।25।।

अन्वयार्थ-पुढवी-पृथ्वी **जलग्गि-वाऊ-वणप्फदि-काइगा य**-जल, अग्नि, वायु व वनस्पति कायिक **एइंदिया**-एकेन्द्रिय होते हैं। **थावर-थावर-सीलो**-स्थावर-स्थावर शील हैं **ते**-वे **सव्व-लोयम्मि**-सर्व लोक में **णिवसंति**-निवास करते हैं।

सव्व-थावरो दुविहो, णियमेणं सुहुम-थूल-भेयादो।
वणप्फदि-काइगो अवि, साहारण-पत्तेयाणं च।।26।।

अन्वयार्थ-सुहुम-थूल-भेयादो-सूक्ष्म व स्थूल के भेद से **सव्व-थावरो**-सभी स्थावर **णियमेणं**-नियम से **दुविहो**-दो प्रकार के होते हैं **साहारण-पत्तेयाणं च**-साधारण और प्रत्येक के भेद से **वणप्फदि-काइगो**-वनस्पति कायिक **अवि**-भी (दो प्रकार के होते हैं)।

पुण साहारण-दुविहो, तह णिच्च-इदर-णिगोद-भेयादो।
सपदिट्ठिदापदिट्ठिद-भेयादु पत्तेयो दुविहो।।27।।

अन्वयार्थ-णिच्च-इदर-णिगोद-भेयादो-नित्य निगोद व इतर निगोद के भेद से **साहारणो**-साधारण जीव **पुण**-पुनः **दुविहो**-दो प्रकार के होते हैं। **सपदिट्ठिदापदिट्ठिद-भेयादु तह**-सप्रतिष्ठित तथा अप्रतिष्ठित के भेद से **पत्तेयो**-प्रत्येक जीव **दुविहो**-दो प्रकार के होते हैं।

साधारण जीव

साहारणा हु जीवा, एग-देहस्स सामी अणंता य।
आहारमाणपाणं, गहंति जम्मंति मरंति ते।।28।।

अन्वयार्थ-जहाँ **एग-देहस्स**-एक देह के **अणंता**-अनंत **सामी**-स्वामी होते हैं (वे) **हु**-निश्चय से **साहारणा**-साधारण **जीवा**-जीव कहलाते हैं **ते**-वे सभी (एक साथ) **आहारं**-आहार **आणपाणं**-श्वासोच्छ्वास **गहंति**-ग्रहण करते हैं **जम्मंति**-जन्मते हैं **य**-और **मरंति**-मरते हैं।

नित्य निगोदिया

जे अणादिकालादो, णिवसेज्जा खलु णिगोद-भूमीए।
भाव-कलंक-सपउरा, जाणह णिच्च-णिगोदिया ते।।29।।

अन्वयार्थ-जे-जो जीव **अणादिकालादो**-अनादिकाल से **णिगोद-भूमीए**-निगोद भूमि में **णिवसेज्जा**-निवास कर रहे हैं **भाव-**

कलंक-सपउरा-प्रचुर कलंकित भावों से युक्त हैं **ते**-उन्हें **खलु**-निश्चय **णिच्च-णिगोदिया**-नित्य निगोदिया **जाणह**-जानों।

इतर निगोदिया

मुंचिय णिगोदवासं, जम्मंति णिगोदे जे जीवा पुण।
इदरा णिगोदिया ते, एरिसो जिणागमे भणिदो।।30।।

अन्वयार्थ-जे-जो **जीवा**-जीव **णिगोदवासं**-निगोद वास **मुंचिय**-त्यागकर **पुण**-पुनः **णिगोदे**-निगोद में **जम्मंति**-जन्म लेते हैं **ते**-वे **इदरा**-इतर **णिगोदिया**-निगोदिया कहलाते हैं **एरिसो**-ऐसा **जिणागमे**-जिनागम में **भणिदो**-कहा गया है।

इदि पढमाहियारो

अह विदिय-उवजोगाहियारो

द्वितीयाधिकार मंगलाचरण

जेण संभव-जिणेणं, णासिदा भव-कारण-अट्ठ-कम्मा।
होदुं सयं सिवं हं, तं णमंसामि तिजोगेहिं।।31।।

अन्वयार्थ-जेण-जिन **संभव-जिणेणं**-श्री संभवनाथ जिनेन्द्र के द्वारा **भव-कारण-अट्ठ-कम्मा**-संसार के कारण आठ कर्म **णासिदा**-नष्ट किए गए **हं**-मैं **सयं**-स्वयं **सिवं**-शिव **होदुं**-होने के लिए **तं**-उन्हें **तिजोगेहिं**-तीनों योगों से **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

णमिय जिणाहिणंदणं, सगवराणंद-णिगरणं णियमेण।
सव्व-हिदाय वक्खामि, उवजोगाहियारं कमेण।।32।।

अन्वयार्थ-णियमेण-नियम से **सगवराणंद-णिगरणं**-स्व-पर आनंद के कारण **जिणाहिणंदणं**-श्री अभिनंदन जिन को **णमिय**-नमस्कार करके (मैं) **सव्व-हिदाय**-सबके हित के लिए **कमेण**-क्रम से **उवजोगाहियारं**-उपयोगाधिकार को **वक्खामि**-कहता हूँ।

आत्म वैभव भेद

तिविहो हु अप्प-विहवो, पोग्गलियो मीसो चेयण-सुद्धो।
उहय-जुदो संसारी, तिदिय-जुदो सिद्ध-णिक्कम्मो।।33।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **अप्प-विहवो**-आत्मा का वैभव **तिविहो**-तीन प्रकार का है **पोग्गलियो**-पौद्गलिक **मीसो**-मिश्र **चेयण-सुद्धो**-शुद्ध चेतन रूप। **संसारी**-संसारी जीव **उहय-जुदो**-उभय वैभव से युक्त तथा **सिद्ध-णिक्कम्मो**-निष्कर्म सिद्ध **तिदिय-जुदो**-तृतीय वैभव से युक्त हैं।

पौद्गलिक वैभव

धण-धण्णावाणय-गिह-आदी बहुविहो पोग्गलिय-विहवो।
वाहण-भोयण-भोगोवभोग-जोग्ग-सामग्गिआणि।।34।।

अन्वयार्थ-पोग्गलिय-विहवो-पौद्गलिक वैभव **बहुविहो**-बहुत प्रकार का है **धण-धण्णावाणय-गिह-आदी**-धन, धान्य, दुकान, गृह आदि **वाहण-भोयण-भोगोवभोग-जोग्ग-सामग्गिआणि**-वाहन, भोजन और भोगोपभोग के योग्य सामग्री।

पोग्गलिय-अजीवो सो, ण होज्ज सहावो कया वि जीवस्स।
उवयारेण अप्पस्स, जह भायणं जल-घिदादीण।।35।।

अन्वयार्थ-पोग्गलियो-पौद्गलिक वैभव **अजीवो**-अजीव है **सो**-वह **कया वि**-कभी भी **जीवस्स**-जीव का **सहावो**-स्वभाव **ण**-नहीं **होज्ज**-हो सकता (फिर भी वह) **उवयारेण**-उपचार से **अप्पस्स**-आत्मा का (पौद्गलिक वैभव कहा जाता है) **जह**-जैसे **जल-घिदादीण**-जल, घृत आदि का **भायणं**-बर्तन।

भाव पुण्य-पाप हेतु

जीवस्स उहय-भावा, सुहासुहा हेदू पुण्ण-पावाण।
कत्तू ताणं जीवो, भोत्तू अवि होदि णियमेणं।।36।।

अन्वयार्थ-जीवस्स-जीव के **सुहासुहा**-शुभ व अशुभ **उहय-भावा**-दोनों भाव **पुण्ण-पावाण**-पुण्य व पाप के **हेदू**-हेतु होते हैं। **णियमेणं**-नियम से **ताणं**-उनका **कत्तू**-कर्त्ता **जीवो**-जीव **होदि**-होता है (और) **भोत्तू**-भोक्ता **अवि**-भी (जीव ही होता है)

मिश्रवैभव

अप्प-सुहासुह-भावा, होज्ज मीस-विहवो सया जीवस्स।
सो विहवो णो सुद्धो, सुद्ध-विहवो इदरो तत्तो।।37।।

अन्वयार्थ-अप्प-सुहासुह-भावा-आत्मा का शुभ-अशुभ भाव **सया**-सदा **जीवस्स**-जीव का **मीस-विहवो**-मिश्र वैभव **होज्ज**-होता है

(किन्तु) **सो**-वह (आत्मा का) **सुद्धो**-शुद्ध **विहवो**-वैभव **णो**-नहीं होता **सुद्ध-विहवो**-शुद्ध वैभव (तो) **तत्तो**-उससे **इदरो**-इतर है।

आत्मभाव भेद

चदुविहो अप्प-भावो, सुहासुहा सुद्धो परमसुद्धो य।
सिद्धाण परम-सुद्धो, इदर-भावा संसारीणं।।38।।

अन्वयार्थ-अप्प-भावो-आत्म भाव **चदुविहो**-चार प्रकार का है **सुहासुहा**-शुभ-अशुभ **सुद्धो**-शुद्ध **य**-और **परमसुद्धो**-परम शुद्ध। **सिद्धाण**-सिद्धों के **परम-सुद्धो**-परम शुद्ध व **संसारीणं**-संसारियों के **इदर-भावा**-इतर भाव होते हैं।

शुभाशुभाशुद्ध भाव

सुहासुहा परिणामा, संसारस्स कारणं सया होज्ज।
णियमेण सुद्ध-भावो, सासय-सुह-सिद्ध-पद-हेदू।।39।।

अन्वयार्थ-(आत्मा के) **सुहासुहा**-शुभ व अशुभ **परिणामा**-परिणाम **सया**-सदा **संसारस्स**-संसार के **कारणं**-कारण **होज्ज**-होते हैं (आत्मा का) **सुद्ध-भावो**-शुद्ध भाव **णियमेण**-नियम से **सासय-सुह-सिद्ध-पद-हेदू**-शाश्वत शुभ सिद्ध पद का हेतु है।

तीन योग

उवजोगो खलु तिविहो, सुहासुहा सुद्धो य मुणेदव्वो।
सुहासुहा पणभवस्स, सुद्धुवजोगो मोक्ख-हेदू।।40।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **उवजोगो**-उपयोग **तिविहो**-तीन प्रकार का **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए **सुहासुहा**-शुभ, अशुभ **य**-और **सुद्धो**-शुद्ध। **सुहासुहा**-शुभ व अशुभ उपयोग **पणभवस्स**-पंच संसार का व **सुद्धुवजोगो**-शुद्धोपयोग **मोक्ख-हेदू**-मोक्ष का हेतु है।

गुणस्थान में अशुभ भाव

णियमेण असुह-भावो, हेदू पणविह-संसार-भमणस्स।
मिच्छत्ते सासादण-मिस्सेसुं वट्टदे असुहो।।41।।

अन्वयार्थ-असुह-भावो-अशुभ भाव **णियमेण**-नियम से **पणविह-संसार-भमणस्स**-पाँच प्रकार के संसार भ्रमण का **हेदू**-हेतु है **असुहो**-अशुभ भाव **मिच्छत्ते**-मिथ्यात्व **सासादण-मिस्सेसुं**-सासादन व मिश्र गुणस्थान में **वट्टदे**-वर्तन करता है।

उपयोग व भाव एकार्थवाची

उवजोगो खलु भावो, जम्हा उहयो हि एगट्ठो एत्थ।
उहयस्स फलं समं वि, सद्द-भेदो ण कदो तम्हा।।42।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **उवजोगो**-उपयोग ही **भावो**-भाव (कहा गया है) **जम्हा**-क्योंकि **एत्थ**-यहाँ **उहयो**-दोनों **हि**-ही **एगट्ठो**-एकार्थवाची हैं **उहयस्स**-दोनों का **फलं**-फल **वि**-भी **समं**-समान है **तम्हा**-इसीलिए (यहाँ) **सद्दभेदो**-शब्द भेद **ण**-नहीं **कदो**-किया।

अशुभ भाव फल

असुह-भावेण जीवो, लहदि णिरय-तिरिय-कुभोगभूमी य।
असुरादि-देवेसुं च, उप्पज्जदे घोर-दुक्खाणि।।43।।

अन्वयार्थ-जीवो-जीव **असुह-भावेण**-अशुभ भाव से **णिरय-तिरिय-कुभोगभूमी य**-नरक, तिर्यंच व कुभोग भूमि **लहदि**-प्राप्त करता है **असुरादि-देवेसुं**-असुर आदि कुदेवों में **उप्पज्जदे**-उत्पन्न होता है **च**-और **घोर-दुक्खाणि**-घोर दु:खों को (प्राप्त करता है)।

शुभोपयोग भेद व फल

सुह-उवजोगो दुविहो, सिव-हेदू परंपराइ पसत्थो।
अप्पसत्थो संसार-विहवं देदि भव-वङ्गो वि।।44।।

अन्वयार्थ-सुह-उवजोगो-शुभ उपयोग **दुविहो**-दो प्रकार का है **पसत्थो**-प्रशस्त व **अप्पसत्थो**-अप्रशस्त। प्रशस्त शुभोपयोग **परंपराइ**-परंपरा से **सिव-हेदू**-मोक्ष का हेतु है (व) अप्रशस्त शुभोपयोग **भव-वड्ढगो**-भव वर्द्धक है (व) **संसार-विहवं**-संसार के वैभव को **वि**-भी **देदि**-देता है।

शुभोपयोग कहाँ ?

विज्जदे सुहुवजोगो, अविरद-देसविरद-पमत्तेसुं च।
अप्पसत्थ-सणिदाणो, पूरगो तहा भव-कंखाण।।45।।

अन्वयार्थ-सुहुवजोगो-शुभ उपयोग **अविरद-देसविरद-पमत्तेसुं च**-अविरत सम्यग्दृष्टि, देशविरत व प्रमत्त गुणस्थान में **विज्जदे**-विद्यमान रहता है **अप्पसत्थो**-अप्रशस्त **सणिदाणो**-निदान सहित **तहा**-तथा **भव-कंखाण**-संसार की आकांक्षाओं का **पूरगो**-पूरक है।

णिदाण-रहिद-भव-कंख-हीण-सद्दिट्ठीइ होज्ज पसत्थो।
णियमेण मोक्ख-हेदू, भवण्णवं तरदि सो जीवो।।46।।

अन्वयार्थ-पसत्थो-प्रशस्त शुभोपयोग **णिदाण-रहिद-भव-कंख-हीण-सद्दिट्ठीइ**-निदान रहित और भवाकांक्षा से हीन सम्यग्दृष्टि के **होज्ज**-होता है (वह) **णियमेण**-नियम से **मोक्ख-हेदू**-मोक्ष का हेतु होता है **सो**-वह (सम्यग्दृष्टि) **जीवो**-जीव **भवण्णवं**-संसार सागर को **तरदि**-पार करता है।

शुद्धोपयोग कहाँ

सुद्धो अपमत्तादो, वट्टदे हु खीण-मोह-पेरंतं।
खवगस्स केवलि-दसा-हेदू उवसामग-सग्गस्स।।47।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **सुद्धो**-शुद्धोपयोग **अपमत्तादो**-अप्रमत

गुणस्थान से **खीण-मोह-पेरंतं**-क्षीण मोह पर्यंत **वट्टदे**-वर्तन करता है **उवसामगस्स**-उपशामक का (शुद्धोपयोग) **सग्गस्स**-स्वर्ग का व **खवगस्स**-क्षपक का (शुद्धोपयोग) **केवलि-दसा-हेदू**-केवली दशा का हेतु है।

शुद्धोपयोग फल

सजोगजोग-ठाणेसु, सुद्धुवजोगस्स फलं हि जाणेह।
सजोगजोग-केवली, होंति सुहासुह-सुद्ध-रहिदा।।48।।

अन्वयार्थ-सजोगजोग-ठाणेसु-सयोग केवली व अयोग केवली गुणस्थानों में **सुद्धुवजोगस्स**-शुद्धोपयोग का **फलं**-फल **हि**-ही **जाणेह**-जानो **सजोग-अजोग-केवली**-सयोग तथा अयोग केवली **सुहासुह-सुद्ध**-रहिदा-शुभ, अशुभ व शुद्ध उपयोग से रहित **होंति**-होते हैं।

उपयोग भेद

जीवस्स सल्लक्खणं, उवजोगो दुविहो भणिदो सत्थे।
दंसण-णाणुवजोगा, होज्ज खलु पत्तेय-जीवस्स।।49।।

अन्वयार्थ-सत्थे-शास्त्र में **जीवस्स**-जीव का **सल्लक्खणं**-सत् लक्षण **उवजोगो**-उपयोग **दुविहो**-दो प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **दंसण-णाणुवजोगा**-दर्शनोपयोग व ज्ञानोपयोग **खलु**-निश्चय से **पत्तेय-जीवस्स**-प्रत्येक जीव के **होज्ज**-होते हैं।

दंसणणाणुवजोगा, कमेण चदुहो अट्ठविहो होज्जा।
छउमत्थाण कमेणं, णियमेण केवलीण जुगवं।।50।।

अन्वयार्थ-दंसणणाणुवजोगा-दर्शन उपयोग व ज्ञानोपयोग **कमेण** - क्रम से **चदुहो**-चार प्रकार व **अट्ठविहो**-आठ प्रकार का **होज्जा**-

होता है (दोनों उपयोग) **णियमेण**-नियम से **छउमत्थाण**-छद्मस्थ के **कमेणं**-क्रम से (व) **केवलीण**-केवलियों के **जुगवं**-युगपत् होते हैं।

उपयोग का सद्भाव

एग-जीवस्स णिच्चं, बे-उवजोगादो होज्ज सत्तादु।
भासिदो जिणसासणे, उवजोगो जीव-लक्खणं हु।।51।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **जीव-लक्खणं**-जीव का लक्षण **उवजोगो**-उपयोग है **एग-जीवस्स**-एक जीव के **णिच्चं**-नित्य **बे-उवजोगादो**-दो उपयोग से **सत्तादु**-सात उपयोग तक **होज्ज**-हो सकते हैं ऐसा **जिणसासणे**-जिनशासन में **भासिदो**-कहा गया है।

इदि विदियाहियारो

अह तिदिय-गुणट्ठाणाहियारो

तृतीयाधिकार मंगलाचरण

देदि सया जो सुमदिं, अप्पहिद-हेदू सव्व-जीवाणं।
सुमदिणाह-देवं तं, विणासाय कुमदीए थुणमि।।52।।

अन्वयार्थ-जो-सो **सया**-सदा **सुमदिं**-सुमति **देदि**-देते हैं **सव्व-जीवाणं**-सभी जीवों के लिए **अप्पहिद-हेदू**-आत्म हित के हेतु हैं **कुमदीए**-कुमति के **विणासाय**-विनाश के लिए **तं**-उन **सुमदिणाह-देवं**-श्री सुमतिनाथ देव की **थुणमि**-स्तुति करता हूँ।

पोम्मव्व जस्स वण्णो, मुत्तित्थि-भत्तू जो सिरि-बीयं च।
वंदिय पोम्मजिणं तं, गुणट्ठाणाहियारं दिसमि।।53।।

अन्वयार्थ-जस्स-जिसका **वण्णो**-वर्ण **पोम्मव्व**-पद्म के समान है **जो**-जो **सिरि-बीयं**-श्री बीज **च**-और **मुत्तित्थि-भत्तू**-मुक्ति रूपी स्त्री के भर्त्ता हैं **तं**-उन **पोम्मजिणं**-श्री पद्मप्रभ जिन की **वंदिय**-वंदना करके **गुणट्ठाणाहियारं**-गुणस्थानाधिकार को **दिसमि**-कहता हूँ।

गुणस्थान निष्पत्ति

जीवस्स परिणामेहि, होज्ज गुणट्ठाणं चउदसविहं च।
भावा भव-सिव-हेदू, वड्ढंति भावेहि कमसो हि।।54।।

अन्वयार्थ-गुणट्ठाणं-गुणस्थान **चउदसविहं**-चौदह प्रकार के होते हैं (गुणस्थान) **जीवस्स**-जीव के **परिणामेहि**-परिणामों के द्वारा **हि**-ही बनते हैं वे **कमसो**-क्रमशः **भावेहि**-भावों से **वड्ढंति**-वृद्धि को प्राप्त होते हैं (और) **भावा**-भाव ही **भव-सिव-हेदू च**-संसार व मोक्ष के कारण होते हैं।

उदयुवसम-खया तहा, परिणामा दंसण-चरिय-मोहस्स।
खओवसमिया भावा, गुणट्ठाण-कारणं जाणह।।55।।

अन्वयार्थ-दंसण-चरिय-मोहस्स-दर्शन व चारित्र मोहनीय का **उदयुवसम-खया**-उदय, उपशम, क्षय **परिणामा**-परिणाम **तहा**-तथा **खओवसमिया**-क्षायोपशमिक **भावा**-भाव **गुणट्ठाण-कारणं**-गुणस्थान (की निष्पत्ति) का कारण **जाणह**-जानो।

दर्शन व चारित्र मोहनीय अपेक्षा गुणस्थान

पडुच्च दंसणमोहं, होज्ज पढमादो तुरिय-ठाणंतं।
ठाणाणि चरिय-मोहं, पणमादो खीणमोहंतं।।56।।

अन्वयार्थ-पढमादो-प्रथम गुणस्थान से **तुरिय-ठाणंतं**-चतुर्थ गुणस्थान तक **ठाणाणि**-सभी गुणस्थान **दंसणमोहं**-दर्शनमोह की **पडुच्च**-अपेक्षा करके **होज्ज**-होते हैं (तथा) **पणमादो**-पंचम से **खीणमोहंतं**-क्षीण मोह गुणस्थान तक (सभी गुणस्थान) **चरिय-मोहं**-चारित्र मोहनीय की अपेक्षा करके होते हैं।

योग से गुणस्थान

होज्ज जोगेण मेत्तं, सजोगाजोग-केवलि-ठाणाइं।
जोग-सहिदो सजोगी, जोग-हीणो अजोगी जाण।।57।।

अन्वयार्थ-मेत्तं-मात्र **जोगेण**-योग से **सजोग-अजोग-केवलि-ठाणाइं**-सयोग व अयोग केवली गुणस्थान **होज्ज**-होते हैं **सजोगी**-सयोग केवली गुणस्थान **जोग-सहिदो**-योग से सहित व **अजोगी**-अयोग केवली गुणस्थान **जोग-हीणो**-योग से विहीन **जाण**-जानो।

गुणस्थान नाम

मिच्छत्तं सासणं च, मिस्सोअविरदं तह देसविरदं।
पमत्तापमत्तविरद-अपुव्वकरणाणिविट्टी खलु।।58।।

सुहुम-संपरायं तह, उवसंत-खीणा सजोगाजोगी।
चोद्दसं गुणट्ठाणं, भणिदं जिणसमयम्मि जिणेहि।।59।।

अन्वयार्थ-**मिच्छत्तं**-मिथ्यात्व **सासणं**-सासादन **मिस्सो**-मिश्र-(सम्यक्मिथ्यात्व) **अविरदं**-अविरत सम्यग्दृष्टि **देसविरदं**-देश विरत **पमत्तापमत्त-विरदं**-प्रमत्त विरत, अप्रमत्त विरत **अपुव्वकरणाणि-विट्टी च**-अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण **सुहुम-संपरायं**-सूक्ष्म सांपराय **उवसंत-खीणा तह**-उपशांत मोह तथा क्षीण मोह **सजोगाजोगी तह**-सयोग केवली तथा अयोग केवली **खलु**-निश्चय से (ये) **चोद्दसं**-चौदह **गुणट्ठाणं**-गुणस्थान **जिणसमयम्मि**-जिन समय में **जिणेहि**-जिनेन्द्र के द्वारा **भणिदं**-कहे गए हैं।

मिथ्यात्व गुणस्थान

मिच्छोदयेण जीवो, जो कुदेव-धम्मं कुगुरु-सत्थं च।
सद्दहदे सो हिंडदि, चिरं भवम्मि मिच्छाइट्ठी।।60।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **जीवो**-जीव **मिच्छोदयेण**-मिथ्यात्व के उदय से **कुदेव-धम्मं**-कुदेव, कुधर्म **कुगुरु-सत्थं च**-कुगुरु और कुशास्त्र पर **सद्दहदे**-श्रद्धान करता है **सो**-वह **मिच्छाइट्ठी**-मिथ्यादृष्टि जीव **चिरं**-चिरकाल तक **भवम्मि**-संसार में **हिंडदि**-परिभ्रमण करता है।

देहप्पं मणदेगो, अप्परूविव सद्दहदि परदव्वं।
जीवादि-तच्चाणि णो, जिणधम्मादु बहिरो मिच्छो।।61।।

अन्वयार्थ-जो **देहप्पं**-देह व आत्मा को **एगो**-एक **मणदे**-मानता है **अप्परूव-इव**-आत्म रूप के समान **परदव्वं**-पर द्रव्य पर **सद्दहदि**-श्रद्धान करता है **जीवादि-तच्चाणि**-जीवादि तत्त्व पर **णो**-श्रद्धान नहीं करता (वह) **मिच्छो**-मिथ्यादृष्टि जीव **जिणधम्मादु**-जिनधर्म से **बहिरो**-बाह्य है।

सासादन गुणस्थान

पइडि-एगुदयेण अवि, सासणणंताणुबंधि-कसायस्स।
उक्कुसेणं छावली, पडणे सम्मत्त-सेलादो।।62।।

अन्वयार्थ-सम्मत्त-सेलादो-सम्यक्त्व के शैल से **पडणे**-गिरने पर **अणंताणुबंधि-कसायस्स**-अनंतानुबंधी कषाय के **पइडि-एगुदयेण**-एक प्रकृति के उदय से **अवि**-भी **सासणं**-सासादन गुणस्थान (होता है जो) **उक्कुसेणं**-उत्कृष्ट से **छावली**-छः आवली समय का है।

सम्मत्त-पव्वयादो, पडणे समभिमुहो मिच्छभूमीइ।
सम्मत्त-विराहगो हु, सासादण-सद्दिट्ठी जाण।।63।।

अन्वयार्थ-सम्मत्त-पव्वयादो-सम्यक्त्व रूपी पर्वत से **पडणे**-गिरने पर **मिच्छभूमीइ**-मिथ्यात्व रूपी भूमि के **समभिमुहो**-सन्मुख (वह) **सम्मत्त-विराहगो**-सम्यक्त्व का विराधक **हु**-निश्चय से **सासादण-सद्दिट्ठी**-सासादन सम्यग्दृष्टि **जाण**-जानो।

मिश्र गुणस्थान

मिस्स-पइडि-उदयेणं, जत्तंतरसव्वघादिकज्जेणं।
सम्म-मिच्छ-परिणामो, होदि अंब-मिट्ठिव मिस्सो हु।।64।।

अन्वयार्थ-जत्तंतरसव्वघादिकज्जेणं-जात्यंतर सर्वघाति के कार्यरूप **मिस्स-पइडि-उदयेणं**-मिश्र प्रकृति के उदय से **अंब-मिट्ठिव**-अम्ल-मिष्ट के समान **सम्म-मिच्छ-परिणामो**-सम्यक्-मिथ्यात्व रूप मिश्र परिणाम **होदि**-होते हैं वह **हु**-निश्चय से **मिस्सो**-मिश्र गुणस्थान होता है।

मुहुत्त-कालस्स जम्म-मरण-हीणाहारगाण सण्णीण।
जागरिआवत्थाए, चदु-गदि-जीवाणं तिदियं च।।65।।

अन्वयार्थ-तिदियं-यह तृतीय गुणस्थान **मुहुत्त-कालस्स**-मात्र मुहूर्त्त काल के लिए **जम्म-मरण-हीणाहारगाण**-जन्म-मरण से हीन, आहारक **सण्णीण**-संज्ञी **च**-और **जागरिआवत्थाए**-जागृत अवस्था में **चदु-गदि-जीवाणं**-चारों गति के जीवों के जानना चाहिए।

उपशम सम्यक्त्व

दंसण-मोहस्सेग-ति-पइडीइ वा अणंताणुबंधिस्स।
उवसमेणं हु उवसम-सम्मत्तं होदि मुहुत्तस्स।।66।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **दंसण-मोहस्स**-दर्शन मोहनीय की **एग-ति-पइडीइ वा**-एक या तीन प्रकृतियों तथा **अणंताणुबंधिस्स**-अनंतानुबंधी कषाय के **उवसमेणं**-उपशम से **मुहुत्तस्स**-मुहूर्त्त काल के लिए **उवसम-सम्मत्तं**-उपशम सम्यक्त्व **होदि**-होता है।

क्षायोपशमिक व क्षायिक सम्यक्त्व

सम्मत्तस्सुदयादो, सव्वघादि-उदयाभावि-खयादो।
सिं सदवत्थुवसमादु, छावट्ठि-सागरुक्कुसेणं।।67।।

होज्ज खओवसमियं हु, खयादो खयियं सत्त-पयडीणं।
केवलि-दुग-पदमूले, वज्जरिसहणाराय-जुदस्स।।68।।

णरस्स कम्मभूमीइ, णिट्ठावणा होज्ज चदु-गदीसुं च।
खयियो लहदे मोक्खं, तब्भव-तिदिय-चदुत्थ-भवादु।।69।।

अन्वयार्थ-सम्मत्तस्स-सम्यक्त्व के **उदयादो**-उदय से **सव्वघादि-उदयाभावि-खयादो**-सर्वघाती स्पर्द्धकों के उदयाभावी क्षय से **सिं**-उन्हीं के **सदवत्थुवसमादु**-सदवस्था रूप उपशम से **हु**-निश्चय से **खओवसमियं**-क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन **होज्ज**-होता है (यह) **छावट्ठि-सागरुक्कुसेणं**-उत्कृष्ट से 66 सागर वाला होता है। **सत्त-पयडीणं**-सात प्रकृतियों के **खयादो**-क्षय से **खयियं**-क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है (वह) **कम्मभूमीइ**-कर्मभूमी के **वज्जरिसहणाराय-जुदस्स**-वज्रवृषभनाराच संहनन से युक्त **णरस्स**-मनुष्य के **केवलि-दुग-पद-मूले**-केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में होता है **च**-और **णिट्ठावणा**-निष्ठापना **चदुगदीसुं**-चारों गतियों में

होज्ज-हो सकती है। **खयियो**-क्षायिक सम्यग्दृष्टि **तब्भव-तिदिय-चदुत्थ-भवादु**-उस भव, तृतीय भव वा चतुर्थ भव से **मोक्खं**-मोक्ष **लहदे**-प्राप्त करता है।

चतुर्थ गुणस्थानवर्ती शिवमार्गी नहीं

अविरद-सद्दिट्ठीणं, अप्पच्चक्खाण-कसायुदयादो।
तम्हा णहि सिव-मग्गी, जम्हा किंचिवि ण होदि वदं।।70।।

अन्वयार्थ-अप्पच्चक्खाण-कसायुदयादो-अप्रत्याख्यान कषाय के उदय से **अविरद-सद्दिट्ठीणं**-अविरत सम्यग्दृष्टियों के **जम्हा**-क्योंकि **किंचिवि**-किंचित् भी **वदं**-व्रत **ण**-नहीं **होदि**-होता **तम्हा**-इसीलिए वे **सिव-मग्गी**-शिवमार्गी **णहि**-नहीं हैं।

एकदेश मोक्षमार्गी

णर-तिरिया देसवदी, होज्ज अप्पच्चक्खाणाणुदयादु।
णादव्वा तम्हा ते, एगदेस-मोक्खमग्गी खलु।।71।।

अन्वयार्थ-अप्पच्चक्खाणाणुदयादु-अप्रत्याख्यान कषाय के अनुदय से **णर-तिरिया**-नर-तिर्यंच **देसवदी**-देशव्रती **होज्ज**-होते हैं **तम्हा**-इसीलिए **ते**-उन्हें **खलु**-निश्चय से **एगदेस-मोक्खमग्गी**-एकदेश मोक्षमार्गी **णादव्वा**-जानना चाहिए।

देशविरत गुणस्थान

पच्चक्खाणुदयादो, सयल-संजमो ण होदि जीवाणं।
देसवदी ते लहंति, सग्गाइ-सुगदिं पुण मोक्खं।।72।।

अन्वयार्थ-पच्चक्खाणुदयादो-प्रत्याख्यान कषाय के उदय से **जीवाणं**-जीवों के **सयल-संजमो**-सकल संयम **ण**-नहीं **होदि**-होता। (देश व्रत धारण करने वाले) **ते**-वे **देसवदी**-देशव्रती **सग्गाइ-सुगदिं**-स्वर्गादि सुगति **पुण**-पुनः **मोक्खं**-मोक्ष **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

प्रमत्तविरत

पच्चक्खाण-विहीणे, संजलण-णोकसायाणुदयादो।
उप्पण्ण-संजम-सहिद-पमादो अवि पमत्त-विरदो।।73।।

अन्वयार्थ-पच्चक्खाण-विहीणे-प्रत्याख्यान से विहीन होने पर **संजलण-णोकसायाण**-संज्वलन व नोकषाय के **उदयादो**-उदय से **उप्पण्ण-संजम-सहिद-पमादो-अवि**-उत्पन्न संयम के साथ प्रमाद भी होता है अत: वह **पमत्त-विरदो**-प्रमत्त विरत है।

पमत्त-ठाणवत्ती य, दंसण-णाण-चरिय-सह-णिग्गंथो।
ववहार-मोक्खमग्गी, णिच्छयेणं मोक्खाकंखी।।74।।

अन्वयार्थ-पमत्त-ठाणवत्ती-प्रमत्त गुणस्थानवर्त्ती **दंसण-णाण-चरिय-सह-णिग्गंथो**-दर्शन, ज्ञान और चारित्र से सहित निर्ग्रंथ **णिच्छयेणं**-निश्चय से **मोक्खाकंखी**-मोक्षाकांक्षी **य**-और **ववहार-मोक्खमग्गी**-व्यवहार मोक्षमार्गी हैं।

प्रमत्तभाव के कारण

विसय-कसायिंदिय-रदि-णिद्दाण हेदू होज्जणुच्छाहे।
धम्मम्मि परिणामे य, पमत्त-भावो हि णियमेणं।।75।।

अन्वयार्थ-विसय-कसायिंदिय-रदि-णिद्दाण हेदू य-विषय, कषाय, इंद्रिय, रति और निद्रा के कारण **धम्मम्मि**-धर्म में **अणुच्छाहे**-अनुत्साह के **परिणामे**-परिणाम होने पर **णियमेणं**-नियम से **पमत्त-भावो**-प्रमत्त भाव **हि**-ही **होज्ज**-होता है।

अप्रमत्त विरत

जदा तदा मंदुदयो, होदि संजलण-णोकसायाण खलु।
अपमत्त-गुणट्ठाणं, णिरदिसय-सादिसय-दुविहं च।।76।।

अन्वयार्थ-जदा-जब **संजलण-णोकसायाण**-संज्वलन, नोकषाय का **मंदुदयो**-मंद उदय **होदि**-होता है **तदा**-तब **खलु**-निश्चय से **अपमत्त-गुणट्ठाणं**-अप्रमत्त गुणस्थान होता है **च**-और **णिरदिसय-सादिसय-दुविहं**-यह निरतिशय व सातिशय दो प्रकार का है।

णिरदिसय-ठाणवत्ती, असंख-वारं फासदे पमत्तं।
सादिसय-ठाणवत्ती, खवगोवसामगा खलु होज्ज।।77।।

अन्वयार्थ-णिरदिसय-ठाणवत्ती-निरतिशय (सप्तम) गुणस्थानवर्ती **असंख-वारं**-असंख्यात बार **पमत्तं**-प्रमत्त गुणस्थान का **फासदे**-स्पर्श करते हैं **सादिसय-ठाणवत्ती**-सातिशय गुणस्थानवर्त्ती **खलु**-निश्चय से **खवगोवसामगा**-क्षपक व उपशामक **होज्ज**-होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थान

होंति अपुव्व-भावा हु, सया अपुव्वापुव्व-विसुद्धीए।
सु-सम-विसम-समयवत्ति-मुणिस्स संभवा भावा ते।।78।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **अपुव्व-भावा**-अपूर्व भाव **सया**-सदा **अपुव्वापुव्व-विसुद्धीए**-अपूर्व-अपूर्व विशुद्धि के लिए **होंति**-होते हैं **ते**-वे **भावा**-परिणाम **सु-सम-विसम-समयवत्ति-मुणिस्स**-सु सम समयवर्ती व विषम समयवर्ती मुनि के **संभवा**-संभव हैं।

भिण्ण-समयवत्तीणं, णाणाविहा खलु होंति परिणामा।
एग-समयवत्तीणं, सद्दस-विसद्दस-परिणामा।।79।।

अन्वयार्थ-अपूर्वकरण गुणस्थान में **भिण्ण-समयवत्तीणं**-भिन्न समयवर्तियों के **खलु**-निश्चय से **णाणाविहा**-नाना प्रकार के **परिणामा**-परिणाम **होंति**-होते हैं तथा **एग-समयवत्तीणं**-एक समयवर्तियों के **सद्दस-विसद्दस-परिणामा**-परिणाम सदृश वा विसदृश भी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

एग-समयवत्ती खलु, जह संठाणादीहि णियट्टंते।
तह परिणामेहिं ते, णो णियट्टंते अणिविट्टी।।80।।

सद्दस-परिणामा सय, होंति एग-समयवत्ति-जोगीणं।
भिण्ण-समयवत्तीणं, णियमेणं भिण्ण-परिणामा।।81।।

अन्वयार्थ-एग-समयवत्ती-एक समयवर्त्ती जीव **जह**-जिस प्रकार **संठाणादीहि**-संस्थान आदि की अपेक्षा **णियट्टंते**-निवृत्ति (भेद) को प्राप्त होते हैं **तह**-उसी प्रकार **ते**-वे जीव **परिणामेहिं**-परिणामों की अपेक्षा **णो णियट्टंते**-निवृति (भेद) को प्राप्त नहीं होते (अतः) **खलु**-निश्चय से वह **अणिविट्टी**-अनिवृत्तिकरण गुणस्थान कहलाता है। इस गुणस्थान में **एग-समयवत्ति-जोगीणं**-एक समयवर्ती योगियों के **सय**-सदा **सद्दस-परिणामा**-सदृश परिणाम **होंति**-होते हैं व **भिण्ण-समयवत्तीणं**-भिन्न समयवर्तियों के **णियमेणं**-नियम से **भिण्ण-परिणामा**-भिन्न परिणाम होते हैं।

सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान

खयादु उवसमादु वा, णिच्चं संजलण-णोकसायाणं।
जिण्ण-पडस्स वण्णोव्व, मूल-वण्ण-विहीणं दहमं।।82।।

सत्तावीस-पयडीण, मोहणीयस्स उवसम-खयादु वा।
सुहुम-संपरायं खलु, विज्जमाणे सुहुम-लोहम्मि।।83।।

अन्वयार्थ-णिच्चं-नित्य **संजलण-णोकसायाणं**-संज्वलन नोकषाय के **खयादु**-क्षय **वा**-अथवा **उवसमादु**-उपशम से **जिण्ण-पडस्स**-जीर्ण वस्त्र के **वण्णोव्व**-वर्ण के समान **मूल-वण्ण-विहीणं**-मूल वर्ण से विहीन **दहमं**-दशम गुणस्थान कहा गया है। **मोहणीयस्स**-मोहनीय कर्म की **सत्तावीस-पयडीण**-सत्ताईस प्रकृतियों के **उवसम**-

खयादु वा-उपशम या क्षय से **सुहुम-लोहम्मि**-सूक्ष्म लोभ के **विज्जमाणे**-विद्यमान होने पर **खलु**-निश्चय से **सुहुम-संपरायं**-सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान होता है।

उपशांत मोह गुणस्थान

सुणिम्मलं होदि जहा, णीरं सया कदग-फल-संजुत्तं।
उवसंत-कसायो तह, मोहुवसमादो उवसंतो।।84।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **कदग-फल-संजुत्तं**-फिटकरी से संयुक्त **णीरं**-नीर **सया**-सदा **सुणिम्मलं**-सुनिर्मल **होदि**-होता है **तह**-उसी प्रकार **मोहुवसमादो**-मोह के उपशम से **उवसंत-कसायो**-कषाय उपशांत होती है वह **उवसंतो**-उपशांत मोह गुणस्थान कहलाता है।

क्षीणमोह गुणस्थान

णिस्सेस-मोह-णासे, होदि सुह-खीण-मोह-गुणट्ठाणं।
सुद्धुवजोग-संजुदो, तत्थ ठिद-णिग्गंथो णेयो।।85।।

अन्वयार्थ-णिस्सेस-मोह-णासे-नि:शेष मोहनीय कर्म का नाश होने पर **सुह-खीण-मोह-गुणट्ठाणं**-शुभ क्षीण मोह गुणस्थान **होदि**-होता है **सुद्धुवजोग-संजुदो**-शुद्धोपयोग से संयुक्त **तत्थ**-वहाँ **ठिद-णिग्गंथो**-स्थित निर्ग्रन्थ **णेयो**-जानने चाहिए।

संयोग केवली गुणस्थान

णाण-दंसणावरणंतराय-मोह-घादि-कम्म-विहीणो।
अणंत-चदुक्क-सहिदो, सजोग-केवली सया होदि।।86।।

अन्वयार्थ-सजोग-केवली-सयोग केवली **सया**-सदा **णाण-दंसणावरणंतराय-मोह-घादि-कम्म-विहीणो**-ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय व मोहनीय इन घातिया कर्मों से विहीन **अणंत-चदुक्क-सहिदो**-अनंत चतुष्टय से सहित **होदि**-होते हैं।

अयोग केवली गुणस्थान

चुलसीदि-लक्ख-उत्तर-गुणट्ठदस-सहस्स-सील-सहिदो य।
केवली जोग-हीणो , अजोग-केवली णादव्वो।।87।।

अन्वयार्थ-चुलसीदि-लक्ख-उत्तर-गुणट्ठदस-सहस्स-सील-सहिदो य-84 लाख उत्तर गुण व 18 हजार शील से सहित **जोग-हीणो**-योग से हीन **केवली**-केवली **अजोग-केवली**-अयोग केवली **णादव्वो**-जानने चाहिए।

सिद्ध

सव्व-जीव-संसारी, मिच्छत्तादो अजोग-पज्जंतं।
सव्व-कम्म-विहीणो हु, अमुत्तिगो सासयो सिद्धो।।88।।

अन्वयार्थ-मिच्छत्तादो-मिथ्यात्व से **अजोग-पज्जंतं**-अयोग केवली पर्यंत **सव्व-जीव-संसारी**-सभी जीव संसारी होते हैं **सव्व-कम्म-विहीणो**-सभी कर्मों से विहीन **अमुत्तिगो**-अमूर्त्तिक **सासयो**-शाश्वत **हु**-निश्चय से **सिद्धो**-सिद्ध हैं।

गुणट्ठाण-लक्खणं हु, भावं सरूवं तहा णादूणं।
सव्व-कम्मं खयिदूण, लहेज्जा अप्प-सुद्ध-भावं।।89।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **गुणट्ठाण-लक्खणं**-गुणस्थान के लक्षण **भावं**-भाव **तहा**-तथा **सरूवं**-स्वरूप को **णादूणं**-जानकर **सव्व-कम्मं खयिदूण**-सर्व कर्म क्षयकर **अप्प-सुद्ध-भावं**-आत्मा के शुद्ध भाव को **लहेज्जा**-प्राप्त करना चाहिए।

इदि तिदियाहियारो

अह चदुत्थ-णवपदत्थाहियारो

चतुर्थाधिकार मंगलाचरण

मणे सुपास-पहू मे, लीणं मम चित्तं तस्स चरणेसु।
होदु सया भत्तीए, पणमामि तं भव-णासेदुं।।90।।

अन्वयार्थ-मे-मेरे **मणे**-मन में **सया**-सदा **सुपास-पहू**-सुपार्श्व प्रभु **होदु**-होवें **मम**-मेरा **चित्तं**-चित्त **तस्स**-उनके **चरणेसु**-चरणों में **लीणं**-लीन हो। **भव-णासेदुं**-भव नाश के लिए (मैं) **तं**-उन्हें **भत्तीए**-भक्ति से **पणमामि**-नमस्कार करता हूँ।

जस्स पहा चंदोव्व हु, जिणवरेसु वि जो चंदप्पहं तं।
णमित्ता पडिवायामि, सया णवपदत्थाहियारं।।91।।

अन्वयार्थ-जस्स-जिसकी **पहा**-प्रभा **चंदोव्व**-चंद्र के समान है **जो**-जो **जिणवरेसु**-जिनवरों में **वि**-भी (चंद्र के समान हैं) **हु**-निश्चय से **तं**-उन **चंदप्पहं**-चंद्रप्रभ भगवान् को **णमित्ता**-नमस्कार कर **सया**-सदा **णवपदत्थाहियारं**-नव पदार्थाधिकार का **पडिवायामि**-प्रतिपादन करता हूँ।

मुक्त जीव

णाण-दंसण-संजुदो, णिक्कम्मामुत्तिगो सहावजुदो।
होज्ज सासयो मुत्तो, पुण्ण-सुद्ध-णिरंजण-सिद्धो।।92।।

अन्वयार्थ-पुण्ण-सुद्ध-णिरंजण-सिद्धो-पूर्ण शुद्ध, निरंजन, सिद्ध **णाण-दंसण-संजुदो**-ज्ञान-दर्शन से संयुक्त **णिक्कम्मामुत्तिगो**-निष्कर्म, अमूर्त्तिक **सहावजुदो**-स्वभाव युक्त **सासयो**-शाश्वत व **मुत्तो**-मुक्त **होज्ज**-होते हैं।

शुद्धाशुद्ध जीव स्वभाव

कत्तु-भोत्तू बंधगो, मुत्तिगो तहा जम्म-मरण-सहिदो।
उड्ढ-गमण-सहावी य, जीवो सुद्धो सुद्धणयेण।।93।।

अन्वयार्थ-(अशुद्ध जीव) **कत्तु-भोत्तू**-कर्ता-भोक्ता **बंधगो**-बंधक **मुत्तिगो**-मूर्त्तिक **जम्म-मरण-सहिदो**-जन्म-मरण से सहित है **तहा**-तथा **सुद्धणयेण**-शुद्ध नय से **जीवो**-जीव **सुद्धो**-शुद्ध **य**-और **उड्ढ-गमण-सहावी**-ऊर्ध्व गमन स्वभावी है।

अजीव द्रव्य

णेयं अजीव-दव्वं, चेयणा-लक्खण-वज्जिदं णिच्चं।
पोग्गल-धम्माधम्मा, खं कालो पणविहाजीवो।।94।।

अन्वयार्थ-**णिच्चं**-नित्य ही **चेयणा-लक्खण-वज्जिदं**-चेतना लक्षण से वर्जित **अजीव-दव्वं**-अजीव द्रव्य **णेयं**-जानना चाहिए **अजीवो**-अजीव **पणविहो**-पाँच प्रकार के हैं **पोग्गल-धम्माधम्मा**-पुद्गल, धर्म, अधर्म **खं**-आकाश व **कालो**-काल।

आस्रव

कम्मागमण-दारं हु, दुविहासवो दव्व-भाव-भेयादु।
जह णाणं तह रूवो, एरिसो गणहरेहि भणिदो।।95।।

अन्वयार्थ-**कम्मागमण-दारं**-कर्म के आगमन के द्वार को **आसवो**-आस्रव कहते है (वह) **दव्व-भाव-भेयादु**-द्रव्य और भाव के भेद से **दुविहो**-दो प्रकार का है **जह**-जैसा **णाणं**-नाम है **तह**-वैसा **रूवो**-स्वरूप है **एरिसो**-ऐसा **हु**-निश्चय से **गणहरेहि**-गणधरों के द्वारा **भणिदो**-कहा गया है।

आस्रव प्रत्यय

मिच्छत्ताविरदि-जोग-पमाद-कसायेहि दव्वासवो य।
भावो तस्स वि हेदू, णादव्वो भावासवो सो।।96।।

अन्वयार्थ-**मिच्छत्ताविरदि-जोग-पमाद-कसायेहि य**-मिथ्यात्व,

अविरति, योग, प्रमाद व कषाय के द्वारा **दव्वासवो**-द्रव्यास्रव **णादव्वो**-जानना चाहिए **भावो**-भाव **तस्स**-उसका **वि**-भी **हेदू**-हेतु है **सो**-वह **भावासवो**-भाव आस्रव जानना चाहिए।

जीवो बंधदि कम्मं, जावदु आसवदि तावदु णियमेण।
आसवस्स सब्भावे, कम्म-णिवत्ती संभवो णो।।97।।

अन्वयार्थ-जावदु-जब तक **जीवो**-जीव **कम्मं**-कर्म **बंधदि**-बांधता है **तावदु**-तब तक **णियमेण**-नियम से **आसवदि**-आस्रव होता है। **आसवस्स**-आस्रव के **सब्भावे**-सद्भाव में **कम्म-णिवत्ती**-कर्मों की निवृत्ति **संभवो**-संभव **णो**-नहीं है।

आस्रव बंध का हेतु

आसवम्मि णिस्सेसे, होदि मोक्खो हु अंतोमुहुत्तम्मि।
आसवो बंध-हेदू, आसव-विहीणो अजोगी य।।98।।

अन्वयार्थ-आसवो-आस्रव **बंध-हेदू**-बंध का हेतु है। **आसवम्मि**-आस्रव के **णिस्सेसे**-नि:शेष होने पर **अंतोमुहुत्तम्मि**-अंतर्मुहूर्त में **हु**-निश्चय से **मोक्खो**-मोक्ष **होदि**-होता है **य**-और **आसव-विहीणो**-आस्रव से विहीन **अजोगी**-अयोग केवली होते हैं।

शुभाशुभास्रव

तिव्व-कसायुदयादो, जो होदि खलु आसवो असुहो सो।
कसाय-मंदुदयादो, सुहासवो तह जिणुद्दिट्ठो।।99।।

अन्वयार्थ-तिव्व-कसायुदयादो-तीव्र कषाय के उदय से **जो**-जो **आसवो**-आस्रव **होदि**-होता है **सो**-वह **खलु**-निश्चय से **असुहो**-अशुभ होता है **तह**-तथा **कसाय-मंदुदयादो**-कषाय के मंद उदय से **सुहासवो**-शुभास्रव **जिणुद्दिट्ठो**-जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा गया है।

बंध तत्व

अप्प-पदेसेहिं सह, कम्मवग्गणण्णोण्णं णिबंधंति।
णीर-खीरं व होज्जा, एगमेगो बंधो णिच्चं।।100।।

अन्वयार्थ-अप्प-पदेसेहिं सह-आत्म प्रदेशों के साथ **कम्मवग्गणा**-कर्म वर्गणा **अण्णोण्णं**-परस्पर में **णिबंधंति**-बंधती हैं **णिच्चं**-नित्य ही **बंधो**-बंध **णीर-खीरं व**-नीर-क्षीर के समान **एगमेगो**-एकमेक **होज्जा**-होता है।

चतुर्विध बंध

पयडिट्ठिदि-अणुभागप्पदेस-भेदादु चदुविहो बंधो।
दव्व-भाव-भेयादो, बेविहो अवि मुणेदव्वो य।।101।।

अन्वयार्थ-पयडिट्ठिदि-अणुभागप्पदेस-भेदादु-प्रकृति, स्थिति अनुभाग व प्रदेश के भेद से **बंधो**-बंध **चदुविहो**-चार प्रकार का **मुणेदव्वो**-जानना चाहिए **य**-और **दव्व-भाव-भेयादो**-द्रव्य व भाव के भेद से **बेविहो**-दो प्रकार का **अवि**-भी (जानना चाहिए)।

बंध से भ्रमण

रायद्दोस-अण्णाण-मोहेहिं होदि बंधो णियमेण।
तेहिं भमेदि जीवो, भवम्मि य अणंतकालंतं।।102।।

अन्वयार्थ-रायद्दोस-अण्णाण-मोहेहिं-राग, द्वेष, अज्ञान व मोह से **णियमेण**-नियम से **बंधो**-बंध **होदि**-होता है **य**-और **तेहिं**-उनके द्वारा **जीवो**-जीव **अणंतकालंतं**-अनंत काल तक **भवम्मि**-संसार में **भमेदि**-भ्रमण करता है।

पाप व पुण्य

पुण्ण-पाव-भेयादो, बंधो दुविहो वि होदि णियमेणं।
जीवो सुहेण पुण्णं, बंधदि पावं असुहेणं च।।103।।

अन्वयार्थ-पुण्ण-पाव-भेयादो-पुण्य और पाप के भेद से **बंधो**-बंध **णियमेणं**-नियम से **दुविहो**-दो प्रकार का **वि**-भी **होदि**-होता है **जीवो**-जीव **सुहेण**-शुभ (क्रिया-भावादि) के द्वारा **पुण्णं**-पुण्य **च**-और **असुहेणं**-अशुभ के द्वारा **पावं**-पाप का **बंधदि**-बंध करता है।

योग व कषाय से बंध

होदि कसाय-भावेहि, बहुघादगो ठिदि-अणुभाग-बंधो।
पयडी पदेस-बंधो, तहा जोगेहिं जीवाणं।।104।।

अन्वयार्थ-जीवाणं-जीवों के **कसाय-भावेहि**-कषाय भावों से **बहु-घादगो**-बहु घातक **ठिदि-अणुभाग-बंधो**-स्थिति व अनुभाग बंध **होदि**-होता है **तहा**-तथा **जोगेहिं**-योगों से **पयडी**-प्रकृति व **पदेस-बंधो**-प्रदेश बंध होता है।

कषाय-बंध हेतु

पाव-बंधस्स हेदू, होज्जा दुट्ठ-पविट्ठी जोगाणं।
विणा कसायं मेत्तं, सादा-वेयणीय-बंधो हि।।105।।

अन्वयार्थ-जोगाणं-योगों की **दुट्ठ-पविट्ठी**-दुष्ट प्रवृत्ति **पाव-बंधस्स**-पाप बंध का **हेदू**-हेतु **होज्जा**-होती है **कसायं**-कषाय के **विणा**-बिना **मेत्तं**-मात्र **सादा-वेयणीय-बंधो हि**-साता वेदनीय का ही बंध होता है।

रागी कर्म बद्धक

रायी बंधदि कम्मं, णस्सेदि रायहीणो कम्माइं।
णाणी मुंचदि रायं, राय-हीणो होज्ज सिद्धो हु।।106।।

अन्वयार्थ-रायी-रागी जीव **कम्मं**-कर्म **बंधदि**-बांधता है (व)

रायहीणो-राग से हीन **कम्माइं**-कर्मों को **णस्सेदि**-नष्ट करता है **णाणी**-ज्ञानी **रायं**-राग को **मुंचदि**-छोड़ता है (और) **राय-हीणो**-राग से हीन **हु**-निश्चय से **सिद्धो**-सिद्ध **होज्ज**-होता है।

ज्ञानी कौन ?

जो रयणत्तय-जुत्तो, णाणी मण्णे सो जिणसासणम्मि।
वद-तव-गुत्ति-विहीणो, कहं णाणी मोक्खमग्गी य।।107।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **रयणत्तय-जुत्तो**-रत्नत्रय से युक्त है **सो**-वह **जिणसासणम्मि**-जिन शासन में **णाणी**-ज्ञानी **मण्णे**-माना जाता है **वद-तव-गुत्ति-विहीणो**-व्रत, तप व गुप्ति से विहीन **कहं**-कैसा **णाणी**-ज्ञानी **य**-और (कैसा) **मोक्खमग्गी**-मोक्षमार्गी? अर्थात् नहीं हो सकता।

संवर तत्त्व

जेहि कारणेहिं खलु, सया णिरुंभिज्जदि कम्मागमणं।
संवर-तच्चं ताइं, जाण संवर-जुत्तो णाणी।।108।।

अन्वयार्थ-**खलु**-निश्चय से **जेहि**-जिन **कारणेहिं**-कारणों से **सया**-सदा **कम्मागमणं**-कर्मागमन का **णिरुंभिज्जदि**-निरोध किया जाता है **ताइं**-उन्हें **संवर-तच्चं**-संवर तत्त्व **जाण**-जानो **संवर-जुत्तो**-संवर तत्त्व से युक्त **णाणी**-ज्ञानी है।

संवर प्रत्यय

गुत्ति-समिदि-धम्म-चरिय-परिसहजय-बारसाणुवेक्खाओ।
गहदि संवर-कारणं, जो णाणी लहदि सो मोक्खं।।109।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **संवर-कारणं**-संवर के कारण **गुत्ति-समिदि-धम्म-चरिय-परिसहजय-बारसाणुवेक्खाओ**-गुप्ति, समिति, धर्म,

चरित्र, परीषह जय व द्वादश अनुप्रेक्षाओं को **गहदि**-ग्रहण करता है **सो**-वह **णाणी**-ज्ञानी **मोक्खं**-मोक्ष **लहदि**-प्राप्त करता है।

संवर भेद

संवरो अवि बेविहो, दव्व-भाव-भेयादु जिणक्खादो।
भाव-संवरो भावा, कम्म-णिरोहो तहा दव्वो।।110।

अन्वयार्थ-दव्व-भाव-भेयादु-द्रव्य और भाव के भेद से **संवरो**-संवर **अवि**-भी **बेविहो**-दो प्रकार का **जिणक्खादो**-जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा गया है। (कर्मास्रव का निरोध करने वाले) **भावा**-भाव **भाव-संवरो**-भाव संवर है **तहा**-तथा **कम्म-णिरोहो**-कर्म का निरोध **दव्वो**-द्रव्य संवर है।

भाव संवर

णिरुंभिज्जंति जेहिं, भावेहि कम्माणि भाव-संवरो।
होज्ज बहुविहो भावो, दव्व-संवर-हेदू भावो।।111।।

अन्वयार्थ-जेहिं-जिन **भावेहि**-भावों के द्वारा **कम्माणि**-कर्मों का **णिरुंभिज्जंति**-निरोध किया जाता है (वह) **भाव-संवरो**-भाव संवर है। **भावो**-भाव संवर **बहुविहो**-बहुत प्रकार का **होज्ज**-होता है **भावो**-भाव संवर **दव्व-संवर-हेदू**-द्रव्य संवर का हेतु है।

समिदि-गुत्ती परीसह-जय-चारित्ताणुवेक्खा धम्मो य।
कम्म-णिरोह-कारणं, भाव-संवरो इमे सव्वे।।112।।

अन्वयार्थ-कम्म-णिरोह-कारणं-कर्म के निरोध का कारण **समिदि-गुत्ती**-समिति, गुप्ति **परीसह-जय-चारित्ताणुवेक्खा**-परीषह जय, चारित्र, अनुप्रेक्षा **य**-और **धम्मो**-धर्म **इमे**-ये **सव्वे**-सभी **भाव-संवरो**-भाव संवर है।

निर्जरा व भेद

एगदेस-सडणं खलु, पुव्व-संचिद-कम्म-वग्गणाणं च।
णिज्जरा भणिदागमे, दुविहा दव्व-भाव-भेयादु।।113।।

अन्वयार्थ-पुव्व-संचिद-कम्म-वग्गणाणं-पूर्व संचित कर्म वर्गणाओं का **एगदेस-सडणं**-एकदेश झरना **आगमे**-आगम में **खलु**-निश्चय से **णिज्जरा**-निर्जरा **भणिदा**-कही गई है (वह) **दव्व-भाव-भेयादु च**-द्रव्य और भाव के भेद से **दुविहा**-दो प्रकार की है।

द्रव्य निर्जरा

सडंति जेहि भावेहि, कम्माइं खलु भाव-णिज्जरा ते।
पोग्गल-कम्म-सडणं च, दव्व-णिज्जरा मुणेदव्वा।।114।।

अन्वयार्थ-जेहि-जिन **भावेहि**-भावों के द्वारा **कम्माइं**-कर्म **सडंति**-विशीर्ण होते हैं **ते**-वे भाव **खलु**-निश्चय से **भाव-णिज्जरा**-भाव निर्जरा है **च**-और **पोग्गल-कम्म-सडणं**-पुद्गल कर्मों का विशीर्ण होना **दव्व-णिज्जरा**-द्रव्य निर्जरा **मुणेदव्वा**-जाननी चाहिए।

सविपाकी-अविपाकी निर्जरा

बेविहा णिज्जरा अवि, तह सविवागि-अविवागि-भेयादो।
होज्ज विदियाविवागी, सहगारि-कारणं मोक्खस्स।।115।।

अन्वयार्थ-सविवागि-अविवागि-भेयादो तह-सविपाकी तथा अविपाकी के भेद से **णिज्जरा**-निर्जरा **बेविहा**-दो प्रकार की **अवि**-भी होती है। **विदिया**-दूसरी **अविवागी**-अविपाकी निर्जरा **मोक्खस्स**-मोक्ष की **सहगारि-कारणं**-सहकारी कारण **होज्ज**-होती है।

सविपाकी निर्जरा

जीवेहि जहक्काले, भुंजिज्जदि जं कम्म-रसं णिच्चं।
णेया सा सविवागी, अणवरदं होदि सव्वाणं।।116।।

अन्वयार्थ-जीवेहि-जीवों के द्वारा **जहक्काले**-यथाकाल में **जं**-जो **कम्म-रसं**-कर्म रस **णिच्चं**-नित्य **भुंजिज्जदि**-भोगा जाता है **सा**-वह **सविवागी**-सविपाकी निर्जरा **णेया**-जाननी चाहिए (वह) **अणवरदं**-अनवरत **सव्वाणं**-सभी (जीवों) के **होदि**-होती है।

जह णाणा-रुक्खादो, पडंते फलाणि पचेलिमाणि तह।
अप्पादो कम्माणं, सहज-सडणं पढमा जाणह।।117।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **णाणा-रुक्खादो**-नाना वृक्षों से **पचेलिमाणि**-पके हुए **फलाणि**-फल **पडंते**-गिरते हैं **तह**-उसी प्रकार **अप्पादो**-आत्मा से **कम्माणं**-कर्मों का **सहज-सडणं**-सहज रूप से विशीर्ण होना **पढमा**-प्रथम सविपाकी निर्जरा **जाणह**-जाननी चाहिए।

अविपाकी निर्जरा

जह पचदि हालाहलो, किट्टिम-रूवेण फलाणि सव्वाणि।
जोगी तवेण णासदि, पचित्तु तह कम्माणि विदिया।।118।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **हालाहलो**-माली **किट्टिम-रूवेण**-कृत्रिम रूप से **सव्वाणि**-सभी **फलाणि**-फलों को **पचदि**-पका देता है **तह**-उसी प्रकार **जोगी**-योगी **तवेण**-तप के द्वारा **पचित्तु**-पकाकर **कम्माणि**-कर्म **णासदि**-नष्ट करता है (वह) **विदिया**-दूसरी (अविपाकी निर्जरा है)

पढमा णिज्जरा णेव, सासय-णिव्वाण-कारणं होज्जा।
विदिया तहाविवागी, कम्मक्खय-कारणं णिच्चं।।119।।

अन्वयार्थ-पढमा-प्रथम **णिज्जरा**-निर्जरा **सासय-णिव्वाण-कारणं**-शाश्वत निर्वाण का कारण **णेव**-कदापि नहीं **होज्जा**-होती

तहा-तथा **विदिया**-द्वितीय **अविवागी**-अविपाकी निर्जरा **णिच्चं**-नित्य **कम्मक्खय-कारणं**-कर्म क्षय का कारण होती है।

व्रतों द्वारा अविपाकी निर्जरा

अविवागीए ठाणा, असंखेज्ज-लोय-पमाणं भणिदा।
पारंभो सा वदेहि, अजोगंतं च होदि कमसो।।120।।

अन्वयार्थ-अविवागीए-अविपाकी निर्जरा के **असंखेज्ज-लोग-पमाणं**-असंख्यात लोक प्रमाण **ठाणा**-स्थान **भणिदा**-कहे गए हैं **सा**-वह निर्जरा **वदेहि**-व्रतों के द्वारा **पारंभो**-प्रारंभ **होदि**-होती है **च**-और **कमसो**-क्रमश: **अजोगंतं**-अयोग केवली गुणस्थान तक चलती है।

मोक्ष हेतु-संयम स्थानादि

संजम-लद्धी ठाणं, विसोही ठाणं णिज्जरा ठाणं।
कमसो सिवस्स हेदू, हेदू णो मोक्खो अवि कस्स।।121।।

अन्वयार्थ-संजम-लद्धी ठाणं-संयम स्थान, लब्धि स्थान **विसोही**-विशुद्धि **ठाणं**-स्थान **णिज्जरा**-निर्जरा **ठाणं**-स्थान **कमसो**-क्रमश: **सिवस्स**-मोक्ष के **हेदू**-हेतु हैं (किंतु) **मोक्खो**-मोक्ष **कस्स**-किसी का **अवि**-भी **हेदू**-हेतु **णो**-नहीं है।

राग-द्वेष क्षय

णट्ठे रायद्दोसे, सव्व-कम्मम्मि णट्ठे तह मोहो।
आविहवंति णिय-गुणा, ते अप्पे सासया सहजा।।122।।

अन्वयार्थ-रायद्दोसे-राग-द्वेष **णट्ठे**-नष्ट होने पर **मोहो**-मोह **तह**-तथा **सव्व-कम्मम्मि**-सर्व कर्म **णट्ठे**-नष्ट होने पर **णिय-गुणा**-निज गुण **आविहवंति**-प्रकट होते हैं **ते**-वे **अप्पे**-आत्मा में **सासया**-शाश्वत व **सहजा**-सहज हैं।

मोहक्षय से कर्मक्षय

लुक्खत्ते णिग्घत्ते, पज्झरदि जह पोग्गल-रजं णट्ठे।
णट्ठे रायद्दोसे, तह अप्पादु सव्व-कम्माणि।।123।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **लुक्खत्ते**-रूक्षता **णिग्घत्ते**-स्निग्धता के **णट्ठे**-नष्ट होने पर **पोग्गल-रजं**-पुद्गल रज **पज्झरदि**-झर जाती है **तह**-उसी प्रकार **रायद्दोसे**-राग-द्वेष के **णट्ठे**-नष्ट होने पर **अप्पादु**-आत्मा से **सव्व-कम्माणि**-सभी कर्म झर जाते हैं।

शाश्वत शुद्ध द्रव्य

धम्माधम्मा कालो, णहं सया सुद्ध-सहाव-जुत्तो य।
सम्म-जदणेण जीवो, होदि कम्म-मुत्तो सुद्धो हु।।124।।

अन्वयार्थ-धम्माधम्मा-धर्म, अधर्म **कालो**-काल **य**-और **णहं**-आकाश द्रव्य **सया**-सदा **सुद्ध-सहाव-जुत्तो**-शुद्ध स्वभाव से युक्त हैं। **हु**-निश्चय से **जीवो**-जीव **सम्म-जदणेण**-सम्यक् यत्न से **कम्म-मुत्तो**-कर्मों से मुक्त व **सुद्धो**-शुद्ध **होदि**-होता है।

कर्महीन में विकार नहीं

जम्म-जरामय-रहिदे, तहा दव्व-भाव-णोकम्म-हीणे।
अणंताणंत-काले, संभवो ण किंचिवि वियारो।।125।।

अन्वयार्थ-जम्म-जरामय-रहिदे-जन्म-जरा-रोग से रहित **तहा**-तथा **दव्व-भाव-णोकम्म-हीणे**-द्रव्य, भाव व नोकर्म से हीन जीव में **अणंताणंत-काले**-अनंतानंत काल में भी **किंचिवि**-किंचित् भी **वियारो**-विकार **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

कर्मनष्ट होने पर पुनर्जन्म नहीं

जह बीयम्मि दहणे, णो सक्को तस्स अंकुरो कया वि।
तह कम्मम्मि दहणे, ण सक्को जम्मो संसारे।।126।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **बीयम्मि**-बीज के **दहणे**-जलने पर **तस्स**-उसका **अंकुरो**-अंकुर **कया वि**-कभी भी **सक्को**-शक्य **णो**-नहीं है **तह**-उसी प्रकार **कम्मम्मि**-कर्म **दहणे**-जलने पर **संसारे**-संसार में **जम्मो**-जन्म **सक्को**-शक्य **ण**-नहीं है।

धर्मादि द्रव्य विभावी नहीं

धम्माधम्म-णहेसुं, कालम्मि णो संभवो विहावो य।
जह तह सिद्ध-जीवेसु, ण संभवो किंचिवि विगारो।।127।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **धम्माधम्म-णहेसुं**-धर्म, अधर्म, आकाश **य**-और **कालम्मि**-काल द्रव्य में **विहावो**-विभाव **संभवो**-संभव **णो**-नहीं है **तह**-उसी प्रकार **सिद्ध-जीवेसु**-सिद्ध जीवो में **किंचिवि**-किंचित् भी **विगारो**-विकार **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

मुक्त जीव, संसारी नहीं

होदि ण अग्गी कया वि, सीयलो मुत्तिगो जह आयासो।
तह सुद्ध-मुत्त-जीवो, णो कया वि होदि संसारी।।128।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **अग्गी**-अग्नि **कया वि**-कभी भी **सीयलो**-शीतल (और) **आयासो**-आकाश **मुत्तिगो**-मूर्त्तिक **ण**-नहीं **होदि**-होता **तह**-उसी प्रकार **सुद्ध-मुत्त-जीवो**-शुद्ध व मुक्त जीव **कया वि**-कभी भी **संसारी**-संसारी **णो**-नहीं **होदि**-होता।

पुण्य-प्रशस्त कर्म

पुण्णं पसत्थ-कम्मं, सुह-मग्गस्स कारण-मिणं भणिदं।
पाव-णिरोह-कारणं, कमसो वि मोक्ख-हेदू जाण।।129।।

अन्वयार्थ-पुण्णं-पुण्य **पसत्थ-कम्मं**-प्रशस्त कर्म है **इणं**-यह **सुह-मग्गस्स**-शुभ मार्ग का **कारणं**-कारण **भणिदं**-कहा गया है (पुण्य)

पाव-णिरोह-कारणं-पाप निरोध का कारण है (व इसे) **कमसो**-क्रमशः **मोक्ख-हेदू**-मोक्ष का हेतु **वि**-भी **जाण**-जानो।

शुभ कर्म प्रकृतियाँ

वेदणीय-आउ-णाम-गोत्त-कम्मेसु-अट्ठ-सट्ठी जाण।
पुण्णप्पसत्थ-पयडी, हेदू अरिहंतवत्थाइ वि।।130।।

अन्वयार्थ-वेदणीय-आउ-णाम-गोत्त-कम्मेसु-वेदनीय कर्म, आयु नाम वे गोत्र कर्म में **अट्ठ-सट्ठी**-अडसठ **पुण्णप्पसत्थ-पयडी**-पुण्य व प्रशस्त प्रकृतियाँ **जाण**-जानो (वे) **अरिहंतवत्थाइ**-अरिहंत अवस्था का **वि**-भी **हेदू**-हेतु है।

धर्म प्रवर्तक

तित्थयरस्सुदयादो, होदि सय सजोग-केवली जीवो।
तिहुवण-सामी भणिदो, धम्म-पवट्टगो जिण-समये।।131।।

अन्वयार्थ-तित्थयरस्सुदयादो-तीर्थंकर प्रकृति के उदय से **जीवो**-जीव **सय**-सदा **सजोग-केवली**-सयोग केवली **तिहुवण-सामी**-त्रिभुवन का स्वामी **होदि**-होता है इन्हें **जिण-समये**-जिन शासन में **धम्म-पवट्टगो**-धर्म प्रवर्तक **भणिदो**-कहा गया है।

निर्वाण हेतु शुभ प्रकृतियाँ

माणुस-तस-पज्जायं, सुह-संहणण-संठाणुच्च-गोत्तं।
सादं सुहाउं विणा, ण संभवो कया णिव्वाणं।।132।।

अन्वयार्थ-माणुस-तस-पज्जायं-मनुष्य-त्रस पर्याय **सुह-संहणण-संठाणुच्च-गोत्तं**-शुभ संहनन, शुभ संस्थान, उच्च गोत्र **सादं**-साता वेदनीय **सुहाउं**-व शुभ आयु के **विणा**-बिना **णिव्वाणं**-निर्वाण **कया**-कभी **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

पाप फल भोगी

सव्व-असण्णी जीवा, भुंजंति अइ-पाव-फलं णियमेण।
बहु-सण्णी जीवा अवि, तिव्व-पाव-फलं पभुंजंति।।133।।

अन्वयार्थ-सव्व-असण्णी जीवा-सभी असंज्ञी जीव **णियमेण**-नियम से **अइ-पाव-फलं**-अति पाप फल **भुंजंति**-भोगते हैं **बहु-सण्णी जीवा**-बहुत से संज्ञी जीव **अवि**-भी **तिव्व-पाव-फलं**-तीव्र पाप का फल **पभुंजंति**-भोगते हैं।

जाव अप्प-पदेसेसु, मिच्छत्तं खलु अणाइ-रूवेणं।
ताव भुंजदे जीवो, घोर-दुह-मणंत-कालंतं।।134।।

अन्वयार्थ-जाव-जब तक **अप्प-पदेसेसु**-आत्म प्रदेशों में **मिच्छत्तं**-मिथ्यात्व कर्म **अणाइ-रूवेणं**-अनादि रूप से (विद्यमान) है **ताव**-तब तक **जीवो**-जीव **खलु**-निश्चय से **अणंत-कालंतं**-अनंत काल तक **घोर-दुहं**-घोर दु:ख **भुंजदे**-भोगता है।

अप्रशस्त प्रकृति पाप हेतु

लोगे अप्पसत्थसुह-फल-दायग-पाव-कम्मं पसिद्धं।
पुण्ण-वारण-कारणं, अणंत-दुह-कारणं जाणह।।135।।

अन्वयार्थ-अप्पसत्थसुह-फल-दायगं-अप्रशस्त अशुभ फल दायक **पाव-कम्मं**-पाप कर्म **लोगे**-लोक में **पसिद्धं**-प्रसिद्ध है (यह) **पुण्ण-वारण-कारणं**-पुण्य के वारण का कारण है (व इसे) **अणंत-दुह-कारणं**-अनंत दु:खों का कारण **जाणह**-जानो।

पापप्रकृति

घादी असादा असुह-णामं दुराऊ तह णीय-गोत्तं।
सय-पाव-पयडी सया, धम्मिट्ठिणो विजाणेज्ज खलु।।136।।

अन्वयार्थ-**घादी**-घातिया **असादा**-असाता वेदनीय **असुह-णामं**-अशुभ नाम **दुराऊ**-दु:आयु **तह**-तथा **णीय-गोत्तं**-नीच गोत्र **खलु**-निश्चय से **सय-पाव-पयडी**-सौ पाप प्रकृतियाँ **धम्मिट्ठिणो**-धर्मिष्ठों को **सया**-सदा **विजाणेज्ज**-जाननी चाहिए।

पुण्यानुबंधि पुण्यादि चार भंग

पुण्णाणुबंधि-पुण्णं, पुण्णाणुबंधि-पावं संसारे।
पावाणुबंधि-पावं, होज्ज पावाणुबंधि-पुण्णं।।137।।

अन्वयार्थ-इस प्रकार **संसारे**-संसार में **पुण्णाणुबंधि-पुण्णं**-पुण्यानुबंधी पुण्य **पुण्णाणुबंधि-पावं**-पुण्यानुबंधी पाप **पावाणुबंधि-पावं**-पापानुबंधी पाप व **पावाणुबंधि-पुण्णं**-पापानुबंधी-पुण्य **होज्ज**-होता है।

पाप-पुण्य-फल

बंधंते बहु-जीवा, पुण्णुदये बहुविह-पुण्ण-कम्माणि।
तित्थयर-बलदेविंद-चक्कि-आइ-सुहाणि भुंजंति।।138।।

अन्वयार्थ-**पुण्णुदये**-पुण्य के उदय में **बहु-जीवा**-बहुत से जीव **बहुविहपुण्ण-कम्माणि**-बहुत प्रकार के पुण्य कर्मों का **बंधंते**-बंध करते हैं (व) **तित्थयर-बलदेविंद-चक्कि-आइ-सुहाणि**-तीर्थंकर, बलदेव, इंद्र, चक्रवर्ती आदि के सुखों को **भुंजंति**-भोगते हैं।

पावोदयम्मि जीवा, भत्ति-पूया-वद-दाण-सीलेहिं।
पुण्णं बंधंते अवि, कमसो पुण सुहाणि भुंजंति।।139।।

अन्वयार्थ-**जीवा**-जीव **पावोदयम्मि**-पाप के उदय में **अवि**-भी **भत्ति-पूया-वद-दाण-सीलेहिं**-भक्ति, पूजा, व्रत, दान, शील से **पुण्णं**-पुण्य का **बंधंते**-बंध करते हैं **पुण**-पुन: **कमसो**-क्रमश:

सुहाणि-सुखों को **भुंजंति**-भोगते हैं।

बंधंति कइवि जीवा, पावं तिव्व-पावोदयम्मि जेण।
णिरय-तिरिय-कुभोगमहि-आदीणं दुहाणि भुंजंति।।140।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई एक **जीवा**-जीव **तिव्व-पावोदयम्मि**-तीव्र पाप के उदय में **पावं**-पाप का **बंधंति**-बंध करते हैं **जेण**-जिससे **णिरय-तिरिय-कुभोगमहि-आदीणं**-नरक, तिर्यंच, कुभोगभूमि आदि के **दुहाणि**-दुःखों को **भुंजंति**-भोगते हैं।

पुण्णोदये वि जीवा, विसय-कसाय-वसण-पावेहि तहा।
बंधंति तिव्व-पावं, भुंजंते फलं चिरं तस्स।।141।।

अन्वयार्थ-पुण्णोदये-पुण्य के उदय में **वि**-भी **जीवा**-जीव **विसय-कसाय-वसण-पावेहि**-विषय-कषाय, व्यसन व पापों से **तिव्व-पावं**-तीव्र पाप का **बंधंति**-बंध करते हैं **तहा**-तथा **तस्स**-उसके **फलं**-फल को **चिरं**-दीर्घ काल तक **भुंजंते**-भोगते हैं।

इंदो वा अहमिंदो, कामो बलदेवो चक्की आदी।
भुंजंति पुण्ण-फलाणि, अणंतरं सिव-सुहं लहंति।।142।।

अन्वयार्थ-कामो-कामदेव **बलदेवो**-बलदेव **चक्की**-चक्रवर्ती **इंदो**-इंद्र **वा**-या **अहमिंदो**-अहमिंद्र **आदी**-आदि **पुण्ण-फलाणि**-पुण्य के फलों को **भुंजंति**-भोगते हैं **अणंतरं**-अनंतर **सिव-सुहं**-शिव सुख **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

सामण्ण-पुण्णोदये, करेदि पुण्णं रयणत्तयं गहिय।
णर-सुर-सोक्खं लहित्तु, पावदि पुण सासयट्ठाणं।।143।।

अन्वयार्थ-सामण्ण-पुण्णोदये-सामान्य पुण्योदय में जीव **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **गहिय**-ग्रहण कर **पुण्णं**-पुण्य **करेदि**-करता है (अनंतर) **णर-सुर-सोक्खं**-मनुष्य व देव सुख **लहित्तु**-प्राप्त कर **पुण**-पुनः

सासयट्ठाणं-शाश्वत स्थान को **पावदि**-प्राप्त करता है।

कइवि पाविट्ठ-जीवा, पावोदये कुणंति तिव्व-पावं।
पाणी सया लहंते, अइ-दुक्खाणि अधम्मेणं हि।।144।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई एक **पाविट्ठ-जीवा**-पापिष्ठ जीव **पावोदये**-पाप के उदय में **तिव्व-पावं**-तीव्र पाप **कुणंति**-करते हैं **पाणी**-प्राणी **अधम्मेणं**-अधर्म से **सया**-सदा **हि**-ही **अइ-दुक्खाणि**-अति दु:ख **लहंते**-प्राप्त करते हैं।

बंधंति कइवि जीवा, पावं बहुलं तह पुण्णोदयम्मि।
उप्पज्जंति देवा वि, एइंदियेसु पाव-फलेण।।145।।

अन्वयार्थ-कइवि-कई एक **जीवा**-जीव **पुण्णोदयम्मि**-पुण्य के उदय में **बहुलं**-प्रचुर **पावं**-पाप **बंधंति**-बंध करते हैं **तह**-तथा **पाव-फलेण**-पाप के फल से **देवा**-देव **वि**-भी **एइंदियेसु**-एकेन्द्रियों में **उप्पज्जंति**-उत्पन्न होते हैं।

मंगलोत्तम शरण

मंगल-उत्तम-सरणं, महापुण्णरूवं हि जिणुद्दिट्ठं।
लहंति ण पुण्णहीणा, मंगलुत्तम-सरणं कया वि।।146।।

अन्वयार्थ-मंगल-उत्तम-सरणं-मंगल व उत्तम शरण **हि**-ही **महापुण्णरूवं**-महापुण्य रूप **जिणुद्दिट्ठं**-जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कही गई है। **मंगलुत्तम-सरणं**-मंगल व उत्तम शरण को **पुण्णहीणा**-पुण्यहीन **कया-वि**-कभी भी **ण-लहंति**-प्राप्त नहीं करते।

पुण्य शिव हेतु भी

संसार-सुह-कारणं, होदि सुपुण्णं-सम्मादिट्ठीण।
अणंतरं विजाणेज्ज, णिव्वाण-कारणं णियमेण।।147।।

अन्वयार्थ-सम्मादिट्ठीण-सम्यग्दृष्टियों का **सुपुण्णं**-सुपुण्य **संसार-सुह-कारणं**-संसार सुख का कारण **होदि**-होता है **अणंतरं**-अनंतर **णिव्वाण-कारणं**-निर्वाण का कारण **णियमेण**-नियम से **विजाणेज्ज**-जानना चाहिए।

चयिदूणं पावाइं, करेज्ज पुण्णं लहिदुं सिवमग्गं।
पुण तत्तो छुट्टित्ता, लहदु सासय-सिव-सहावं वि।।148।।

अन्वयार्थ-सिवमग्गं-शिव मार्ग **लहिदुं**-प्राप्त करने के लिए **पावाइं**-पापों का **चयिदूणं**-त्याग कर **पुण्णं**-पुण्य **करेज्ज**-करना चाहिए **पुण**-पुनः **तत्तो**-उससे **वि**-भी **छुट्टित्ता**-छूटकर **सासय-सिव-सहावं**-शाश्वत शिव स्वभाव को **लहदु**-प्राप्त करना चाहिए।

इदि चदुत्थाहियारो

अह पंचम-सम्मत्ताहियारो

पंचमाधिकार मंगलाचरण

सुविहि-पुप्फदंतं वा, सुविह-पयासग-धम्मगंध-सहिदं।
धम्म-पहावणट्ठं च, पणिवयामि सवर-संतीए।।149।।

अन्वयार्थ-सुविह-पयासगं-सम्यक् मार्ग के प्रकाशक **धम्मगंध-सहिदं**-धर्म गंध से सहित **सुविहि-पुप्फदंतं वा**-श्री सुविधिनाथ या श्री पुष्पदंत भगवान को **धम्म-पहावणट्ठं**-धर्म प्रभावना के लिए **च**-और **सवर-संतीए**-स्वपर शांति के लिए **पणिवयामि**-नमन करता हूँ।

णमित्तु सीयलणाहं, खइय-सम्मत्त-अमिय-संजुत्तं च।
सुसम्मत्ताइ-लहिदुं, वागरमि सम्मत्तहियारं।।150।।

अन्वयार्थ-खइय-सम्मत्त-अमिय-संजुत्तं-क्षायिक सम्यक्त्व रूपी अमृत से संयुक्त **सीयलणाहं**-श्री शीतलनाथ भगवान् को **णमित्तु**-नमस्कार कर **सुसम्मत्ताइ-लहिदुं**-सु अर्थात् क्षायिक सम्यक्त्व आदि की प्राप्ति के लिए **सम्मत्तहियारं**-सम्यक्त्व अधिकार को **वागरमि**-कहता हूँ।

आत्म धर्म

अप्प-मुक्खगुणधम्मो, सम्मत्तं जिणवरेहि णिद्दिट्ठं।
अप्पस्स विणा तेणं, होदि को वि गुणो णो सुद्धो।।151।।

अन्वयार्थ-अप्प-मुक्ख-गुणधम्मो-आत्मा का मुख्य गुणधर्म **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **जिणवरेहि**-जिनवरों के द्वारा **णिद्दिट्ठं**-कहा गया है **तेणं**-उसके **विणा**-बिना **अप्पस्स**-आत्मा का **को वि**-कोई भी **गुणो**-गुण (कदापि) **सुद्धो**-शुद्ध **णो**-नहीं **होदि**-होता।

सम्यक्दर्शन स्वरूप

जिणदेव-जिणवयणाण, जिणधम्म-णिग्गंथाण सद्दहणं।
मूढदा-मदाइ-दोस-रहिदं सम्मदंसणं होदि।।152।।

अन्वयार्थ-मूढदा-मदाइ-दोस-रहिदं-मूढ़ता, मद आदि दोषों से रहित **जिणदेव-जिणवयणाण**-जिनेन्द्र देव, जिन वचन **जिणधम्म-णिग्गंथाण**-जिनधर्म व निर्ग्रंथ गुरुओं पर **सद्दहणं**-श्रद्धान करना **सम्मदंसणं**-सम्यक्दर्शन **होदि**-होता है।

सम्यक्त्व लक्षण

सम्मत्तस्स लक्खणं, पसम-संवेगत्थिक्काणुकंपा।
जिणभत्ति-आदी तहा, मुणेदव्वा गुणट्ठविहा हु।।153।।

अन्वयार्थ-पसम-संवेगत्थिक्काणुकंपा-प्रशम, संवेग, आस्तिक्य व अनुकंपा **सम्मत्तस्स**-सम्यक्त्व के **लक्खणं**-लक्षण हैं **तहा**-तथा **जिणभत्ति-आदी**-जिन भक्ति आदि (सम्यक्त्व के) **हु**-निश्चय से **गुणट्ठविहा**-आठ प्रकार के गुण **मुणेदव्वा**-जानने चाहिए।

सम्यक्त्व के पर्यायवाची

णिट्ठा रुई पदीदी, सद्धत्था सुद्धप्पप्पभावं च।
सम्मत्तं एगट्ठो, सत्थहीणप्पणं पत्तिओ।।154।।

अन्वयार्थ-णिट्ठा-निष्ठा **रुई**-रुचि **पदीदी**-प्रतीति **सद्धा**-श्रद्धा **अत्था**-आस्था **सुद्धप्पा**-शुद्धात्मा **अप्पभावं**-आत्म भाव **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **सत्थहीणप्पणं**-स्वार्थहीन अर्पण **च**-और **पत्तिओ**-प्रत्यय (विश्वास) **एगट्ठो**-ये एकार्थवाची हैं।

सम्यग्दर्शन भेद

ववहारेणं तिविहं, उवसमिअ-खइय-खओवसमियाणि य।
णिच्छयेण अभेयं हि, रयणत्तय-अक्कमविट्ठीइ।।155।।

अन्वयार्थ-ववहारेणं-व्यवहार से (रत्नत्रय) **तिविहं**-तीन प्रकार

का है **उवसमिअं**-उपशम **खइयं**-क्षायिक **य**-और **खओवसमियं**-क्षयोपशम **रयणत्तय-अक्कमविट्टीइ**-रत्नत्रय की अक्रमवृत्ति होने से वह **णिच्छयेण**-निश्चय से **अभेयं**-अभेद रूप **हि**-ही है।

अण्णा मग्गुवदेसा, सुत्तं बीअ-संखेव-वित्थारा।
अत्थ-मवगाढ-परमा-वगाढं दहविह-सम्मत्तं।।156।।

अन्वयार्थ-अण्णा-आज्ञा **मग्गुवदेसा**-मार्ग, उपदेश **सुत्तं**-सूत्र **वीय-संखेव-वित्थारा**-बीज, संक्षेप, विस्तार, **अत्थं**-अर्थ **अवगाढ-परमावगाढ**-अवगाढ़, परमावगाढ़ इस प्रकार **सम्मत्त**-सम्यक्त्व **दहविहं**-दस प्रकार का भी है।

कारण कार्य

ववहार-सम्मत्तेण, सह होदि णियमेण सम्मण्णाणं।
सम्मत्तं हेदू तह, सम्मण्णाणं कज्जं तहवि।।157।।

अन्वयार्थ-ववहार-सम्मत्तेण-व्यवहार सम्यक्त्व के **सह**-साथ **णियमेण**-नियम से **सम्मण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **होदि**-होता है **तहवि**-तथापि **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **हेदू**-हेतु **तह**-तथा **सम्मण्णाणं**-सम्यक्ज्ञान **कज्जं**-कार्य है।

व्रत वृद्धि

देस चरिय-महव्वदं, पुण जहक्खओवसमाणुसारेण।
हवेदि कसायुवसमो, जह जह वदं वड्ढदि तह तह।।158।।

अन्वयार्थ-पुण-पुनः **जहक्खओवसमाणुसारेण**-यथा क्षयोपशमानुसार **देस चरिय-महव्वदं**-देशचारित्र और महाव्रत होता है। **जह-जह**-जैसे-जैसे **कसायुवसमो**-कषाय का उपशम **हवेदि**-होता है **तह-तह**-वैसे-वैसे **वदं**-व्रत **वड्ढदि**-वृद्धिंगत होता है।

अनंतानुबंधी कषाय

णियमेणं बि-घादगो, होदि हु अणंताणुबंधि-कसायो।
घाददि सम्मत्तं पुण, आवरदे चरित्त-मग्गं वि।।159।।

अन्वयार्थ-अणंताणुबंधि-कसायो-अनंतानुबंधी कषाय **णियमेणं**-नियम से **बि-घादगो**-द्वि घातक **होदि**-होती है (वह) **हु**-निश्चय से **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व का **घाददि**-घात करती है **पुण**-पुनः **चरित्त-मग्गं**-चारित्र के मार्ग को **वि**-भी **आवरदे**-ढाँकती है।

चारित्र सन्मुख

अणंताणुबंधिस्स हु, जदि खय-मुवसम-खओवसमं होदि।
चरित्त-सम्मुहे तत्थ, ण चरियमंतो कया वि णरो।।160।।

अन्वयार्थ-अणंताणुबंधिस्स-अनंतानुबंधी का **जदि**-यदि **खयं**-क्षय **उवसम-खओवसमं**-उपशम, क्षयोपशम **होदि**-होता है (तब) **णरो**-नर **तत्थ**-वहाँ **चरित्त-सम्मुहे**-चारित्र के सन्मुख होता है (किन्तु) **हु**-निश्चय से **कया वि**-कभी भी **चरियमंतो**-चारित्रवान् **ण**-नहीं होता।

सम्यक्त्वयुत क्रिया

चरित्त-सम्मुह-भावो, किरिया सम्मत्तस्सविणाभावी।
पंचिंदिय-विसयादो, पावादो ण विरत्ती तत्थ।।161।।

अन्वयार्थ-चरित्त-सम्मुह-भावो-चारित्र के सन्मुख होने का भाव **सम्मत्तस्स**-सम्यक्त्व की **अविणाभावी**-अविनाभावी **किरिया**-क्रिया है (किन्तु) **तत्थ**-वहाँ **पंचिंदिय-विसयादो**-पंचेन्द्रिय विषयों व **पावादो**-पापों से **विरत्ती**-विरक्ति **ण**-नहीं है।

चारित्राभाव

संसार-तण-भोयादु, विरत्त-भावो जदवि हवेदि तत्थ।
अप्पच्चक्खाण-खओवसमं विणा ण किंचि चरियं।।162।।

अन्वयार्थ-जदवि-यद्यपि **तत्थ**-वहाँ **संसार-तण-भोयादु**-संसार-शरीर-भोगों से **विरत्त-भावो**-विरक्त भाव **हवेदि**-होता है। **अप्पच्चक्खाण-खओवसमं**-अप्रत्याख्यान के क्षयोपशम के **विणा**-बिना **किंचि**-किंचित् भी **चरियं**-चारित्र **ण**-नहीं होता है।

देशव्रत

जो गहेदि संकप्पं, विरत्तीए इगदेस-पावादो।
इंदिय-विसय-विरत्तो, सो देसव्वदी सद्दिट्ठी।।163।।

अन्वयार्थ-जो-जो **इगदेस-पावादो**-एकदेश पाप से **विरत्तीए**-विरक्ति के लिए **संकप्पं**-संकल्प **गहेदि**-ग्रहण करता है **सो**-वह **इंदिय-विसय-विरत्तो**-इंद्रिय विषयों से विरक्त **सद्दिट्ठी**-सम्यक्दृष्टि **देसव्वदी**-देशव्रती है।

उत्तमश्रावक

अणु-सत्तसीलव्वदं, एयारस-पडिमं जमरूवेणं।
गिण्हंति पालंति जे, सत्तीइ सावयुत्तमा ते।।164।।

अन्वयार्थ-जे-जो **जमरुवेणं**-यम रूप से **अणु-सत्तसीलव्वदं**-अणुव्रत, सप्त शीलव्रत **एयारस-पडिमं**-ग्यारह प्रतिमा **गिण्हंति**-ग्रहण करते हैं **सत्तीइ**-शक्तिपूर्वक **पालंति**-पालन करते हैं **ते**-वे **सावयुत्तमा**-श्रावक उत्तम हैं।

श्रेण्यारोहक

खइय-सम्माइट्ठी हु, आरुहेज्ज उवसम-खवग-सेणी य।
विदियुवसम-जुद-जोगी, केवलं तह उवसम-सेणिं।।165।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **खइय-सम्माइट्ठी**-क्षायिक सम्यग्दृष्टि **उवसम-खवग-सेणी य**-उपशम व क्षपक श्रेणी दोनों **आरुहेज्ज**-चढ़ सकते हैं **तह**-तथा **विदियुवसम-जुद-जोगी**-द्वितीयोपशम युत योगी **केवलं**-केवल **उवसम-सेणिं**-उपशम श्रेणी चढ़ते हैं।

आज्ञा सम्यग्दृष्टि

जिणुवदेसो समत्थो, कल्लाणाय सव्व-भव्व-जीवाण।
मणेदि जो भव्वो तं, अण्णा-सम्मद्दिट्ठी सो हु।।166।।

अन्वयार्थ-**सव्व-भव्व-जीवाण**-सभी भव्य जीवों के **कल्लाणाय**-कल्याण के लिए **जिणुवदेसो**-जिन उपदेश **समत्थो**-समर्थ है **जो**-जो **भव्वो**-भव्य **तं**-उसको **मणेदि**-मानता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **अण्णा-सम्मद्दिट्ठी**-आज्ञा सम्यग्दृष्टि है।

मार्ग सम्यग्दृष्टि

पस्सित्तु मोक्खमग्गिं, जे सद्दहंते मोक्ख-मग्गं ते।
होंति मग्ग-सद्दिट्ठी, मुत्तिं अप्पयाले लहंति।।167।।

अन्वयार्थ-**जे**-जो **मोक्खमग्गिं**-मोक्षमार्गी को **पस्सित्तु**-देखकर **मोक्ख-मग्गं**-मोक्ष मार्ग पर **सद्दहंते**-श्रद्धान करते हैं **ते**-वे **मग्ग-सद्दिट्ठी**-मार्ग सम्यग्दृष्टि **होंति**-होते हैं तथा **अप्पयाले**-अल्पकाल में **मुत्तिं**-मुक्ति **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

उपदेश सम्यग्दृष्टि

महापुरिस-देसणाइ, सद्दहदे जो तच्चं भव्वो सो।
उवएस-सद्दिट्ठी हु, णियरूवं जाणिदुं सक्को।।168।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **भव्वो**-भव्य जीव **महापुरिस-देसणाए**-महापुरुष की देशना से **तच्चं**-तत्त्व पर **सद्दहदे**-श्रद्धान करता है **सो**-वह **हु**-

निश्चय से **उवएस-सद्दिट्ठी**-उपदेश सम्यग्दृष्टि है (व) **णियरूवं**-निज रूप **जाणिदुं**-जानने में **सक्को**-शक्य है।

सूत्र सम्यग्दृष्टि

जो होज्जा सद्दिट्ठी, सुणित्ता आयार-रहस्स-गंथं।
सो हु सुत्त-सद्दिट्ठी, लहदि पुण्ण-सुदणाण-मचिरं।।169।।

अन्वयार्थ-जो-जो **आयार-रहस्स-गंथं**-आचार रहस्य ग्रंथ **सुणित्ता**-सुनकर **सद्दिट्ठी**-सम्यक्दृष्टि **होज्जा**-होता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **सुत्त-सद्दिट्ठी**-सूत्र सम्यग्दृष्टि है (तथा वह) **अचिरं**-शीघ्र **पुण्ण-सुद-णाणं**-पूर्ण श्रुतज्ञान **लहदि**-प्राप्त करता है।

बीज सम्यग्दृष्टि

लहित्तु दुल्लह-णाणं, जिणसासणस्स जो सो सद्दिट्ठी।
होदि बीअ-सद्दिट्ठी, बिदहंग-पाढगो भविस्से।।170।।

अन्वयार्थ-जो-जो **जिणसासणस्स**-जिनशासन के **दुल्लह-णाणं**-दुर्लभ ज्ञान को **लहित्तु**-प्राप्त कर **सद्दिट्ठी**-सम्यक्दृष्टि **होदि**-होता है **सो**-वह **बीअ-सद्दिट्ठी**-बीज सम्यक्दृष्टि है (तथा वह) **भविस्से**-भविष्य में **बिदहंग-पाढगो**-बारह अंग का पाठक होता है।

संक्षेप सम्यग्दृष्टि

जाणित्ता जिणगंथं, संखेवेण होदि सद्दिट्ठी जो।
पुण अणंत-णाणं सो, लहिदुं समत्थो संखेवो।।171।।

अन्वयार्थ-जो-जो **संखेवेण**-संक्षेप से **जिणगंथं**-जिनग्रंथ **जाणित्ता**-जानकर **सद्दिट्ठी**-सम्यग्दृष्टि **होदि**-होता है **सो**-वह **संखेवो**-संक्षेप सम्यग्दृष्टि है, वह **पुण**-पुनः **अणंत-णाणं**-अनंत ज्ञान **लहिदुं**-प्राप्त करने के लिए **समत्थो**-समर्थ है।

विस्तार सम्यग्दृष्टि

सुणित्ता बारसंगं, लहेदि सुद्ध-सम्मत्त-भावं जो।
वित्थर-सद्दिट्ठी सो, होदि हु सुदकेवली जीवो।।172।।

अन्वयार्थ-जो-जो **बारसंगं**-द्वादशांग **सुणित्ता**-सुनकर **सुद्ध-सम्मत्तं**-शुद्ध सम्यक्त्व **भावं**-भाव **लहेदि**-प्राप्त करता है **सो**-वह **वित्थर-सद्दिट्ठी**-विस्तार सम्यग्दृष्टि है **हु**-निश्चय से **जीवो**-वह जीव **सुदकेवली**-श्रुतकेवली **होदि**-होता है।

अर्थ सम्यग्दृष्टि

पढित्तु ण अंग-बहिरं, कस्स वि पदत्थ-णिमित्तेण लहित्तु।
सु-अत्थं जो सो होदि, अत्थो सद्दिट्ठी भव्वो हु।।173।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भव्वो**-भव्य जीव **अंग-बहिरं**-अंग बाह्य **ण**-न **पढित्तु**-पढ़कर **कस्स वि**-किसी भी **पदत्थ-णिमित्तेण**-पदार्थ के निमित्त से **सु-अत्थं**-सम्यक् अर्थ को **लहित्तु**-प्राप्तकर **सद्दिट्ठी**-सम्यग्दृष्टि **होदि**-होता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **अत्थो**-अर्थ सम्यग्दृष्टि है।

अवगाढ़ सम्यग्दृष्टि

अंग-बहिर-मवगाहिय, बारसंग-सहिदं लहदे अवि जो।
सम्मत्तं भव्वुल्लो, अवगाढ-सम्माइट्ठी सो।।174।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भव्वुल्लो**-भव्य **बारसंग-सहिदं**-द्वादशांग सहित **अंग-बहिरं**-अंग बाह्य में **अवि**-भी **अवगाहिय**-अवगाहन करके **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **लहदे**-प्राप्त करता है **सो**-वह **अवगाढ-सम्माइट्ठी**-अवगाढ़ सम्यग्दृष्टि है।

परमावगाढ़ सम्यक्त्व

लहित्तु केवल-णाणं, परमसुद्धभावप्पम्मि जो होज्ज।
भासिदं जिणसमयम्मि परमावगाढं सम्मत्तं।।175।।

अन्वयार्थ-केवल-णाणं-केवल ज्ञान **लहित्तु**-प्राप्तकर **जो**-जो **अप्पम्मि**-आत्मा में **परमसुद्धभावो**-परम शुद्ध भाव **होज्ज**-होता है (वह) **जिणसमयम्मि**-जिनशासन में **परमावगाढं**-परमावगाढ़ **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **भासिदं**-कहा गया है।

निश्चय सम्यग्दर्शन बिना नहीं संभव

णिच्छय-सम्मत्तं चिय, विणा णो संभवो सुद्धुवजोगो।
णिरालंब-झाणं अवि, तहा सुद्धप्पाणुभूदी ण।।176।।

अन्वयार्थ-णिच्छय-सम्मत्तं-निश्चय सम्यग्दर्शन के **विणा**-बिना **सुद्धुवजोगो**-शुद्धोपयोग **संभवो**-संभव **चिय**-ही **णो**-नहीं है **णिरालंब-झाणं**-निरालंब ध्यान **तहा**-तथा **सुद्धप्पाणुभूदी**-शुद्धात्मानुभूति **अवि**-भी (संभव) **ण**-नहीं है।

अभेद रत्नत्रय

जह रुक्ख-मूल-खंधा, साहादी होज्ज अभिण्णा तत्तो।
सम्मत्त-णाण-चरियं, अभेय-रूवं तह अप्पम्मि।।177।।

अन्वयार्थ-जह-जैसे **रुक्ख-मूल-खंधा**-वृक्ष की जड़, स्कंध **साहादी**-शाखा आदि **तत्तो**-उससे **अभिण्णा**-अभिन्न **होज्ज**-होते हैं **तह**-उसी प्रकार **सम्मत्त-णाण-चरियं**-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र **अप्पम्मि**-आत्मा में **अभेय-रूवं**-अभेद रूप होते हैं।

मोदगे सक्करा जह, घिदण्णादीणि होज्ज एगरूवं।
रयणत्तय-मप्पे तह, अण्णोण्णं खलु एगमेगं।।178।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **मोदगे**-मोदक में **सक्करा**-शर्करा **घिदण्णादीणि**-घी, अन्न आदि **एगरूवं**-एकरूप **होज्ज**-होते हैं **तह**-उसी प्रकार **अप्पे**-आत्मा में **खलु**-निश्चय से **रयणत्तयं**-रत्नत्रय (सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र) **अण्णोण्णं**-परस्पर **एगमेगं**-एकमेक होते हैं।

मोक्षमार्गी कौन ?

णिच्छयेण सिवमग्गी, अपमत्तादीइ विज्जमाण-मुणी।
ववहारेण पमत्ते, देसविरदो उवयारेणं।।179।।

अन्वयार्थ-**णिच्छयेण**-निश्चय से **अपमत्तादीइ**-अप्रमत्त आदि गुणस्थान में **विज्जमाण-मुणी**-विद्यमान मुनि **सिवमग्गी**-मोक्ष मार्गी है। **ववहारेण**-व्यवहार से **पमत्ते**-प्रमत्त गुणस्थान में (विद्यमान मुनि मोक्षमार्गी है।) **देसविरदो**-देशव्रती **उवयारेणं**-उपचार से मोक्षमार्गी है।

अविरत सम्यग्दृष्टि मोक्षमार्गी नहीं

अविरद-सम्माइट्ठी, णो कया वि मोक्खमग्गी जहत्थे।
भावि-णेगम-णयादो, विआणेज्जा को वि दोसो ण।।180।।

अन्वयार्थ-**अविरद-सम्माइट्ठी**-अविरत सम्यग्दृष्टि **जहत्थे**-यथार्थ में **कया वि**-कभी भी **मोक्खमग्गी**-मोक्षमार्गी **णो**-नहीं है **भावि-णेगम-णयादो**-भावी नैगम नय की अपेक्षा से वह मोक्षमार्गी है इसमें **को वि**-कोई भी **दोसो**-दोष **ण**-नहीं **विआणेज्जा**-जानना चाहिए।

उपचार से देशव्रती मोक्षमार्गी

बीअं मण्णे रुक्खं, जहा अविरदो मोक्खमग्गी तहा।
अंकुरो तरू मण्णे, उवयारेण देसविरदो वि।।181।।

अन्वयार्थ-जहा-जैसे **बीअं**-बीज को **रुक्खं**-वृक्ष **मण्णे**-माना जाता है **तहा**-उसी प्रकार **अविरदो**-अविरत सम्यग्दृष्टि को **मोक्खमग्गी**-मोक्षमार्गी माना। जैसे **अंकुरो**-अंकुर **तरू**-वृक्ष **मण्णे**-माना जाता है उसी प्रकार **उवयारेण**-उपचार से **देसविरदो**-देशव्रती **वि**-भी (मोक्ष मार्गी कहा गया है)।

पढमादो मिस्संतं, संसार-मग्गी होज्ज णियमेणं।
सत्तमादु सिवमग्गी, अविरदो ण जम्हा ठिदो सो।।182।।

अन्वयार्थ-पढमादो-प्रथम गुणस्थान से **मिस्संतं**-मिश्र गुणस्थान तक (सभी) **णियमेणं**-नियम से **संसार-मग्गी**-संसार मार्गी **होज्ज**-होते हैं (निश्चय से) **सत्तमादु**-सप्तम गुणस्थान से **सिवमग्गी**-मोक्षमार्गी हैं **अविरदो**-अविरत सम्यग्दृष्टि (मार्गी) **ण**-नहीं है **जम्हा**-क्योंकि **सो**-वह **ठिदो**-स्थित है।

अविरत सम्यग्दृष्टि शिवपथोन्मुख

अविरदो गच्छमाणो, ण मोक्खमग्गे सिव-पह-सम्मुहे हु।
मग्ग-मूले ठिदो सो, गमिदुं उस्सुक्को णियमेण।।183।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **अविरदो**-अविरत सम्यग्दृष्टि **सिव-पह-सम्मुहे**-शिव पथ के सम्मुख है, **मोक्खमग्गे**-मोक्षमार्ग में **गच्छमाणो**-गतिमान **ण**-नहीं है **सो**-वह **मग्गमूले**-मार्ग के मूल में **ठिदो**-स्थित है **णियमेण**-नियम से **गमिदुं**-आगे बढ़ने के लिए **उस्सुक्को**-उत्सुक है।

उपचार से मोक्षमार्गी-सोदाहरण

पढम-पय-उत्थंघिदो, जहा थक्कविदुं पयं उस्सुक्को।
तह मण्णे देसवदी, उवयारेण सिवमग्गी सो।।184।।

अन्वयार्थ-**जहा**-जिस प्रकार **पढम**-**पय**-**उत्थंघिदो**-प्रथम पैर उठाया हुआ **पयं**-पैर **थक्कविदुं**-रखने के लिए **उस्सुक्को**-उत्सुक है **तह**-उसी प्रकार **देसवदी**-देशव्रती **मण्णे**-माना जाता है **सो**-वह **उवयारेण**-उपचार से **सिवमग्गी**-मोक्षमार्गी है।

शिवमार्ग मे गति

अइमंदगदीइ मोक्ख-मग्गम्मि पमत्त-संजदा चरंति।
अपमत्त-संजदादी, जहक्कमेण तिव्वगदीए।।185।।

अन्वयार्थ-**पमत्त-संजदा**-प्रमत्त संयत (व्यवहार से) **मोक्खमग्गम्मि**-मोक्षमार्ग में **अइमंदगदीइ**-अतिमंद गति से **चरंति**-गमन करते हैं **अपमत्त-संजदादी**-अप्रमत्त संयत आदि **जहक्कमेण**-यथाक्रम से **तिव्वगदीए**-तीव्र गति से (गमन करते हैं।)

एकांतदृष्टि मिथ्यादृष्टि

जो मण्णदि सम्मत्तं, मोक्खमग्गो सो हु मिच्छाइट्ठी।
णाणं मेत्तं चरियं, अहवा जीवो वि अण्णाणी।।186।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **जीवो**-जीव **मेत्तं**-मात्र **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व को **मोक्खमग्गो**-मोक्ष मार्ग **मण्णदि**-मानता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **मिच्छाइट्ठी**-मिथ्यादृष्टि है **अहवा**-अथवा (जो) **णाणं**-मात्र ज्ञान (या मात्र) **चरियं**-चारित्र को (मोक्षमार्ग मानता है वह) **वि**-भी **अण्णाणी**-अज्ञानी है।

दंसणं णाणं मणदि, मोक्खमग्गो हु मिच्छाइट्ठी सो।
दंसणं चरित्तं वा, णाणं चरित्त-मुहयं जो वि।।187।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो (मात्र) **दंसणं**-**णाणं**-दर्शन, ज्ञान को **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग **मणदि**-मानता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से

मिच्छाइट्ठी-मिथ्यादृष्टि है (जो) **दंसणं**-दर्शन **चरित्तं**-चारित्र **वा**-अथवा **णाणं**-ज्ञान **चरित्तं**-चारित्र **उहयं**-दोनों को (मोक्षमार्ग मानता है वह) **वि**-भी (मिथ्यादृष्टि है)।

रत्नत्रय ही मोक्षमार्ग

सम्मत्तं सण्णाणं, सुचरियं विणा मणदि मोक्खमग्गो।
जो मिच्छाइट्ठी सो, इमेहि विणा हु सिवमग्गो ण।।188।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **सुचरियं**-सम्यक्चारित्र के **विणा**-बिना **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग **मणदि**-मानता है **सो**-वह **मिच्छाइट्ठी**-मिथ्यादृष्टि है **हु**-निश्चय से **इमेहि**-इनके **विणा**-बिना **सिवमग्गो**-मोक्षमार्ग **ण**-नहीं है।

सम्मत्तं सण्णाणं, सच्चरियं भासिदो मोक्खमग्गो।
कस्स वि खेत्ते काले, मोक्खमग्गो होदि ण वियलो।।189।।

अन्वयार्थ-**सम्मत्तं**-सम्यक्त्व **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **सच्चरियं**-सम्यक् चारित्र **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग **भासिदो**-कहा गया है **कस्स वि**-किसी भी **खेत्ते**-क्षेत्र व **काले**-काल में **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग **वियलो**-विकल **ण**-नहीं **होदि**-होता।

चतुर्थ गुणस्थानवर्ती व्रती नहीं

मिस्स-ठाणवट्टी जह, णो णाणी णेव होदि अण्णाणी।
मिस्सं मिस्स-सद्धाइ, णाणं हु जत्तंतरं तस्स।।190।।

तह अविरद-सद्दिट्ठी, ण संसार-मग्गी मोक्ख-मग्गी ण।
जत्तंतरो जीवोत्थि चदुत्थ-ठाणवट्टि-अविरदो।।191।।

अन्वयार्थ-**जह**-जिस प्रकार **मिस्स-ठाणवट्टी**-मिश्र गुणस्थानवर्ती **णो**-न **णाणी**-ज्ञानी (और) **णेव**-न ही **अण्णाणी**-अज्ञानी **होदि**-

होता है **हु**-निश्चय से **मिस्स-सद्धाइ**-मिश्र श्रद्धा से **तस्स**-उसका **णाणं**-ज्ञान **मिस्सं**-मिश्र **जत्तंतरं**-जात्यन्तर होता है **तह**-उसी प्रकार **अविरद-सद्दिट्ठी**-अविरत सम्यग्दृष्टि **ण**-न **संसार-मग्गी**-संसार मार्गी (और) **ण**-न **मोक्खमग्गी**-मोक्षमार्गी है (वह) **जीवो**-जीव **जत्तंतरो**-जात्यंतर (अत्थि) है **चदुत्थ-ठाणवट्टि-अविरदो**-चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अविरत (अर्थात् व्रत से रहित) होता है।

निःशंकित

णिस्संको णिब्भयो हि, जो णिब्भयो सो होदि णिम्मोही।
णिम्मोही अवियारी, णिम्मल-भाविदप्पझाणी य।।192।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिस्संको**-निःशंक है **सो**-वह **हि**-ही **णिब्भयो**-निर्भय **होदि**-होता है **णिब्भयो**-निर्भय **णिम्मोही**-निर्मोही होता है **णिम्मोही**-निर्मोही **अवियारी**-अविकारी होता है (अविकारी) **णिम्मल-भाविदो**-निर्मल भाव वाला **य**-और (वह) **अप्प-झाणी**-आत्म ध्यानी है।

निःकांक्षित

कंखा भव-कारणं च, हेदू भवसुहस्स सुहाभासस्स।
तम्हि रमणं हु मोहो, णिक्कंखिदो मोहविहीणो।।193।।

अन्वयार्थ-कंखा-कांक्षा **भव-कारणं**-संसार का कारण है **भवसुहस्स**-भव सुख **च**-और **सुहाभासस्स**-सुखाभास का **हेदू**-हेतु है **तम्हि**-उसमें **रमणं**-रमण करना **मोहो**-मोह है **मोह-विहीणो**-मोह से हीन **हु**-निश्चय से **णिक्कंखिदो**-निःकांक्षित है।

निर्विजुगुप्सा

रायद्दोसस्स हेदु-सुहासुह-सव्वत्थेसुं लोगस्स।
जाणह दुगुंछणं णो, णिव्विदुगुंछा हु जोगीणं।।194।।

अन्वयार्थ-**रायद्दोसस्स**-**हेदु**-**सुहासुहं**-**सव्वत्थेसुं लोगस्स**-राग-द्वेष के हेतु लोक के शुभ-अशुभ सभी पदार्थों में **णो**-**दुगुंछणं**-ग्लानि नहीं करना **हु**-निश्चय से **जोगीणं**-योगियों का **णिव्विदुगुंछा**-निर्विजुगुप्सा गुण **जाणह**-जानो।

अमूढ़दृष्टि

रदिभावं-पज्जयेसु, जे णो करंति अमूढदिट्ठी ते।
सुद्धप्पा-संलीणा, पज्जयमूढा हि परसमया।।195।।

अन्वयार्थ-**जे**-जो **पज्जयेसु**-पर्यायों में **रदिभावं**-रतिभाव **णो**-नहीं **करंति**-करते **सुद्धप्पा**-**संलीणा**-शुद्धात्मा में संलीन **ते**-वे **अमूढदिट्ठी**-अमूढ़दृष्टि हैं। **पज्जयमूढा**-पर्यायों में मूढ़ **हि**-ही **परसमया**-परसमय हैं।

उपवृंहण

परदव्वाणं जीवो, णो दोसा गुणा वज्जरदि किंचिवि।
पागडदे सहाव-मुवविहणं मुंचित्तु सग-दोसा।।196।।

अन्वयार्थ-**जीवो**-जीव **परदव्वाणं**-परद्रव्यों के **दोसा**-दोष **गुणा**-गुणों का **किंचिवि**-किंचित् भी **णो वज्जरदि**-कथन नहीं करता (जो) **सग**-**दोसा**-अपने दोषों का **मुंचित्तु**-त्यागकर **सहावं**-स्वभाव को **पागडदे**-प्रकट करता है (वह उसका) **उवविहणं**-उपवृंहण गुण है।

स्थितिकरण

धम्म-मग्गम्मि णिच्चं, सवरं ठाविदुं झादि जो भव्वो।
सुद्धुवजोग-जुदो सो, जोगी ठिदिकरणंग-जुत्तो।।197।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **भव्वो**-भव्य **णिच्चं**-नित्य **धम्म**-**मग्गम्मि**-धर्म मार्ग में **सवरं**-स्वपर को **ठाविदुं**-स्थापित करने के लिए **झादि**-

ध्यान करता है **सुद्धुवजोग-जुदो**-शुद्धोपयोग से युक्त **सो**-वह **जोगी**-योगी **ठिदिकरणंग-जुत्तो**-स्थितिकरण अंग से युक्त है।

वात्सल्य

धम्मीणं गुण-पुंजे, रदि-भावं कुणदि अप्प-लीणो जो।
वच्छल्ल-भाव-जुत्तो, पीदि-जुदो अप्प-गुणेसु सो।।198।।

अन्वयार्थ-जो-जो **धम्मीणं**-धर्मियों के **गुण-पुंजे**-गुण-पुंज में **रदिभावं**-रतिभाव **कुणदि**-करता है **अप्प-गुणेसु**-आत्म गुणों में **पीदि-जुदो**-प्रीति से युक्त **अप्प-लीणो**-आत्मलीन **सो**-वह योगी **वच्छल्ल-भाव-जुत्तो**-वात्सल्य भाव से युक्त है।

प्रभावना

जिणसासण-पहावो हु, दरिसदि सग-पर-समय-हिदत्थं जो।
मुणी सुद्धप्प-लीणो, सो पहावणंग-संजुत्तो।।199।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सग-पर-समय-हिदत्थं**-स्वात्म व पर हित के लिए **जिण-सासण-पहावो**-जिन शासन का प्रभाव **दरिसदि**-दिखाता है **सुद्धप्प-लीणो**-शुद्धात्मा में लीन **सो**-वह **मुणी**-मुनि **हु**-निश्चय से **पहावणंग-संजुत्तो**-प्रभावना अंग से संयुक्त है।

निश्चय सम्यग्दृष्टि

सद्दिट्ठी णियमेणं, होंति चदुत्थादु सिद्ध-पेरंतं।
णिच्छय-सम्माइट्ठी, अपमत्तादो मुणेदव्वा।।200।।

अन्वयार्थ-चदुत्थादु-चतुर्थ गुणस्थान से **सिद्ध-पेरंतं**-सिद्ध पर्यंत सभी **णियमेणं**-नियम में **सद्दिट्ठी**-सम्यक्दृष्टि **होंति**-होते हैं **अपमत्तादो**-अप्रमत्त गुणस्थान से **णिच्छय-सम्माइट्ठी**-निश्चय सम्यग्दृष्टि **मुणेदव्वा**-जानने चाहिए।

वीतराग सम्यक्त्व

णिव्वियप्प-झाण-मप्प-रुई सुद्धुवजोगप्पलीणदा हि।
अप्पविसुद्धी अभेय-वीयराय-णिच्छय-सम्मं च।।201।।

अन्वयार्थ-णिव्वियप्प-झाणं-निर्विकल्प ध्यान **अप्प-रुई**-आत्म रुचि **सुद्धुवजोगो**-शुद्धोपयोग **अप्पलीणदा**-आत्मलीनता **च**-और **अप्पविसुद्धी**-आत्म विशुद्धि **हि**-ही **अभेय-वीयराय-णिच्छय-सम्मं**-अभेद वीतराग वा निश्चय सम्यक्त्व है।

होहीअ सिद्धा हु जे, अणाइयालादु अज्ज-पेरंतं।
वीयराय-सम्मत्तं, ताण जाणिज्जदे णाणीहि।।202।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **जे**-जो **अणाइयालादु**-अनादिकाल से **अज्ज-पेरंतं**-आज तक **सिद्धा**-सिद्ध **होहीअ**-हुए हैं **ताण**-उनके **णाणीहि**-ज्ञानियों के द्वारा **वीयराय-सम्मत्तं**-वीतराग सम्यक्त्व **जाणिज्जदे**-जाना जाता है।

इदि पंचमाहियारो

अह षष्टम-सम्मण्णाणाहियारो

षष्टाधिकार मंगलाचरण

सेय-हेदु-सेयंसं, णिम्मोहं सय णिरहेदुं बंधुं।
सग-दोस-विणासत्थं, णमंसामि य गुणलद्धीए।।203।।

अन्वयार्थ-णिम्मोहं-निर्मोही **णिरहेदुं**-अकारण **बंधुं**-बंधु **सेय-हेदु-सेयंसं**-श्रेय के हेतु श्री श्रेयांसनाथ भगवान् को **सग-दोस-विणासत्थं**-स्वदोष के विनाश **य**-और **गुणलद्धीए**-गुणों की प्राप्ति के लिए **सय**-सदा **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

णाणं सोक्ख-णिगरणं, अणंत-णाण-पुंजं वासुपुज्जं।
णमित्ता कित्तिस्सामि, सम्मण्णाणाहियारं हं।।204।।

अन्वयार्थ-णाणं-ज्ञान **सोक्ख-णिगरणं**-सुख का कारण है (ऐसे) **अणंत-णाण-पुंजं**-अनंत ज्ञान के पुंज **वासुपुज्जं**-श्री वासुपूज्य भगवान् को **णमित्ता**-नमस्कार कर **हं**-मैं **सम्मण्णाणाहियारं**-सम्यग्ज्ञानाधिकार को **कित्तिस्सामि**-कहूँगा।

सम्यक्त्वाविनाभावी

सम्मत्तविणाभावी, सम्मण्णाणं हवेदि णियमेणं।
वत्थूण पडिपादगं, जहवट्टियं णिस्संदेहं।।205।।

अन्वयार्थ-सम्मण्णाणं-सम्यग्ज्ञान **णियमेणं**-नियम से **सम्मत्त-विणाभावी**-सम्यक्त्व का अविनाभावी **हवेदि**-होता है (यह) **णिस्संदेहं**-नि:संदेह **वत्थूण**-वस्तुओं का **जहवट्टियं**-यथार्थ **पडिपादगं**-प्रतिपादक होता है।

सम्यग्ज्ञान स्वरूप

हिद-संपत्ति-कारणं, सुसमत्थं जं अहिद-परिहाराय।
तं सण्णाण-पमाणं, ण संभवो विणा सम्मत्तं।।206।।

अन्वयार्थ-**जं**-जो **हिद**-**संपत्ति**-**कारणं**-हित की संप्राप्ति का कारण है **अहिद**-**परिहाराय**-अहित के परिहार के लिए **सुसमत्थं**-सुसमर्थ है **तं**-वह **सण्णाण**-**पमाणं**-सम्यग्ज्ञान प्रमाण है **सम्मत्तं**-सम्यक्त्व के **विणा**-बिना (वह) **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

संसय-विवरीय-रहिद-मणज्झवसाय-विहीणं तहा जं।
अण्णाण-णासगं तं, अट्ठंग-जुत्तं सण्णाणं।।207।।

अन्वयार्थ-**जं**-जो **संसय**-**विवरीय**-**रहिदं**-संशय व विपरीत से रहित **अणज्झवसाय**-**विहीणं**-अनध्यवसाय विहीन **तहा**-तथा **अट्ठंग**-**जुत्तं**-अष्टांग से युक्त है **तं**-वह **अण्णाण**-**णासगं**-अज्ञान का विनाशक **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान है।

सम्यग्ज्ञान अंग

सद्दत्थुहय कालाणि, विणयमुवहाणं तहा बहुमाणं।
अणिण्णवं अट्ठविहं, पालेज्ज सय णाणायारं।।208।।

अन्वयार्थ-**सद्दत्थुहय कालाणि**-शब्द, अर्थ, उभय, काल **विणयं**-विनय **उवहाणं**-उपधान **बहुमाणं**-बहुमान **तहा**-तथा **अणिण्णवं**-अनिह्नव **सय**-सदा **अट्ठविहं**-आठ प्रकार का **णाणायारं**-ज्ञानाचार **पालेज्ज**-पालन करना चाहिए।

सम्यग्ज्ञान भेद

बोहिदुमप्पसरूवं, समत्थं जं संपुण्ण-रूवेणं।
तं सण्णाणं भणिदं, णिच्छय-ववहारादु दुविहं।।209।।

अन्वयार्थ-**जं**-जो **संपुण्ण**-**रूवेणं**-संपूर्ण रूप से **अप्पसरूवं**-आत्म स्वरूप का **बोहिदुं**-ज्ञान कराने में **समत्थं**-समर्थ है **तं**-वह **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **भणिदं**-कहा गया है (वह) **णिच्छय**-**ववहारादु**-निश्चय और व्यवहार के भेद से **दुविहं**-दो प्रकार का है।

सण्णाणं पंचविहं, मदि-सुदोहि-मणपज्जय-केवलाणि।
सव्व-कम्मक्खयेदुं, सक्कं सिव-हेदू णियमेण।।210।।

अन्वयार्थ-सण्णाणं-सम्यग्ज्ञान **पंचविहं**-पाँच प्रकार का है **मदि-सुदोहि-मणपज्जय-केवलाणि**-मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय और केवलज्ञान। (सम्यग्ज्ञान) **सव्व-कम्मक्खयेदुं**-सभी कर्मों का क्षय करने में **सक्कं**-समर्थ है (और) **णियमेण**-नियम से **सिव-हेदू**-मोक्ष का हेतु है।

सम्यग्ज्ञान हेतु

सण्णाणं सुह-हेदू, वेरग्ग-भत्ति-चरिय-तव-झाणाण।
सम्मत्त-विसुद्धीए, वि कारणं होदि सण्णाणं।।211।।

अन्वयार्थ-सण्णाणं-सम्यग्ज्ञान **वेरग्ग-भत्ति-चरिय-तव-झाणाण**-वैराग्य, भक्ति, चारित्र, तप, ध्यान और **सुह-हेदू**-सुख का हेतु है व **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **सम्मत्त-विसुद्धीए**-सम्यक्त्व की विशुद्धि का **वि**-भी **कारणं**-कारण **होदि**-होता है।

स्वार्थ व परार्थ ज्ञान

सव्वं णाणं हवेंति, जिणुद्दिट्ठ-मेरिसं सत्थरूवं।
सत्थेणं सह परत्थ-रूवं वि सुदणाणं मेत्तं।।212।।

अन्वयार्थ-सव्वं णाणं-सभी ज्ञान **सत्थरूवं**-स्वार्थ रूप **हवेंति**-होते हैं **एरिसं**-ऐसा **जिणुद्दिट्ठं**-जिनेंद्र के द्वारा कहा गया है **मेत्तं**-मात्र **सुदणाणं**-श्रुतज्ञान **सत्थेणं**-स्वार्थ के **सह**-साथ **परत्थ-रूवं**-परार्थ रूप **वि**-भी है।

सम्यग्ज्ञान माहात्म्य

सण्णाणं हरदि दुहं, विणस्सदि णियमेण रायद्दोसं।
संवेअ-वेरग्गाण, जिणभत्ति-कारणं पमुक्खं।।213।।

अन्वयार्थ-सण्णाणं-सम्यग्ज्ञान **दुहं**-दु:ख **हरदि**-नष्ट करता है **णियमेण**-नियम से **रायद्दोसं**-रागद्वेष **विणस्सदि**-विनष्ट करता है (तथा) **संवेअ-वेरग्गाण**-संवेग, वैराग्य व **जिणभत्ति-कारणं पमुक्खं**-जिनभक्ति का प्रमुख कारण है।

जो कुव्वदि सण्णाणे, णिय-चित्तं एगग्गो विसुद्धीइ।
झाणुत्तमं सो लहदि, महग्गीव दहेदुं कम्मं।।214।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सण्णाणे**-सम्यग्ज्ञान में **विसुद्धीइ**-विशुद्धि से **णिय-चित्तं**-निज चित्त **एगग्गो**-एकाग्र **कुव्वदि**-करता है **सो**-वह **झाणुत्तमं**-उत्तम ध्यान को **लहदि**-प्राप्त करता है (तथा वह) **कम्मं**-कर्म **दहेदुं**-दहन के लिए **महग्गीव**-महा अग्नि के समान है।

सविकल्प ज्ञान

णाणं सवियप्पो खलु, असुह-वियप्प-मुज्झित्ता णाणेण।
जोगी सुह-संकप्पं, वियप्प-णास-हेदुं गहदे।।215।।

अन्वयार्थ-णाणं-ज्ञान **खलु**-निश्चय से **सवियप्पो**-सविकल्प होता है **जोगी**-योगी **णाणेण**-ज्ञान के द्वारा **असुह-वियप्पं**-अशुभ विकल्प **उज्झित्ता**-त्यागकर **वियप्प-णास-हेदुं**-विकल्प नाश के हेतु **सुह-संकप्पं**-शुभ संकल्प को **गहदे**-ग्रहण करता है।

कर्म क्षयार्थ समर्थ

छउमत्थाणं णाणं, होदि संजुत्त-मण्णाण-भावेण।
तह वि सम्मत्त-जुत्तं, णाणावरण-खयिदुं सक्कं।।216।।

अन्वयार्थ-छउमत्थाणं-छद्मस्थों का **णाणं**-ज्ञान **अण्णाण-भावेण**-अज्ञान भाव से **संजुत्तं**-संयुक्त **होदि**-होता है **तहवि**-तथापि **सम्मत्त-जुत्तं**-सम्यक्त्व से युक्त है तो **णाणावरण-खयिदुं**-ज्ञानावरण का क्षय करने में **सक्कं**-समर्थ है।

इदि छद्दुमाहियारो

अह सत्तम-सम्मचरियाहियारो

सप्तमाधिकार मंगलाचरण

सव्व-मल-रहिद-विमलं, तित्थयरं कम्म-णासगं देवं।
तिअ-कम्म-मल-खयेदुं, पणिवयमि अणंतविसुद्धीइ।।217।।

अन्वयार्थ-सव्व-मल-रहिदं-सर्व मलों से रहित, विमल **कम्म-णासगं**-कर्म नाशक **तित्थयरं**-तीर्थंकर **विमलं**-श्री विमलनाथ **देवं**-देव को **तिअ-कम्म-मल-खयेदुं**-तीनों कर्म (द्रव्य, भाव, नोकर्म) मल के क्षय व **अणंतविसुद्धीइ**-अनंत विशुद्धि के लिए **पणिवयमि**-नमन करता हूँ।

अणंत-चदुट्ठय-सहिद-मणंत-सुह-हेदुं अणंतणाहं।
णमित्ताणंतवारं, णिरूवमि सच्चरियहियारं।।218।।

अन्वयार्थ-अणंत-चदुट्ठय-सहिदं-अनंत चतुष्टय से सहित **अणंत-सुह-हेदुं**-अनंत सुख के हेतु **अणंतणाहं**-श्री अनंतनाथ भगवान् को **अणंतवारं**-अनंतबार **णमित्ता**-नमस्कार करके **सच्चरियहियारं**-सम्यक् चारित्र अधिकार का **णिरूवमि**-निरूपण करता हूँ।

सम्यक् चारित्र स्वरूप

संकप्पेण उज्झणं, ताण विरज्जिय हिंसादि-पावादु।
पालणं सम्मचरियं, महव्वद-समिदि-गुत्तीणं च।।219।।

अन्वयार्थ-हिंसादि-पावादु-हिंसा आदि पापों से **विरज्जिय**-विरक्त होकर **ताण**-उनका **संकप्पेण**-संकल्पपूर्वक **उज्झणं**-त्याग करना **च**-और **महव्वद-समिदि-गुत्तीणं**-महाव्रत, समिति, गुप्तियों का **पालणं**-पालन करना **सम्मचरियं**-सम्यग्चारित्र है।

चारित्र ही सार

णाण-सारो चरित्तं, सम्मत्त-सारो वि भासिदं तं हि।
चरियं विणा ण मग्गो, रयणत्तयं मोक्खमग्गो हु।।220।।

अन्वयार्थ-णाण-सारो-ज्ञान का सार **चरित्तं**-चारित्र है **सम्मत्त-सारो**-सम्यक्त्व का सार **वि**-भी **तं**-वह **हि**-ही **भासिदं**-कहा गया है **चरियं**-चारित्र के **विणा**-बिना **मग्गो**-मार्ग **ण**-नहीं है **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **हु**-निश्चय से **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग है।

चारित्र भेद

चरित्तं पंचविहं च, सामाइयं छेदोवट्ठावणा।
परिहार-विसुद्धि-सुहुम-संपराया जहक्खादं हु।।221।।

अन्वयार्थ-चरित्तं-चारित्र **हु**-निश्चय से **पंचविहं**-पाँच प्रकार का है **सामाइयं**-सामायिक **छेदोवट्ठावणा**-छेदोपस्थापना **परिहार-विसुद्धि-सुहुमसंपराया**-परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म सांपराय **च**-और **जहक्खादं**-यथाख्यात।

सामायिक चारित्र

समत्त-भाव-संजुदं, सव्व-सावज्ज-रहिदं णियमेणं।
सुद्धप्प-ठिदि-कारणं, सामाइय-चरिय-गुणपुंजं।।222।।

अन्वयार्थ-सामाइय-चरिय-गुणपुंजं-गुणों का पुंज सामायिक चारित्र **णियमेणं**-नियम से **समत्त-भाव-संजुदं**-समत्व भाव से संयुक्त **सव्व-सावज्ज-रहिदं**-सर्व सावद्य से रहित **सुद्धप्प-ठिदि-कारणं**-शुद्धात्मा में स्थिति का कारण है।

छेदोपस्थापना चारित्र

वदम्मि दूसिदे ताण, उवट्ठावणं पुण तम्हि चरियम्मि।
छेदोवट्ठावणं हु, दोस-पक्खालगं चरित्तं।।223।।

अन्वयार्थ-वदम्मि-व्रतों के **दूसिदे**-दूषित होने पर **ताण**-उन्हें **पुण**-पुनः **तम्हि**-उसी **चरियम्मि**-चारित्र में **उवट्ठावणं**-उपस्थापन करना

हु-निश्चय से **दोस-पक्खालगं**-दोषों का प्रक्षालक **छेदोवट्ठावणं**-छेदोपस्थापना **चरित्तं**-चारित्र है।

परिहार विशुद्धि चारित्र

जं चरिय-परिहारगं, णिच्चं हिंसादि-सयल-दोसाणं।
पावप्पणासणं तं, पसत्थ-परिहार-विसुद्धी हु।।224।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **जं**-जो **णिच्चं**-नित्य **हिंसादि-सयल-दोसाणं**-हिंसा आदि सकल दोषों का **परिहारगं**-परिहारक है **तं**-वह **पावप्पणासणं**-पापों का नाश करने वाला **पसत्थ-परिहार-विसुद्धी**-प्रशस्त परिहार विशुद्धि **चरियं**-चारित्र है।

सूक्ष्म सांपराय चारित्र

होदि ठाणम्मि जस्सिं, लोहस्सुदयो अइसुहुमरूवेण।
सुहुमसंपराय-चरिय-मप्प-सुहस्स-कारणं तत्थ।।225।।

अन्वयार्थ-**जस्सिं**-जिस **ठाणम्मि**-गुणस्थान में **लोहस्स**-लोभ का **अइसुहुमरूवेण**-अतिसूक्ष्म रूप से **उदयो**-उदय **होदि**-होता है **तत्थ**-वहाँ **अप्प-सुहस्स**-आत्म सुख का **कारणं**-कारण **सुहुमसंपराय-चरियं**-सूक्ष्मसांपराय चारित्र (होता है)।

यथाख्यात चारित्र

मोहुवसमो खयो वा, जत्थ हु जहक्खाद-चरित्तं तत्थ।
केवलि-जिण-वीदराय-छउमत्थाणं होज्ज णिच्चं।।226।।

अन्वयार्थ-**जत्थ**-जहाँ **मोहुवसमो**-मोह का उपशम **वा**-अथवा **खयो**-क्षय है **तत्थ**-वहाँ **हु**-निश्चय से **जहक्खाद-चरित्तं**-यथाख्यात चारित्र है। वह **णिच्चं**-नित्य **केवलि-जिण-वीदराय-छउमत्थाणं**-केवली जिन व वीतराग छद्मस्थों के **होज्ज**-होता है।

निश्चय सामायिक

अप्पलीणस्स वियप्प-हीणस्स सय णिच्छय-सामाइयं।
तं ववहार-संजमं, विणा ण संभवो होदि कया।।227।।

अन्वयार्थ-अप्पलीणस्स-शुद्धात्मा में लीन व **वियप्प-हीणस्स**-विकल्पों से हीन के **सय**-सदा **णिच्छय-सामाइयं**-निश्चय सामायिक **होदि**-होती है। **ववहार-संजमं**-व्यवहार संयम के **विणा**-बिना **तं**-वह (निश्चय सामायिक) **कया**-कभी **संभवो**-संभव **ण**-नहीं है।

शुद्धात्मलीनता प्रतिक्रमण

सुद्धप्पझाण-पलीण-मक्खादं णिच्छयो पडिक्कमणं।
कुणदु सय तं णिच्छयं, जत्थ दोसा णो जंति कया।।228।।

अन्वयार्थ-सुद्धप्पझाण-पलीणं-शुद्धात्म ध्यान में लीन होना **णिच्छयो**-निश्चय **पडिक्कमणं**-प्रतिक्रमण **अक्खादं**-कहा गया है **तं**-उस **णिच्छयं**-निश्चय प्रतिक्रमण को **सय**-सदा **कुणदु**-करना चाहिए **जत्थ**-जहाँ **कया**-कभी **दोसा**-दोष **णो जंति**-उत्पन्न नहीं होते।

आत्मलीनता वंदना

णिच्छये ण होदि को वि, भेयो वंदणीय-वंदारूसुं।
सुद्धप्प-लीण-जोगी, णिच्छय-वंदण-जुदो जाणह।।229।।

अन्वयार्थ-णिच्छये-निश्चय में **वंदणीय-वंदारूसुं**-वंदनीय व वंदक में **को वि**-कोई भी **भेयो**-भेद **ण**-नहीं **होदि**-होता। **सुद्धप्प-लीण-जोगी**-शुद्धात्मा में लीन योगी **णिच्छय-वंदण-जुदो**-निश्चय वंदन से युक्त **जाणह**-जानो।

व्यवहार व निश्चय स्तुति

चउवीस-तित्थयराण, ववहार-थुदी किट्टणं गुणाणं।
अप्प-लीणदा ताए, णिच्छय-थुदी य मुणेदव्वा।।230।।

अन्वयार्थ-चउवीस-तित्थयराण-चौबीस तीर्थंकरों के **गुणाणं**-गुणों का **किट्टणं**-कीर्त्तन करना **ववहार-थुदी**-व्यवहार स्तुति है **य**-और **ताए**-उस व्यवहार स्तुति के द्वारा **अप्पलीणदा**-आत्मा में लीनता **णिच्छय-थुदी**-निश्चय स्तुति **मुणेदव्वा**-जाननी चाहिए।

निश्चय प्रत्याख्यान

जहजोग्गं बहिवत्थुं, उज्झिदूण बहु-पावकारणादो।
सुद्धप्प-परिलीणं हु, णिच्छय-पच्चक्खाणं जाण।।231।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **बहु-पावकारणादो**-बहुत पाप का कारण होने से **जहजोग्गं**-यथायोग्य **बहिवत्थुं**-बाह्य वस्तु का **उज्झिदूण**-त्याग करके **सुद्धप्प-परिलीणं**-शुद्धात्मा में लीन होना **णिच्छय-पच्चक्खाणं**-निश्चय प्रत्याख्यान **जाण**-जानो।

निश्चय-व्यवहार कायोत्सर्ग

कायादि-परदव्वादु, ममत्त-चागणं च ववहारेणं।
णिच्छय-काउस्सग्गो, णादव्वो ठिदी सुद्धप्पे।।232।।

अन्वयार्थ-कायादि-परदव्वादु-शरीर आदि परद्रव्यों से **ममत्त-चागणं**-ममत्व का त्याग करना **ववहारेणं**-व्यवहार से (कायोत्सर्ग है) **च**-और **सुद्धप्पे**-शुद्धात्मा में **ठिदी**-स्थिति **णिच्छय-काउस्सग्गो**-निश्चय कायोत्सर्ग **णादव्वो**-जानना चाहिए।

उभय भ्रष्ट

णिच्छय-चरियेण विणा, ववहार चरिय-पालणं कंखेदि।
जो सो जोगी णेयो, उहय-चरित्त-भट्ठोव्व सया।।233।।

अन्वयार्थ-जो-जो **जोगी**-योगी **णिच्छय-चरियेण**-निश्चय चारित्र के **विणा**-बिना मात्र **ववहार-चरिय-पालणं**-व्यवहार चारित्र के पालन करने की **कंखदि**-आकांक्षा करता है **सो**-वह **सया**-सदा **उहय-चरित्त-भट्ठोव्व**-उभय (व्यवहार व निश्चय) चारित्र से भ्रष्ट के समान **णेयो**-जानना चाहिए।

व्यवहार बिना निश्चय, निश्चय बिना व्यवहार नहीं

ववहारेण विणा णो, णिच्छयो तेण विणा जहत्थो णो।
होदि कया ववहारो, उहय-भट्ठा भव-वड्ढगा हु।।234।।

अन्वयार्थ-ववहारेण-व्यवहार के **विणा**-बिना **कया**-कभी **णिच्छयो**-निश्चय **णो**-नहीं **होदि**-होता (और) **तेण**-उसके (अर्थात् निश्चय के) **विणा**-बिना **ववहारो**-व्यवहार **जहत्थो**-यथार्थ **णो**-नहीं होता। **हु**-निश्चय से **उहय-भट्ठा**-दोनों (व्यवहार व निश्चय) से भ्रष्ट **भव-वड्ढगा**-भव वर्द्धक है।

पुण्य-कारण

णिच्छय-चरियेण विणा, सय वद-तव-सील-समिदि-पालणं च।
तुसिणि-सज्झायमादी, पुण्णस्स कारणं जाणेह।।235।।

अन्वयार्थ-णिच्छय-चरियेण-निश्चय चारित्र के **विणा**-बिना **वद-तव-सील-समिदि-पालणं च**-व्रत, तप, शील व समिति का पालन करना **तुसिणि-सज्झायमादी**-मौन व स्वाध्याय आदि **सय**-सदा **पुण्णस्स**-पुण्य का **कारणं**-कारण **जाणेह**-जानो।

यथार्थ साधु

जो जदी णियसहावे, सया जागरिओ सुद्ध-चित्तेणं।
साहू सो हि जहत्थो, णेयो य परमप्पा भावी।।236।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **जदी**-यति **सुद्ध**-**चित्तेणं**-शुद्ध चित्त से **सया**-सदा **णियसहावे**-निज स्वभाव में **जागरिओ**-जागृत है **सो**-वह **हि**-ही **जहत्थो**-यथार्थ **साहू**-साधु है **य**-और (वह) **भावी**-भावी **परमप्पा**-परमात्मा **णेयो**-जानना चाहिए।

चारित्र बिना आत्मशुद्धि नहीं

दहि-मंथणेणं विणा, णवणीदं णो लहदे कया को वि।
सच्चरित्तं विणा तह, अप्पसुद्धी हु संभवो णो।।237।।

अन्वयार्थ-**दहि**-**मंथणेणं**-दही मंथन के **विणा**-बिना **को वि**-कोई भी **कया**-कभी **णवणीदं**-नवनीत **णो**-**लहदे**-प्राप्त नहीं करता **तह**-उसी प्रकार **हु**-निश्चय से **सच्चरित्तं**-सम्यक्चारित्र के **विणा**-बिना **अप्पसुद्धी**-आत्म शुद्धि **संभवो**-संभव **णो**-नहीं है।

चरियं विणा संवरो, ण संवरं विणा णिज्जरा विदिया।
णिज्जरं विणा ण सिवो, तं विणा सिद्धगुणासक्का।।238।।

अन्वयार्थ-**चरियं**-चारित्र के **विणा**-बिना **संवरो**-संवर **ण**-नहीं है **संवरं**-संवर के **विणा**-बिना **विदिया**-द्वितीय **णिज्जरा**-निर्जरा नहीं है **णिज्जरं**-निर्जरा के **विणा**-बिना **सिवो**-शिव (मोक्ष) **ण**-नहीं है (और) **तं**-उस (मोक्ष) के **विणा**-बिना **सिद्ध**-**गुणा**-सिद्धों के गुण **असक्का**-अशक्य हैं।

इदि सत्तमाहियारो

अह अट्ठम-वेरग्गाहियारो

अष्टमाधिकार मंगलाचरण

जिणसासण-णायगं च, धम्म-पवट्टगं वीयरायिं हं।
सव्वण्हु-धम्मणाहं, वंदेमि सिरसा भत्तीए।।239।।

अन्वयार्थ-जिणसासण-णायगं-जिन शासन के नायक **धम्म-पवट्टगं**-धर्म प्रवर्तक **वीयरायिं**-वीतरागी **च**-और **सव्वण्हु-धम्मणाहं**-सर्वज्ञ श्री धर्मनाथ भगवान् की **हं**-मैं **सिरसा**-सिर झुकाकर **भत्तीए**-भक्ति पूर्वक **वंदेमि**-वंदना करता हूँ।

सोलसम-संतिणाहं, मयणिवासं चक्किं च तित्थयरं।
विस्स-पहुं वंदित्ता, भणेमि वेरग्गाहियारं।।240।।

अन्वयार्थ-विस्सपहुं-विश्वप्रभु **मयणिवासं**-कामदेव **च**-और **चक्किं**-चक्रवर्ती **सोलसम-संतिणाहं-तित्थयरं**-16वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान् की **वंदित्ता**-वंदना करके (मैं) **वेरग्गाहियारं**-वैराग्य अधिकार को **भणेमि**-कहता हूँ।

वैराग्य बिना चारित्र नहीं

भव-तण-भोय-विरत्ती, वेरग्गं तेण विणा सक्का णो।
भासिदं जिणसासणे, सच्चरियुप्पत्ति-ठिदि-विड्ढी।।241।।

अन्वयार्थ-भव-तण-भोय-विरत्ती-संसार-शरीर-भोगों से विरक्ति **जिणसासणे**-जिनशासन में **वेरग्गं**-वैराग्य **भासिदं**-कहा गया है **तेण**-उसके **विणा**-बिना **सच्चरियुप्पत्ति-ठिदि-विड्ढी**-सच्चारित्र की उत्पत्ति, स्थिति व वृद्धि **सक्का**-शक्य **णो**-नहीं है।

यथार्थ बोध

जहत्थ-बोहं विणा ण, कया वि सक्कं जहत्थ-वेरग्गं।
विणा वेरग्गं कहं, हवेज्ज मोक्खमग्गो सक्को।।242।।

अन्वयार्थ-**जहत्थ-बोहं**-यथार्थ बोध के **विणा**-बिना **कयावि**-कभी भी **जहत्थ-वेरग्गं**-यथार्थ वैराग्य **सक्कं**-शक्य **ण**-नहीं है **वेरग्गं**-वैराग्य के **विणा**-बिना **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग **कहं**-किस प्रकार **सक्को**-शक्य **हवेज्ज**-हो सकता है।

वैराग्य हेतु

वेरग्गं हु जहत्थं, संजम-वद-तवज्झाण-हेदू तह।
वेरग्गमण्णं व जदि, जमादी मिट्ठण्णं व तस्स।।243।।

अन्वयार्थ-**जहत्थं**-यथार्थ **वेरग्गं**-वैराग्य **हु**-निश्चय से **संजम-वद-तवज्झाण-हेदू तह**-संयम, व्रत, तप तथा ध्यान का हेतु है **जदि**-यदि **वेरग्गं**-वैराग्य **अण्णं व**-अन्न के समान है तो **जमादी**-संयम आदि **तस्स**-उसके **मिट्ठण्णं व**-मिष्ठान्न के समान हैं।

खीरं व हु वेरग्गं, वद-समिदि-तवादी वंजणं तस्स।
मण्णे तच्च-चिंतणं, गोरसोव्व सगाणुभूदी य।।244।।

अन्वयार्थ-यदि **वेरग्गं**-वैराग्य **खीरं व**-दूध के समान है तो **वद-समिदि-तवादी**-व्रत, समिति, तप आदि **तस्स**-उसके **वंजणं**-व्यंजन **मण्णे**-माने जाते हैं **तच्च-चिंतणं**-तत्त्व-चिंतन **य**-और **सगाणुभूदी**-स्वानुभूति **हु**-निश्चय से **गोरसोव्व**-गोरस के समान माना जाता है।

अशुचि देह

जो आमय-मल-पुंजो, देहो सत्तधादुवधादु-जुत्तो।
पोसे वि जरदि एरिस-देहे को रमदे विवित्तो।।245।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **देहो**-देह **सत्तधादुवधादु-जुत्तो**-सात धातु व उपधातु से युक्त है **आमय-मल-पुंजो**-रोग व मल का पुंज है **पोसे**-पोषण करने पर **वि**-भी **जरदि**-जीर्ण होती है **एरिस-देहे**-ऐसी देह

में **को**-कौन **विवित्तो**-विवेकी **रमदे**-रंजायमान होता है? अर्थात् कोई नहीं।

पुण्यकर्म, रत्नत्रय का हेतु

रयणत्तयस्स हेदू, पुण्ण-कम्मं तव-दाण-पूयादी।
समत्तं सया धरेज्ज, सवर-हिदत्थं इह देहम्मि।।246।।

अन्वयार्थ-तव-दाण-पूयादी-तप, दान, पूजा आदि **पुण्ण-कम्मं**-पुण्य कर्म **रयणत्तयस्स**-रत्नत्रय का **हेदू**-हेतु है। **सवर-हिदत्थं**-स्व-पर हित के लिए **इह**-इस **देहम्मि**-देह में **सया**-सदा **समत्तं**-समता भाव **धरेज्ज**-धारण करना चाहिए।

देह विरक्ति

देह-विरत्तीइ विणा, असंभवो भव-भोयादु विरत्ती।
सम्मरूवेण देहं, उवजुंजदि धम्मज्झाणस्स।।247।।

अन्वयार्थ-देह-विरत्तीइ-देह से विरक्ति के **विणा**-बिना **भव-भोयादु**-संसार-भोगों से **विरत्ती**-विरक्ति **असंभवो**-असंभव है। **धम्मज्झाणस्स**-धर्म ध्यान के लिए **सम्मरूवेण**-सम्यक् रूप से **देहं**-देह का **उवजुंजदि**-उपयोग करना चाहिए।

पंचविध संसार

पंचविहो संसारो, दव्व-खेत्त-काल-भव-भावादो य।
सोक्खं ण भवे अस्सिं, बहु-दुह-कारण-मिणं जाणह।।248।।

अन्वयार्थ-दव्व-खेत्त-काल-भव-भावादो य-द्रव्य, क्षेत्र, काल भव व भाव के भेद से **संसारो**-संसार **पंचविहो**-पाँच प्रकार का होता है **अस्सिं**-इस **भवे**-संसार में **सोक्खं**-सुख **ण**-नहीं है **इणं**-इसे **बहु-दुह-कारणं**-बहुत दु:ख का कारण **जाणह**-जानो।

भवासक्त शिवमार्गी नहीं

णो विरत्तो भवादो, जो सो होज्ज कहं हु मोक्खमग्गी।
विणा भव-विरत्तीए, णिवज्जदे सिवाकंखा णो।।249।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भवादो**-संसार से **विरत्तो**-विरक्त **णो**-नहीं है **सो**-वह **मोक्खमग्गी**-मोक्षमार्गी **कहं**-किस प्रकार **होज्ज**-हो सकता है **भव-विरत्तीए**-संसार से विरक्ति के **विणा**-बिना **हु**-निश्चय से **सिवाकंखा**-मोक्ष की आकांक्षा **णो णिवज्जदे**-निष्पन्न नहीं होती।

संसारी-मुक्त

मण्णदि सुह-हेदू जो, भवं मूढो सो दीह-संसारी।
लहदि कम्मफलं भवे, कम्म-रहिदा होंति मुत्ता हु।।250।।

अन्वयार्थ-जो-जो **मूढो**-मूर्ख **भवं**-संसार को **सुह-हेदू**-सुख का हेतु **मण्णदि**-मानता है **सो**-वह **दीह-संसारी**-दीर्घ संसारी है (वह) **भवे**-संसार में **कम्मफलं**-कर्म का फल **लहदि**-प्राप्त करता है। **कम्म-रहिदा**-कर्मों से रहित **हु**-निश्चय से **मुत्ता**-मुक्त **होंति**-होते हैं।

कम्म-जुदो खलु जीवो, जावदु तावदु हवेदि संसारी।
कम्मक्खय-हेदू तं, वेरग्गं जाण भव-रूवं।।251।।

अन्वयार्थ-जावदु-जब तक **जीवो**-जीव **कम्म-जुदो**-कर्म से युक्त है **तावदु**-तब तक **खलु**-निश्चय से **संसारी**-संसारी **हवेदि**-होता है **वेरग्गं**-वैराग्य **कम्मक्खय-हेदू**-कर्म क्षय का हेतु है **तं**-इसीलिए (वैराग्योत्पत्ति का हेतु) **भव-रूवं**-संसार का स्वरूप **जाण**-जानो।

भोग त्याज्य

रोय-कारणं भोयो, पाव-बीअं दुह-दायगो णिच्चं।
पुण्ण-खयंकरो तहा, तमुज्झेज्ज विरत्त-भावेण।।252।।

अन्वयार्थ-भोयो-भोग **णिच्चं**-नित्य **रोय-कारणं**-रोग का कारण **पाव-बीअं**-पाप का बीज **दुह-दायगो**-दु:ख दायक **तहा**-तथा **पुण्ण-खयंकरो**-पुण्य का नाश करने वाला है (अत:) **तं**-उसे **विरत्त-भावेण**-विरक्त भाव से **उज्झेज्ज**-त्यागना चाहिए।

वैराग्य मोक्षमूल

वेरग्गं सिव-मूलं, अप्पणिहुप्पादगो धम्म-सारो।
परंपराए संवर-णिज्जर-कम्मणास-हेदू य।।253।।

अन्वयार्थ-वेरग्गं-वैराग्य **सिव-मूलं**-मोक्ष का मूल है **अप्पणिहुप्पादगो**-आत्म निधि का उत्पादक **धम्म-सारो**-धर्म का सार **परंपराए**-परंपरा से **संवर-णिज्जर-कम्मणास-हेदू य**-संवर, निर्जरा और कर्म नाश का हेतु है।

इदि अट्ठमाहियारो

णवम-झाणाहियारो

नवमाधिकार मंगलाचरण

तय-पद-धारगं पहुं, कुंथु-आइ-जीव-रक्खगं कुंथुं।
मोहादि-हंतुं सया, तिभत्तीए णमंसामि हं।।254।।

अन्वयार्थ-कुंथु-आइ-जीव-रक्खगं-कुंथु आदि जीवों के रक्षक **तय-पद-धारगं**-त्रय पद धारक **मोहादि-हंतुं**-मोह आदि के हंता **कुंथुं**-श्री कुंथुनाथ **पहुं**-प्रभु को **हं**-मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) **सया**-सदा **तिभत्तीए**-तीन भक्ति से **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

पूयारुह-अरणाहं, झाण-धुरा-धारगं पणिवयित्ता।
सव्वारीण घादगं, पज्जरेमि झाणाहियारं।।255।।

अन्वयार्थ-झाण-धुरा-धारगं-ध्यान धुरा के धारक **सव्वारीण**-सर्व शत्रुओं के **घादगं**-घातक **पूयारुह-अरणाहं**-पूजा के योग्य श्री अरनाथ भगवान् को **पणिवयित्ता**-नमस्कार करके **झाणाहियारं**-ध्यानाधिकार को **पज्जरेमि**-कहता हूँ।

शुभध्यान सुगति-हेतु

सव्व-वियप्प-रहिदम्मि, झाणं चित्त-पणिही एग-विसये।
सुगदि-हेदू सुझाणं, असुहं कारणं दुग्गदीइ।।256।।

अन्वयार्थ-सव्व-वियप्प-रहिदम्मि-सर्व विकल्पों से रहित **एग-विसये**-एक विषय में **चित्त-पणिही**-चित्त की एकाग्रता **झाणं**-ध्यान है **सुझाणं**-सुध्यान **सुगदि-हेदू**-सुगति का हेतु है (व) **असुहं**-अशुभ ध्यान **दुग्गदीइ**-दुर्गति का **कारणं**-कारण है।

अशुभध्यान दुर्गति हेतु

अट्टं रुद्दज्झाणं, पाव-दुग्गदि-कारणं खलु णिच्चं।
अट्टं तिरियाउस्स य, णिरयाउस्स हेदू रुद्दं।।257।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **अट्टं**-आर्त्त व **रुद्दज्झाणं**-रौद्र ध्यान **णिच्चं**-नित्य **पाव-दुग्गदि-कारणं**-पाप व दुर्गति का कारण है **अट्टं**-आर्त्तध्यान **तिरियाउस्स**-तिर्यंच आयु **य**-और **रुद्दं**-रौद्र ध्यान **णिरयाउस्स**-नरक आयु का **हेदू**-हेतु है।

आर्तध्यान

संकिलिट्ठ-भावेहिं, सह सया दुक्खट्ट-परिणामा वा।
भणिदं अट्टज्झाणं, तमुज्झेज्ज धम्म-झाणेदुं।।258।।

अन्वयार्थ-संकिलिट्ठ-भावेहिं-संक्लेशित भावों के **सह**-साथ **दुक्खट्ट-परिणामा वा**-दु:ख या आर्त्त परिणामों को **अट्टज्झाणं**-आर्त्तध्यान **भणिदं**-कहा गया है **धम्म-झाणेदुं**-धर्म ध्यान के लिए **तं**-उस (आर्त्तध्यान) को **सया**-सदा **उज्झेज्ज**-त्यागना चाहिए।

आर्त्तध्यान भेद

चदुविह-मट्टज्झाणं, इट्ठ-विजोगो अणिट्ठ-संजोगो।
पीडा-चिंतणं तहा, भोयाकंखरूव-णिदाणं।।259।।

अन्वयार्थ-अट्टज्झाणं-आर्त्तध्यान **चदुविहं**-चार प्रकार का है **इट्ठ-विजोगो**-इष्ट वियोग **अणिट्ठ-संजोगो**-अनिष्ट संयोग **पीडा-चिंतणं**-पीड़ा-चिंतन **तहा**-तथा **भोयाकंख-रूव-णिदाणं**-भोगाकांक्षा रूप निदान।

आर्त्तध्यान सद्भाव

णिदाण-रहिदं पमत्त-ठाणंतं संभवो झाणमट्टं।
तहा देसविरदंतं, णिदाणं भव-वङ्कगं होज्ज।।260।।

अन्वयार्थ-णिदाण-रहिदं-निदान से रहित **अट्टं झाणं**-आर्त्त ध्यान **पमत्त-ठाणंतं**-प्रमत्त गुणस्थान तक **संभवो**-संभव है **तहा**-तथा

देसविरदंतं-देशविरत गुणस्थान तक **भव-वड्ढगं**-भव वर्द्धक **णिदाणं**-निदान **होज्ज**-होता है।

रौद्र ध्यान

रुद्दं हि रुद्द-भावो, कसायुदयादो पाव-संजुत्तो।
धम्म-घादगं णिच्चं, णिरयाउ-कारणं णियमेण।।261।।

अन्वयार्थ-कसायुदयादो-कषाय के उदय से **पाव-संजुत्तो**-पाप से संयुक्त **रुद्द-भावो**-रौद्र भाव **हि**-ही **रुद्दं**-रौद्र ध्यान है (वह) **णियमेण**-नियम से **धम्म-घादगं**-धर्म घातक व **णिच्चं**-नित्य **णिरयाउ-कारणं**-नरक आयु का कारण है।

रौद्रध्यान भेद

चदुविह-रुद्दज्झाणं, णंदो हु हिंसा-मोस-चोरीसुं।
संग-विसयासत्तीइ, णंदो दोत्थ-कारणं जाण।।262।।

अन्वयार्थ-चदुविह-रुद्दज्झाणं-रौद्रध्यान चार प्रकार का है **हिंसा-मोस-चोरीसुं**-हिंसा, झूठ, चोरी में **णंदो**-आनंद व **संग-विसयासत्तीइ**-परिग्रह-विषयासक्ति में **णंदो**-आनंद। यह **हु**-निश्चय से **दोत्थ-कारणं**-दुर्गति का कारण **जाण**-जानो।

रौद्रध्यान सद्भाव

पंचमगुणठाणंतं, संभवो अइ-असुह-रुद्दज्झाणं।
होज्जा णो तं कया वि, सुह-भद्द-पसत्थ-कारणं च।।263।।

अन्वयार्थ-अइ-असुहं-अति अशुभ यह **रुद्दज्झाणं**-रौद्र ध्यान **पंचमगुणठाणंतं**-पंचम गुणस्थान तक **संभवो**-संभव है **तं**-वह **कया वि**-कभी भी **सुह-भद्द-पसत्थ-कारणं च**-शुभ, भद्र व प्रशस्त का कारण **णो**-नहीं **होज्जा**-होता।

धर्मध्यान

धम्मे सुदे तह तच्च-चिंतणे थिरीकणं णियचित्तस्स।
धम्मज्झाणं जाणह, चदुहा तं मोक्खमग्गीणं।।264।।

अन्वयार्थ-धम्मे-धर्म **सुदे**-श्रुत **तह**-तथा **तच्च-चिंतणे**-तत्त्व चिंतन में **णियचित्तस्स**-निज चित्त का **थिरीकणं**-स्थिर करना **धम्मज्झाणं**-धर्मध्यान **जाणह**-जानो **तं**-वह **मोक्खमग्गीणं**-मोक्ष मार्गियों के लिए **चदुहा**-चार प्रकार का है।

धर्मध्यान भेद

अण्णा-अवाय-विचयं-विवाग-विचयं संठाण-विचयं च।
हवेंति कम्म-णासस्स, णिच्चं झादव्वं धम्मीहि।।265।।

अन्वयार्थ-अण्णा-अवाय-विचयं-आज्ञा विचय, अपाय विचय **विवाग-विचयं**-विपाक विचय **च**-और **संठाण-विचयं**-संस्थान विचय (ये चार धर्मध्यान) **कम्म-णासस्स**-कर्म नाश के लिए **हवेंति**-होते हैं **धम्मीहि**-धर्मियों के द्वारा **णिच्चं**-नित्य **झादव्वं**-ध्यान किया जाना चाहिए।

अण्णा-अवाय-उवाय-विवाग-संठाण-हेदू विरागो।
जीवाजीव-भव-विचय-मक्खिदं अवि धम्मज्झाणं।।266।।

अन्वयार्थ-अण्णा-अवाय-उवाय-विवाग-संठाण-हेदू-आज्ञा, अपाय, उपाय, विपाक, संस्थान, हेतु **विरागो**-विराग **जीवाजीव-भव-विचयं**-जीव, अजीव व भव विचय (ये दस प्रकार के) **धम्मज्झाणं**-धर्मध्यान **अवि**-भी **अक्खिदं**-कहे गए हैं।

पदत्थं पिंडत्थं च, रूवत्थं रूवातीदं झाणं।
संसार-विणासगं च, सव्व-कम्मक्खय-कारणं वि।।267।।

अन्वयार्थ-पदत्थं-पदस्थ **पिंडत्थं**-पिंडस्थ **रूवत्थं**-रूपस्थ **च**-और

रूवातीदं-रूपातीत **झाणं**-ध्यान **संसार-विणासगं**-संसार का विनाशक **च**-और **सव्व-कम्मक्खय-कारणं**-सर्व कर्मक्षय का कारण **वि**-भी है।

पंच धारणा

पुढवी अग्गी वाऊ, जलं तच्चरूववदी धारणा य।
कमेणं मुणेदव्वा, संवर-जुदा सिव-कारणं च।।268।।

अन्वयार्थ-पुढवी-पृथ्वी **अग्गी**-अग्नि **वाऊ**-वायु **जलं**-जल **य**-और **तच्चरूववदी**-तत्त्वरूपवती ये **धारणा**-धारणा **कमेणं**-क्रम से **संवर-जुदा**-संवर से युक्त **च**-और **सिव-कारणं**-मोक्ष का कारण **मुणेदव्वा**-जाननी चाहिए।

धर्म ध्यान सद्भाव

संभवो धम्म-झाणं, अपमत्तंत-मविरद-सम्मत्तादु।
मण्णंति कइ वि सूरी, दहमगुणट्ठाण-पेरंतं।।269।।

अन्वयार्थ-अविरद-सम्मत्तादु-अविरत सम्यक्त्व से **अपमत्तंत**-अप्रमत्त गुणस्थान तक **धम्म-झाणं**-धर्म ध्यान **संभवो**-संभव है **कइ वि सूरी**-कई आचार्य **दहमगुणट्ठाण-पेरंतं**-दशम गुणस्थान पर्यंत भी **मण्णंति**-मानते हैं।

धर्मध्यान कारण

अरिहा सिद्धाइरिया, पाढगा साहू पंच-परमेट्ठी।
एताण सुबिंबाणि वि, धम्मज्झाणस्स कारणं हु।।270।।

अन्वयार्थ-अरिहा-अरिहंत **सिद्धाइरिया**-सिद्ध, आचार्य **पाढगा**-पाठक **साहू**-साधु (ये) **पंच-परमेट्ठी**-पंचपरमेष्ठी (व) **एताण**-इनके **सुबिंबाणि**-सुबिंब **वि**-भी **हु**-निश्चय से **धम्मज्झाणस्स**-धर्म ध्यान का **कारणं**-कारण हैं।

सोक्खदा मूलगुणा हु, पंच-परमेट्ठीण भगवंताणं।
चिंतदि भव्वुल्लो जो, लहदि सया अप्प-संतिं सो।।271।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भव्वुल्लो**-भव्य जीव **पंच-परमेट्ठीण**-पंच परमेष्ठी **भगवंताणं**-भगवंतों के **सोक्खदा**-सुखद **मूलगुणा**-मूलगुणों का **चिंतदि**-चिंतन करता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **सया**-सदा **अप्प-संतिं**-आत्मशांति **लहदि**-प्राप्त करता है।

कल्लाणं विचिंतंति, भव्वा महापुरिस-तित्थयराणं।
लहंति तियालम्मि जे, ते सस्सदं णिव्वाण-पदं।।272।।

अन्वयार्थ-जे-जो **भव्वा**-भव्य जीव **तियालम्मि**-तीनों काल में **महापुरिस-तित्थयराणं**-तीर्थंकर महापुरुषों के **कल्लाणं**-कल्याणकों का **विचिंतंति**-चिंतन करते हैं **ते**-वे **सस्सदं**-शाश्वत **णिव्वाण-पदं**-निर्वाण पद **लहंति**-प्राप्त करते हैं।

शुक्ल ध्यान

सुक्कज्झाणं होज्जा, पिथगत्त-वितक्क-वीयार-पढमं।
विदियमेगत्तवितक्क-अवीयारं च सुदासयेण।।273।।

सुहुमकिरियापडिपाति-तिदियं समुच्छिण्णक्किय तुरियं।
होज्ज केवलि-जिणाणं, रहिदं च सव्वालंबणेण।।274।।

अन्वयार्थ-पढमं-प्रथम **सुक्कज्झाणं**-शुक्ल ध्यान **पिथगत्त-वितक्क-वीयारं**-पृथक्त्व वितर्क वीचार **च**-और **विदियं**-दूसरा **एगत्त-वितक्क-अवीयारं**-एकत्व वितर्क अवीचार **सुदासयेण**-श्रुत के आश्रय से **होज्जा**-होते हैं। **तिदियं**-तृतीय **सुहुमकिरियापडिपाती**-सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती **च**-और **तुरियं**-चौथा **समुच्छिण्णक्कियं**-समुच्छिन्नक्रिया (व्यपुरतक्रियानिवृत्ति) **सव्वालंबणेण**-सभी आलंबनों से **रहिदं**-रहित **होज्ज**-होते हैं (व ये दोनों) **केवलि-जिणाणं**-केवली जिनों के ही होते हैं।

शुक्ल ध्यान सद्भाव

सुक्क-झाणस्स सामी, अजोगंतं उवसंत-कसायादु।
वा अपुव्वकरणादो, मण्णंते कइ वि आइरिया।।275।।

अन्वयार्थ-उवसंत-कसायादु-उपशांत कषाय से **अजोगंतं**-अयोग केवली तक **सुक्क-झाणस्स**-शुक्ल ध्यान के **सामी**-स्वामी हैं **वा**-अथवा **कइवि**-कुछ **आइरिया**-आचार्य **अपुव्वकरणादो**-अपूर्वकरण गुणस्थान से **मण्णंते**-मानते हैं।

प्रशस्त ध्यान ध्यातव्य

दुविहं पसत्थ-झाणं, करेज्ज णिच्चं विसुद्ध-भावेहिं।
जो सो लहेदि सिद्धिं, अणंत-गुणा चेयणाए य।।276।।

अन्वयार्थ-जो-जो **णिच्चं**-नित्य **विसुद्ध-भावेहिं**-विशुद्ध भावों से **दुविहं**-दो प्रकार का **पसत्थ-झाणं**-प्रशस्त ध्यान (धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान) **करेज्ज**-करता है **सो**-वह **चेयणाए**-चेतना के **अणंत-गुणा**-अनंत गुणों **य**-और **सिद्धिं**-सिद्धि को **लहेदि**-प्राप्त करता है।

सुक्किंधणं व कम्मं, जिणुत्तं सुद्धप्पझाण-मग्गीव।
पवणोव्वप्पविसुद्धी, इत्थं कम्माणि दहेज्ज सया।।277।।

अन्वयार्थ-कम्मं-कर्म **सुक्किंधणं व**-शुष्क ईंधन के समान **सुद्धप्प-झाणं**-शुद्धात्म ध्यान **अग्गीव**-अग्नि के समान **अप्पविसुद्धी**-आत्मविशुद्धि **पवणोव्व**-वायु के समान **जिणुत्तं**-जिनेन्द्र भगवान् ने कही है **इत्थं**-इस प्रकार **सया**-सदा **कम्माणि**-कर्मों को **दहेज्ज**-जलाना चाहिए।

धम्मज्झाण-मक्कोव्व, तमोव्व जाणह मोहादि-कम्माणि।
धम्मझाणं विणा णो, विणस्संति मोहादि-कम्मं।।278।।

अन्वयार्थ-धम्मज्झाणं-धर्मध्यान **अक्कोव्व**-सूर्य के समान (व) **मोहादि-कम्माणि**-मोह आदि कर्म **तमोव्व**-अंधकार के समान जानो। **धम्मझाणं**-धर्म ध्यान के **विणा**-बिना **मोहादि-कम्मं**-मोह आदि कर्म **णो विणस्संति**-विनष्ट नहीं होते।

अक्कतावोव्व झाणं, अद्दत्तं व य चित्त-संकिलेसो।
पचंड-धम्मुण्हत्तं, धंसदि संकिलेसं सव्वं।।279।।

अन्वयार्थ-झाणं-ध्यान **अक्कतावोव्व**-अर्क-(सूर्य) के ताप के समान **य**-और **चित्त-संकिलेसो**-चित्त का संक्लेश **अद्दत्तं व**-आर्द्रता के समान है **पचंड-धम्मुण्हत्तं**-प्रचंड धर्म की ऊष्णता **सव्वं**-सर्व **संकिलेसं**-संक्लेश **धंसदि**-नष्ट करती है।

इदि णवमाहियारो

अह दहमो अप्पबोहाहियारो

दशमाधिकार मंगलाचरण

विदियं बालजदिं हं, मल्लिणाहं हु मोहमल्ल-हंतुं।
चित्तस्स विसुद्धीए, ओणंदामि कम्मजिणहुं च।।280।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **मोहमल्ल-हंतुं**-मोह मल्ल के हंता **च**-व **कम्मजिणहुं**-कर्मजयी **विदियं**-द्वितीय **बालजदिं**-बालयति **मल्लिणाहं**-श्री मल्लिनाथ भगवान् का **हं**-मैं **चित्तस्स**-चित्त की **विसुद्धीए**-विशुद्धि के लिए **ओणंदामि**-अभिनंदन करता हूँ।

सुव्वद-धारगं जिणं, मुणिसुव्वदं मुणिंदं अप्पडिमं।
अप्पबोहाहियारं, अभिणंदिदूणं हु वक्खामि।।281।।

अन्वयार्थ-**सुव्वद-धारगं**-सुव्रत धारक **अप्पडिमं**-अनुपम **मुणिंदं**-मुनियों के इंद्र **मुणिसुव्वदं**-श्री मुनिसुव्रतनाथ **जिणं**-जिनेन्द्र भगवान् का **अभिणंदिदूणं**-अभिनंदन करके **हु**-निश्चय से **अप्पबोहाहियारं**-आत्मबोध अधिकार को **वक्खामि**-कहता हूँ।

आत्मसंबोधन

जीवो तुमं सुद्धोत्थि, बुद्धो णाणी हीणो देहादो।
दव्व-भाव-कम्मादो, रायद्दोस-मिच्छत्तादु य।।282।।

अन्वयार्थ-**जीवो**-हे जीव! **तुमं**-तुम **सुद्धोत्थि**-शुद्ध हो **बुद्धो**-बुद्ध हो **णाणी**-ज्ञानी हो **देहादो**-देह से **हीणो**-हीन हो **दव्व-भाव-कम्मादो**-द्रव्य-भाव कर्म **रायद्दोस-मिच्छत्तादु य**-राग-द्वेष और मिथ्यात्व से हीन हो।

कोह-माण-मायादो, रहिदो लोहादो य तुमं जीवो।
हस्स-रदिरदि-सोगादु, सया भय-दुगुंछा-विहीणो।।283।।

अन्वयार्थ-जीवो-हे जीव! **तुमं**-तुम **कोह-माण-मायादो**-क्रोध, मान, माया **य**-और **लोहादो**-लोभ से **रहिदो**-रहित हो **हस्स-रदिरदि-सोगादु**-हास्य, रति, अरति, शोक **सया भय-दुगुंछा-विहीणो**-भय व ग्लानि से सदा विहीन हो।

इत्थि-पुरिस-संढ-वेद-हीणो आहार-देह-अक्खत्तो।
आणापाण-विहीणो, रहिदो भासाइ मणत्तो वि।।284।।

अन्वयार्थ-हे जीव! तुम **इत्थि-पुरिस-संढ-वेद-हीणो**-स्त्री, पुरुष नपुंसक वेद से हीन हो **आहार-देह-अक्खत्तो**-आहार, शरीर, इन्द्रिय **आणापाण-विहीणो**-श्वासोच्छ्वास से विहीन हो **भासाइ**-भाषा व **मणत्तो**-मन से **वि**-भी **रहिदो**-रहित हो।

गदि-अक्ख-सरीर-जोग-वेद-कसाय-विहीणो हे जीवो!।
असण्णि-सण्णि-रहिदो य, लेस्सा-भव्वाहार-हीणो।।285।।

अन्वयार्थ-हे जीवो!-हे जीव! तुम **गदि-अक्ख-सरीर-जोग-वेद-कसाय-विहीणो**-गति, इन्द्रिय, शरीर, योग, वेद, कषाय से विहीन हो **असण्णि-सण्णि-रहिदो**-असंज्ञी, संज्ञी से रहित हो **लेस्सा-भव्वाहार-हीणो य**-लेश्या, भव्यत्व व आहारक हीन हो।

खओवसमियोवसमिय, ओदइय-भाव-हीणो हे जीवो!।
उक्कस्सण-अवकस्सण-संकमण-उदीरणा-हीणो।।286।।

अन्वयार्थ-हे जीवो!-हे जीव! तुम **खओवसमियोवसमिय-ओदइय-भाव-हीणो**-क्षायोपशमिक, उपशम व औदयिक भाव से हीन हो। **उक्कस्सण-अवकस्सण-संकमण-उदीरणा-हीणो**-उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण व उदीरणा से हीन हो।

भेयाभेय-विहीणो, एगाणेग-भेय-हीणो जीवो।
णिरंजणो तह मुत्तो, चिम्मय-भाव-जुत्तो सुद्धो।।287।।

अन्वयार्थ-जीवो-हे जीव! तुम **भेयाभेय-विहीणो**-भेद-अभेद से विहीन **एगाणेग-भेय-हीणो**-एक-अनेक भेद से हीन हो। तुम **णिरंजणो**-निरंजन **चिम्मय-भाव-जुत्तो**-चिन्मय भाव से युक्त **सुद्धो**-शुद्ध **तह**-तथा **मुत्तो**-मुक्त हो।

जीवो णाण-दंसणावरण-मोहंतराय-कम्म-हीणो।
वेदणियाउ-णामादु, गोद-विहीणो णिक्कम्मो य।।288।।

अन्वयार्थ-जीवो-हे जीव! तुम **णिक्कम्मो**-निष्कर्म **णाण-दंसणावरण-मोहंतराय-कम्म-हीणो**-ज्ञानावरण, दर्शनावरण मोहनीय व अंतराय कर्म से हीन हो **वेदणियाउ-णामादु**-वेदनीय, आयु, नाम **य**-और **गोद-विहीणो**-गोत्र कर्म से विहीन **णिक्कम्मो**-निष्कर्म हो।

इह पंचमयालम्मि हु, महापुण्णेणं णरभवो लद्धो।
अप्पहिदं किं ण कुणसि, तुमं सव्व-दुह-विणासेदुं।।289।।

अन्वयार्थ-इह-अब इस **पंचमयालम्मि**-पंचमकाल में **महापुण्णेणं**-महापुण्य से **णरभवो**-नर भव **लद्धो**-प्राप्त किया है। **तुमं**-तुम **सव्व-दुह-विणासेदुं**-सभी दुःखों के नाश के लिए **हु**-निश्चय से **अप्पहिदं**-आत्महित **किं**-क्यों **ण**-नहीं **कुणसि**-करते हो?

मेत्तं माणुस-देहो, संजम-जोग्गो भणिदो जिणसमये।
संजमं किं णो गहसि, भवण्णवे बुड्डदि विणा तं।।290।।

अन्वयार्थ-जिणसमये-जिनशासन में **संजम-जोग्गो**-संयम के योग्य **मेत्तं**-मात्र **माणुस-देहो**-मनुष्य देह **भणिदो**-कही गई है (तुम) **संजमं**-संयम **किं णो गहसि**-ग्रहण क्यों नहीं करते हो **तं**-उस संयम के **विणा**-बिना (जीव) **भवण्णवे**-संसार सागर में **बुड्डदि**-डूब जाता है।

रयणत्तयं णावोव्व, णित्थारिदु-मसीम-भव-सायरादु।
तेण विणा को सक्को, णरो भवण्णवं णित्थरिदुं।।291।।

अन्वयार्थ-रयणत्तयं-रत्नत्रय **असीम-भव-सायरादु**-नि:सीम भव सागर से **णित्थारिदुं**-पार कराने के लिए **णावोव्व**-नौका के समान है **तेण**-उस रत्नत्रय के **विणा**-बिना **को**-कौन **णरो**-नर **भवण्णवं**-भव सागर **णित्थारिदुं**-पार करने में **सक्को**-समर्थ है?

महापुण्णोदयेणं, णरो जिण-सुद-गुरु-सण्णविअं लहदि।
कुणदु सवर-कल्लाणं, दव्वाइ-अणुऊलदं लहिय।।292।।

अन्वयार्थ-णरो-नर **महापुण्णोदयेणं**-महापुण्य के उदय से **जिण-सुद-गुरु-सण्णविअं**-जिनेंद्र प्रभु, श्रुत व गुरु का सान्निध्य **लहदि**-प्राप्त करता है **दव्वाइ-अणुऊलदं**-द्रव्यादि की अनुकूलता **लहिय**-प्राप्त कर **सवर-कल्लाणं**-स्व-पर का कल्याण **कुणदु**-करना चाहिए।

पंचिंदिय-विसया खलु, मण्णंते सय विसोव्व विण्णाणी।
हे जीवो! उज्झित्ता, तं किं णो सुदमियं पिवेसि।।293।।

अन्वयार्थ-विण्णाणी-विशेष ज्ञानी **खलु**-निश्चय से **पंचिंदिय-विसया**-पंचेन्द्रिय के विषयों को **सय**-सदा **विसोव्व**-विष के समान **मण्णंते**-मानते हैं, अत: **हे-जीवो**-हे जीव! **तं**-उसे **उज्झित्ता**-त्यागकर (तुम) **सुदमियं**-श्रुत रूप अमृत का **किं णो पिवेसि**-पान क्यों नहीं करते हो?

जिणवयं परमोसही, जम्म-जरा-मरण-महारोयाणं।
किं णो गहेसि जीवो, णिरामया हि सिद्धावत्था।।294।।

अन्वयार्थ-जम्म-जरा-मरण-महारोयाणं-जन्म, जरा, मरण रूपी महारोगों की **परमोसही**-परमौषधि **जिणवयं**-जिनवचन है। **जीवो**-हे जीव! **किं णो गहेसि**-तुम इसे ग्रहण क्यों नहीं करते हो? **सिद्धावत्था**-सिद्धावस्था **हि**-ही **णिरामया**-निरामय (रोगों से रहित) है।

मोहो मोहदि जीवं, भणिदो समये महा-रिऊ मोहो।
अभिजाणिय सग-सत्तिं, मोह-रिउं किं ण हणसि तुमं।।295।।

अन्वयार्थ-मोहो-मोह **जीवं**-जीव को **मोहदि**-मोहित करता है **समये**-शास्त्र में **मोहो**-मोह **महा-रिऊ**-महा रिपु **भणिदो**-कहा गया है **सगसत्तिं**-अपनी शक्ति को **अभिजाणिय**-पहचानकर **तुमं**-तुम **मोह-रिउं**-मोह रूपी शत्रु का **किं ण हणसि**-हनन क्यों नहीं करते हो?

महामज्जमिव मोहो, जं पिविदूणं खयेदि सण्णाणं।
उज्झेसि किं ण मोहं, भमाडदे जो भव-वणे तं।।296।।

अन्वयार्थ-मोहो-मोह **महामज्जमिव**-महा मद्य के समान है **जं**-जिसे **पिविदूणं**-पीकर **सण्णाणं**-सम्यग्ज्ञान **खयेदि**-नष्ट हो जाता है **जो**-जो **भव-वणे**-भव वन में **भमाडदे**-घुमाता है (तुम) **तं**-उस **मोहं**-मोह का **किं ण उज्झेसि**-त्याग क्यों नहीं करते हो?

मोहो हु महावइरी, गुणत्तयं विणासदि जो अप्पस्स।
सम्म-णाण-चरियाइं, किं ण हणेसि मोहातंगं।।297।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **मोहो**-मोह **महावइरी**-महाबैरी है **जो**-जो **अप्पस्स**-आत्मा के **गुणत्तयं**-तीन गुणों का **सम्म-णाण-चरियाइं**-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र का **विणासदि**-नाश करता है (अतः तुम) **मोहातंगं**-मोहातंक का **किं ण हणेसि**-हनन क्यों नहीं करते हो?

रायो वइस्साणरो, जो दहदे हु सुद्धप्प-गुण-पुंजं।
पुरिसो जो झामेदि, रायं सो णिम्मलो अप्पा।।298।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **रायो**-राग (वह) **वइस्साणरो**-अग्नि है **जो**-जो **सुद्धप्प-गुण-पुंजं**-शुद्धात्म गुण पुंज को **दहदे**-जला देती है। **जो**-जो **पुरिसो**-पुरुष **रायं**-राग को **झामेदि**-जलाता है **सो**-वह **णिम्मलो**-निर्मल **अप्पा**-आत्मा है।

हे जीवो खमाइ-दह-भावा सव्वदा तुमं हि जाणेहि।
किं णो गुणा ओग्गहसि, कम्म-पासं किं ण णासेसि।।299।।

अन्वयार्थ-हे जीवो-हे जीव! **तुमं**-तुम **खमाइ-दह-भावा**-क्षमादि दस भावों को **सव्वदा**-सर्वदा **हि**-ही **जाणेहि**-जानो (तुम) **गुणा**-गुणों को **किं णो ओग्गहसि**-ग्रहण क्यों नहीं करते हो **कम्म-पासं**-कर्म पाश को **किं ण णासेसि**-क्यों नष्ट नहीं करते हो?

अइ-दुल्लहो णराऊ, इंदहमिंदा कंखंते तमेव।
पाविदूणं तुमं तं, सग-देहं किं णो सफलेसि।।300।।

अन्वयार्थ-णराऊ-नर आयु **अइ-दुल्लहो**-अति दुर्लभ है **इंदहमिंदा**-इंद्र-अहमिंद्र भी **तमेव**-उसी की **कंखंते**-आकांक्षा करते हैं। **तुमं**-तुम **तं**-उसे **पाविदूणं**-पाकर **सग-देहं**-निज देह **किं णो सफलेसि**-सार्थक क्यों नहीं करते हो?

भोय-संसार-देहं, किं चिंतेसि मणित्ता सुह-हेदुं।
सव्वं अथिरमसारं, किमिमाणि ण मणसि दुह-हेदू।।301।।

अन्वयार्थ-भोय-संसार-देहं-भोग, संसार, शरीर को **सुह-हेदुं**-सुख का हेतु **मणित्ता**-मानकर **किं-चिंतेसि**-चिंतन क्यों करते हो **सव्वं**-ये सभी **अथिरं**-अस्थिर व **असारं**-असार है (तुम) **इमाणि**-इन्हें **दुह-हेदू**-दुःख का हेतु **किं ण मणसि**-क्यों नहीं मानते?

मिच्छा-दंसण-णाणं, चरियं संसार-कारणं णियमा।
उज्झसि णो हे जीवो, किं हेदुं तिलोग-भमणस्स।।302।।

अन्वयार्थ-मिच्छादंसण-णाणं-मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान व **चरियं**-मिथ्या चारित्र **णियमा**-नियम से **संसार-कारणं**-संसार का कारण हैं। **हे जीवो**-हे जीव! (तुम) **तिलोग-भमणस्स**-त्रिलोक भ्रमण के **हेदुं**-हेतु का **किं णो उज्झसि**-त्याग क्यों नहीं करते हो?

अट्टरुद्दज्झाणं च, दुग्गदि-किलेस-अणिट्ठ-कारणं हु।
किं णो मुंचेसि ताणि, किं णो गहसि धम्म-सुक्कं च।।303।।

अन्वयार्थ-अट्टरुद्दज्झाणं च-आर्त्त और रौद्र ध्यान **हु**-निश्चय से **दुग्गदि-किलेस-अणिट्ठ-कारणं**-दुर्गति, क्लेश व अनिष्ट का कारण है (तुम) **ताणि**-उन्हें **किं णो मुंचेसि**-क्यों नहीं छोड़ते हो **च**-और **धम्म-सुक्कं**-धर्म व शुक्ल ध्यान को **किं णो गहसि**-ग्रहण क्यों नहीं करते?

बहुदुहं सहीअ तुमं, णो सहसि बावीस-परीसहं किं।
परवसं होच्च सहीअ, किं ण धम्मस्स स-वसं होच्चु।।304।।

अन्वयार्थ-तुमं-तुमने **बहुदुहं**-बहुत दु:ख **सहीअ**-सहे। (तुम) **बावीस-परीसहं**-बाईस परीषह **किं णो सहसि**-सहन क्यों नहीं करते। (अब तक) **परवसं**-परवश **होच्च**-होकर **सहीअ**-सहा (अब) **धम्मस्स**-धर्म के लिए **स-वसं**-स्व वश **होच्चु**-होकर **किं ण**-क्यों नहीं सहते?

पराहीणं जो को वि, होच्च भुंजदि संसार-देह-सुहं।
ताइं सव्व-सुहाइं, मण्णे पाव-दुह-कारणं वि।।305।।

अन्वयार्थ-जो-जो **को वि**-कोई भी **पराहीणं**-पराधीन **होच्च**-होकर **संसार-देह-सुहं**-संसार व शरीर सुख **भुंजदि**-भोगता है **ताइं**-वे **सव्व-सुहाइं**-सभी सुख **वि**-भी **पाव-दुह-कारणं**-पाप व दु:ख का कारण **मण्णे**-माने जाते हैं।

जो अवमण्णिदूणं च, जिण-सुद-गुरु-जिणधम्म-वयणाणि सो।
कंखदि जदि सुरसोक्खं, लहदि णिरय-बहुदुहं मूढो।।306।।

अन्वयार्थ-जो-जो **जिण-सुद-गुरु-जिणधम्म-वयणाणि च**-जिनेन्द्र प्रभु, श्रुत, गुरु, जिनधर्म व जिनवचनों का **अवमण्णिदूणं**-

अपमान करके **जदि**-यदि **सुरसोक्खं**-देव सुख कि **कंखदि**-आकांक्षा करता है तो **सो**-वह **मूढो**-मूर्ख है (वह तो) **णिरय-बहुदुहं**-नरक के बहुत दु:ख **लहदि**-प्राप्त करता है।

चिंतसि अहोरत्तीइ, सारदा संसार-सरीर-भोया।
सुह-हेदू संसारो, ण चिंतसि किं तव्विवरीदं।।307।।

अन्वयार्थ-तुम **अहोरत्तीइ**-दिन-रात **संसार-सरीर-भोया**-संसार, शरीर, भोगों को **सारदा**-सार देने वाला **चिंतसि**-चिंतन करते हो **संसारो**-संसार **सुह-हेदू**-सुख का हेतु है (ऐसा चिंतन करते हो) **तव्विवरीदं**-इसके विपरीत **किं ण चिंतसि**-चिंतन क्यों नहीं करते?

बारसाणुवेक्खं जो, चिंतदि णिच्चं विसुद्धभावेहिं।
पावेदि सो हु सारं, सुदणाणं बारसंग-जुदं।।308।।

अन्वयार्थ-**जो**-जो **णिच्चं**-नित्य **विसुद्धभावेहिं**-विशुद्ध भावों से **बारसाणुवेक्खं**-द्वादशानुप्रेक्षा का **चिंतदि**-चिंतन करता है **सो**-वह **हु**-निश्चय से **बारसंग-जुदं**-द्वादशांग युक्त **सुदणाणं सारं**-सार को **पावेदि**-प्राप्त करता है।

बहुं गुरू मणसि तुमं, जाणसि परमत्थ-गुरुं णज्जंतं।
णिग्गंथ-गुरुं सद्दह, मणहि अप्पं गुरू अप्पस्स।।309।।

अन्वयार्थ-**तुमं**-तुम **बहुं**-बहुतों को **गुरू**-गुरु **मणसि**-मानते हो (किंतु) **अज्जंतं**-आज तक **परमत्थ-गुरुं**-परमार्थ गुरु को **ण**-नहीं **जाणसि**-जानते। **णिग्गंथ-गुरुं**-निर्ग्रन्थ गुरु पर **सद्दह**-श्रद्धा करो व **अप्पं**-आत्मा को **अप्पस्स**-आत्मा का **गुरू**-गुरु **मणहि**-मानो।

अप्पुवएसेण विणा, होज्ज णिरट्ठो परुवएसो सया।
अप्प-संबोहणम्मि हु, जिण-वयण-कारणं णियमेण।।310।।

अन्वयार्थ-**हु**-निश्चय से **अप्पुवएसेण**-आत्म उपदेश के **विणा**-बिना **परुवएसो**-परोपदेश **सया**-सदा **णिरट्ठो**-निरर्थक **होज्ज**-होता है **अप्प-संबोहणम्मि**-आत्म संबोधन में **णियमेण**-नियम से **जिण-वयण-कारणं**-जिन वचन कारण हैं।

परणिंदाभावमहं, भणिदं पुण्णं सुहभावं णिच्चं।
पावं दुहस्स-बीअं, सिव-सालंगणी पुण्णं खलु।।311।।

अन्वयार्थ-**परणिंदाभावं**-पर निंदा का भाव **अहं**-अघ (पाप) है **णिच्चं**-नित्य **सुहभावं**-शुभ भाव **पुण्णं**-पुण्य **भणिदं**-कहा गया है **पावं**-पाप **दुहस्स**-दु:ख का **बीअं**-बीज है (व) **पुण्णं**-पुण्य **खलु**-निश्चय से **सिव-सालंगणी**-मोक्ष की सीढ़ी है।

सहदि दुहं णिस्सीलो, सीलवंतो वि सहेदि उवसग्गं।
कुसीलं दुक्ख-हेदू, सुहस्स सीलं तं पालेज्ज।।312।।

अन्वयार्थ-**णिस्सीलो**-शील से रहित **दुहं**-दु:ख **सहदि**-सहन करता है **सीलवंतो**-शीलवान् **वि**-भी **उवसग्गं**-उपसर्ग **सहेदि**-सहता है **कुसीलं**-कुशील **दुक्ख-हेदू**-दु:ख का हेतु है (व) **सीलं**-शील **सुहस्स**-सुख का **तं**-इसीलिए (शील का) **पालेज्ज**-पालन करना चाहिए।

इदि दहमाहियारो

अह एयारहमो समाहि-सिद्धाहियारो

एकादशाधिकार मंगलाचरण

भवण्णवे बुड्डाणं, पाणीणं उक्खंभियो सया जो।
कसायक्खं जिणिदुं च, णमिणाहं अभिणंदामि तं।।313।।

अन्वयार्थ-जो-जो **भवण्णवे**-संसार रूपी सागर में **बुड्डाणं**-डूबते हुए **पाणीणं**-प्राणियों के लिए **सया**-सदा **उक्खंभियो**-अवलंबन हैं **तं**-उन **णमिणाहं**-श्री नमिनाथ भगवान् को **कसायक्खं च**-कषाय व इंद्रियों को **जिणिदुं**-जीतने के लिए **अभिणंदामि**-अभिनंदन करता हूँ।

अरिट्ठ-णेमि-जिणं जदु-कुले मुक्खं मोहतम-विणासगं।
णमित्ता समाहिसिद्धि-महियारं णिरूवेमि सया।।314।।

अन्वयार्थ-जदु-कुले-यदुकुल में **मुक्खं**-मुख्य **मोहतम-विणासगं**-मोह रूपी अंधकार के विनाशक **अरिट्ठ-णेमि-जिणं**-श्री अरिष्ट नेमि जिन को **सया**-सदा **णमित्ता**-नमस्कार करके **समाहिसिद्धिं**-समाधिसिद्धि **अहियारं**-अधिकार का **णिरूवेमि**-निरूपण करता हूँ।

द्विविध धर्म

धम्मो दुविहो भणिदो, सावय-धम्मो तह परंपराए।
मंगल्ल-समण-धम्मो, मोक्ख-कारणं वि तब्भवादु।।315।।

अन्वयार्थ-धम्मो-धर्म **दुविहो**-दो प्रकार का **भणिदो**-कहा गया है **सावय-धम्मो**-श्रावक धर्म **परंपराए**-परंपरा से **तह**-तथा **मंगल्ल-समण-धम्मो**-मंगलकारी श्रमण धर्म **तब्भवादु**-उस भव से **वि**-भी **मोक्ख-कारणं**-मोक्ष का कारण है।

धर्म फल

उहय-धम्माण फलं हि, भणिदं समाहि-मरणं जिणसमये।
समदा-जुद-सुह-मरणं, समाहि-मरणं मुणेदव्वं।।316।।

अन्वयार्थ-जिणसमये-जिनशासन में **उहय-धम्माण**-दोनों धर्मों का **हि**-ही **फलं**-फल **समाहिमरणं**-समाधि मरण **भणिदं**-कहा गया है। **समदा-जुद-सुह-मरणं**-समता से युक्त शुभ मरण **समाहिमरणं**-समाधि मरण **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

आधि-व्याधि-उपाधि त्याग

आहि-वाहि-उवाही य, तिजोगेणुज्झेज्ज पुण्णरूवेण।
आहि-उवाहि-संजुदो, समत्थो ण समाहि-मरणाय।।317।।

अन्वयार्थ-आहि-वाहि-उवाही य-आधि (मानसिक दु:ख), व्याधि व उपाधि को **तिजोगेण**-तीन योग से **पुण्ण-रूवेण**-पूर्ण रूप से **उज्झेज्ज**-त्याग देना चाहिए **आहि-उवाहि-संजुदो**-आधि व उपाधि से संयुक्त जीव **समाहि-मरणाय**-समाधि मरण के लिए **समत्थो**-समर्थ **ण**-नहीं है।

आधि

भोयादीण वियप्पा, असुह-वियप्पा विज्जंति मणे जे।
णादव्वा आही ता, परिहरेज्ज तं जिणवयणेण।।318।।

अन्वयार्थ-भोयादीण-भोग आदि के **वियप्पा**-विकल्प व **असुह-वियप्पा**-अशुभ विकल्प **जे**-जो **मणे**-मन में **विज्जंति**-विद्यमान हैं **ता**-उन्हें **आही**-आधि **णादव्वा**-जानना चाहिए। **जिणवयणेहि**-जिन वचनों से **तं**-उनका **परिहरेज्ज**-परिहार करना चाहिए।

व्याधि

वाय-पित्त-कफ-जणिदा, जे के रोया णिवज्जंति देहे।
ता सव्वा वाही खलु, जिणेज्ज सया काउसग्गेण।।319।।

अन्वयार्थ-वाय-पित्त-कफ-जणिदा-वात, पित्त व कफ से जनित **जे के**-जो कोई **रोया**-रोग **देहे**-देह में **णिवज्जंति**-निष्पन्न होते हैं **ता**-वे **सव्वा**-सभी **वाही**-व्याधि कहलाती है (उन्हें) **सया**-सदा **काउसग्गेण**-कायोत्सर्ग से **जिणेज्ज**-जीतना चाहिए।

उपाधि

कण्णपिय-सेट्ठ-सद्दं, पदिट्ठं थुदि-सक्कार-उवाहीउ।
चिंतेज्ज आमुयित्ता, सव्वदा णिय-सुद्ध-सहावं।।320।।

अन्वयार्थ-कण्णपिय-सेट्ठ-सद्दं-कर्णप्रिय श्रेष्ठ शब्द **पदिट्ठं**-प्रतिष्ठा **थुदि-सक्कार-उवाहीउ**-स्तुति, सत्कार, उपाधियों को **आमुयित्ता**-त्यागकर **सव्वदा**-सर्वदा **णिय-सुद्ध-सहावं**-निज शुद्ध स्वभाव का **चिंतेज्ज**-चिंतन करना चाहिए।

समाधि के पर्यायवाची

समदा सुद्धुवजोगो, सगाणुभूदी णिव्वियप्प-झाणं।
समाही एगट्ठो य, देह-उज्झणं समदाइ वा।।321।।

अन्वयार्थ-समदा-समता **सुद्धुवजोगो**-शुद्धोपयोग **सगाणुभूदी**-स्वानुभूति **णिव्वियप्प-झाणं**-निर्विकल्प ध्यान **य**-और **समाही**-समाधि **एगट्ठो**-एकार्थवाची हैं। **वा**-अथवा **समदाइ**-समता से **देह-उज्झणं**-देह त्याग करना समाधि है।

सामधि मरण ही सार्थकता

फलं विणा जह रुक्खं, होदि णिरट्ठं घिदं विणा खीरं।
समाहि-मरणेण विणा, तव-संजमज्झाणं तहेव।।322।।

अन्वयार्थ-जह-जैसे **फलं**-फल के **विणा**-बिना **रुक्खं**-वृक्ष, **घिदं**-घृत के **विणा**-बिना **खीरं**-दूध **णिरट्ठं**-निरर्थक **होदि**-होता है **तहेव**-उसी प्रकार **समाहि-मरणेण**-समाधि मरण के **विणा**-बिना **तव-संजमज्झाणं**-तप, संयम व ध्यान निरर्थक है।

पढदे जह खंडिगो य, देदि बहु-परिक्खं अणंतरं सो।
पावदि सुहफलं तस्स, फलं विणा पढणं णिरट्ठं।।323।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **खंडिगो**-विद्यार्थी **पढदे**-पढ़ता है **अणंतरं**-अनंतर **सो**-वह **बहु-परिक्खं**-बहुत परीक्षा **देदि**-देता है **य**-और **तस्स**-उसके **सुहफलं**-शुभ फल को **पावदि**-प्राप्त करता है (क्योंकि) **फलं विणा**-फल के बिना **पढणं**-पढ़ना **णिरट्ठं**-निरर्थक है।

समाधिमरण परीक्षा काल

कुव्वेदि तह संजमी, साहणं जव-तव-झाण-संजुत्तं।
तस्स परिक्खण-यालो, समाहि-मरणं मुणेदव्वं।।324।।

अन्वयार्थ-तह-उसी प्रकार **संजमी**-संयमी जो **जव-तव-झाण-संजुत्तं**-जप, तप और ध्यान से युक्त **साहणं**-साधना **कुव्वेदि**-करता है **तस्स**-उसका **परिक्खण-यालो**-परीक्षा काल **समाहि-मरणं**-समाधि मरण **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

रत्नत्रय रक्षा समाधि

रक्खेदि सत्थवाहो, जह सग-रयणाणि भवण-दहणे तह।
देह-जिण्णम्मि जोगी, सम्मत्तादि-सव्व-रयणाणि।।325।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **भवण-दहणे**-भवन में आग लगने पर **सत्थवाहो**-सार्थवाह **सग-रयणाणि**-अपने रत्नों की **रक्खेदि**-रक्षा करता है **तह**-उसी प्रकार **देह-जिण्णम्मि**-देह के जीर्ण होने पर

जोगी-योगी **सम्मत्तादि-सव्व-रयणाणि**-सम्यक्त्वादि सब रत्नों की रक्षा करता है।

सल्लेखना

उववासादि-करणं च, उज्झित्तु ममत्तं देहादीदो।
सल्लेहणा समदाइ, काय-कसाय-किसणं कमेण।।326।।

अन्वयार्थ-देहादीदो-देह आदि से **ममत्तं**-ममत्व **उज्झित्तु**-त्याग कर **उववासादि-करणं**-उपवास आदि का करना **समदाइ**-समता से **कमेण**-क्रम से **काय-कसाय-किसणं च**-काय और कषाय का कृश करना **सल्लेहणा**-सल्लेखना है।

समाधिमरण किसका ?

जिणित्तु रायद्दोसं, परिलीदे जो समभावे णियम्मि।
भुंजदि अप्प-सहावं, होज्ज तस्स समाहि-मरणं च।।327।।

अन्वयार्थ-रायद्दोसं-रागद्वेष **जिणित्तु**-जीतकर **जो**-जो **समभावे**-सम भाव में **णियम्मि**-निज में **परिलीदे**-लीन होता है **च**-और **अप्प-सहावं**-आत्म स्वभाव का **भुंजदि**-अनुभव करता है **तस्स**-उसका **समाहि-मरणं**-समाधि मरण **होज्ज**-होता है।

समभाव स्थिरता

को वि णरो ण जाणदे, मिच्चु-यालं तहा संकड-यालं।
जोगी णिच्चं तम्हा, थंभेज्जा खलु समभावम्मि।।328।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **को वि**-कोई भी **णरो**-नर **मिच्चु-यालं**-मृत्युकाल **तहा**-तथा **संकड-यालं**-संकट काल को **ण**-नहीं **जाणदे**-जानता **तम्हा**-इसीलिए **जोगी**-योगी को **णिच्चं**-नित्य **समभावम्मि**-समभाव में **थंभेज्जा**-स्थिर रहना चाहिए।

मृत्युकाल अनिश्चित

सिसु-बाल-तरुण-किसोर-पोढ-वुड्ढ-अवत्थाए सव्वदा।
अहवा गब्भत्थस्स वि, अणिच्छिदो खलु मिच्चु-यालो।।329।।

अन्वयार्थ-खलु-निश्चय से **सव्वदा**-सर्वदा **सिसु-बाल-तरुण-किसोर-पोढ-वुड्ढ-अवत्थाए**-शिशु, बाल, यौवन, किशोर, प्रौढ़ व वृद्धावस्था में **अहवा**-अथवा **गब्भत्थस्स**-गर्भस्थ का **वि**-भी **मिच्चु-यालो**-मृत्यु काल **अणिच्छिदो**-अनिश्चित है।

होदि तणू विणस्सरा, सस्सदो अविणस्सरो तह अप्पा।
चिंतसि किं देहंतं, तुमं सगप्प-हिदं किं णेव।।330।।

अन्वयार्थ-तणू-तनु (काया) **विणस्सरा**-विनश्वर **तह**-तथा **अप्पा**-आत्मा **सस्सदो**-शाश्वत व **अविणस्सरो**-अविनश्वर **होदि**-होती है। **तुमं**-तुम **देहंतं**-शरीर के अंत की **किं चिंतसि**-चिंता क्यों करते हो **सगप्प-हिदं**-स्वात्म हित की (चिंता) **किं णेव**-क्यों नहीं (करते हो)?

पंचविध मरण

मरणं पणविहं बाल-बालं बालं बाल-पंडिदं तह।
पंडिद-मरणं तुरियं, पणम-पंडिद-पंडिदं जाण।।331।।

अन्वयार्थ-मरणं-मरण **पणविहं**-पाँच प्रकार के **जाण**-जानो **बाल-बालं**-बाल-बाल **बालं**-बाल **बाल-पंडिदं**-बाल-पंडित **तुरियं**-चौथा **पंडिद-मरणं**-पंडित मरण **तह**-तथा **पणमं**-पाँचवाँ **पंडिद-पंडिदं**-पंडित-पंडित।

बाल-बाल व बाल मरण

मिच्छत्त-सासणेसुं, णादव्वं मरणं बाल-बालं च।
अविरद-सद्दिट्ठीए, मरणं बालं जिणक्खादं।।332।।

अन्वयार्थ-मिच्छत्त-सासणेसुं-मिथ्यात्व व सासादन गुणस्थान में **बाल-बालं**-बाल-बाल **मरणं**-मरण **णादव्वं**-जानना चाहिए **च**-और **अविरद-सद्दिट्ठीए**-अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में **बालं**-बाल **मरणं**-मरण **जिणक्खादं**-जिनेंद्र भगवान् के द्वारा कहा गया है।

बालपंडित मरण

देसवदीणं मरणं बाल-पंडिदं हु सुलेस्सा-सहिदं।
सुणाणी सया जहण्ण-समाहिमरणं मुणेदव्वं।।333।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **देसवदीणं**-देशव्रतियों का **सुलेस्सा-सहिदं**-शुभ लेश्या से सहित **बाल-पंडिदं**-बाल पंडित **मरणं**-मरण **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए। **सुणाणी**-सुज्ञानियों को (यह) **सया**-सदा **जहण्ण-समाहिमरणं**-जघन्य समाधिमरण जानना चाहिए।

पंडित मरण

सयल-संजम-सहिदाण, इंदिय-विजइ-जहाजाद-मुणीणं।
जं अह-रहिद-णाणीण, मरणं तं पंडिदं णेयं।।334।।

अन्वयार्थ-सयल-संजम-सहिदाण-सकल संयम से सहित **अह-रहिद-णाणीण**-पाप रहित ज्ञानी **इंदिय-विजइ-जहाजाद-मुणीणं**-इंद्रिय विजयी, यथाजात मुनियों के **जं**-जो **मरणं**-मरण है **तं**-उसे **पंडिदं**-पंडित मरण **णेयं**-जानना चाहिए।

पमत्तविरद-ठाणादु, उवसंत-गुणट्ठाण-पेरंतं हु।
हवेदि जं मरणं तं, पंडिद-मरणं मुणेदव्वं।।335।।

अन्वयार्थ-पमत्तविरद-ठाणादु-प्रमत्त विरत गुणस्थान से **उवसंत-गुणट्ठाण-पेरंतं**-उपशांत मोह गुणस्थान पर्यंत **जं**-जो **मरणं**-मरण **हवेदि**-होता है **तं**-उसे **हु**-निश्चय से **पंडिद-मरणं**-पंडित मरण **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

पंडित-पंडित मरण

अजोग-केवलि-ठाणे, होदि मरणं जं केवलि-जिणाणं।
तं पंडिद-पंडिदं हि, मरणं णिच्चं मुणेदव्वं।।336।।

अन्वयार्थ-अजोग-केवलि-ठाणे-अयोग केवली गुणस्थान में **केवलि-जिणाणं**-केवली जिनों का **जं**-जो **मरणं**-मरण **होदि**-होता है **तं**-उसे **णिच्चं**-नित्य **हि**-ही **पंडिद-पंडिदं**-पंडित-पंडित **मरणं**-मरण **मुणेदव्वं**-जानना चाहिए।

लहदि मरणं मरणस्स, पंडिद-पंडिदं जो को वि भव्वो।
तब्भवादु सो णियमा, सस्सदक्खय-णिव्वाण-पदं।।337।।

अन्वयार्थ-जो-जो **को वि**-कोई भी **भव्वो**-भव्य **मरणस्स**-मरण के भी **मरणं**-मरण **पंडिद-पंडिदं**-पंडित पंडित मरण को **लहदि**-प्राप्त करता है **सो**-वह **णियमा**-नियम से **तब्भवादु**-उसी भव से **सस्सदक्खय-णिव्वाण-पदं**-शाश्वत, अक्षय निर्वाण पद को प्राप्त करता है।

पंडित मरण पश्चात् सात-आठ भव

लहदे पंडिद-मरणं, जो को वि भव्वो समत्त-भावेण।
उक्कस्सेण पावदे, सत्तट्ठ-भवेसु मोक्खं सो।।338।।

अन्वयार्थ-जो को वि-जो कोई भी **भव्वो**-भव्य **समत्त-भावेण**-समत्व भाव से **पंडिद-मरणं**-पंडित मरण **लहदे**-प्राप्त करता है **सो**-वह **उक्कस्सेण**-अधिक से अधिक **सत्तट्ठ-भवेसु**-सात-आठ भवों में **मोक्खं**-मोक्ष **पावदे** प्राप्त करता है।

बाल मरण से संख्यात भव

लहदि जो को वि भव्वो, मरणं बाल-पंडिदं सुभावेहि।
सो संखेज्ज-भवेसुं, पावेदि णिव्वाणं णियमा।।339।।

अन्वयार्थ-जो को वि-जो कोई भी **भव्वो**-भव्य **सुभावेहि**-शुभ भावों से **बाल-पंडिदं**-बाल-पंडित **मरणं**-मरण **लहदि**-प्राप्त करता है **सो**-वह **णियमा**-नियम से **संखेज्ज-भवेसुं**-संख्यात भवों में **णिव्वाणं**-निर्वाण **पावेदि**-प्राप्त करता है। (जो जीव अंतर्मुहूर्त के लिए भी सम्यक्त्व प्राप्त करता है वह अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल में मोक्ष प्राप्त करता है किंतु जो सम्यक्त्व सहित मरण करता है वह संख्यात भवों में मोक्ष प्राप्त करता है)।

लहदि बाल-मरणं जदि, ता भव्वुल्लो खलु थोग-यालम्मि।
मुत्तित्थिं पावित्ता, वसदि सिवे अणंतकालस्स।।340।।

अन्वयार्थ-जदि-यदि **भव्वुल्लो**-भव्य **बाल-मरणं**-बाल मरण **लहदि**-प्राप्त करता है **ता**-तो **खलु**-निश्चय से **थोग-यालम्मि**-स्तोक काल में **मुत्तित्थिं**-मुक्ति रूपी स्त्री को **पावित्ता**-प्राप्त कर **अणंतकालस्स**-अनंत काल के लिए **सिवे**-मोक्ष में **वसदि**-निवास करता है।

मिथ्यादृष्टि को शिवप्राप्ति अनिश्चित काल

मिच्छत्त-सहिद-भव्वो, मरणं पावेदि बाल-बालं जदि।
अणिच्छिद-यालम्मि सो, कुव्वेदि सगप्प-कल्लाणं।।341।।

अन्वयार्थ-जदि-यदि **मिच्छत्त-सहिद-भव्वो**-मिथ्यात्व सहित भव्य **बाल-बालं**-बाल-बाल **मरणं**-मरण **पावेदि**-प्राप्त करता है तो **सो**-वह **अणिच्छिद-यालम्मि**-अनिश्चित काल में **सगप्प-कल्लाणं**-अपनी आत्मा का कल्याण **कुव्वेदि**-करता है।

सल्लेखना कब ?

उवसग्गे दुब्भिक्खे, तिव्व-रोया सरीरे णिप्फण्णे।
पडिगारो णो सक्को, जदि देहमुज्झेज्ज धम्मेण।।342।।

अन्वयार्थ-उवसग्गे-उपसर्ग आने पर **दुब्भिक्खे**-दुर्भिक्ष होने पर

सरीरे-शरीर में **तिव्व-रोया**-तीव्र रोग **णिप्फण्णे**-निष्पन्न होने पर **जदि**-यदि **पडिगारो**-प्रतिकार **सक्को**-शक्य **णो**-नहीं है (तब) **धम्मेण**-धर्मपूर्वक **देहं**-देह **उज्झेज्ज**-त्याग देनी चाहिए।

आहार ग्रहण कारण

जीव-रक्खाय संजम-सिद्धीइ साहणाइ सज्झायाय।
वेज्जावच्चाय तहा, मुणी साहगा आहारंति।।343।।

अन्वयार्थ-जीव-रक्खाय-जीवों की रक्षा **संजम-सिद्धीइ**-संयम सिद्धि **साहणाइ**-साधना **सज्झायाय**-स्वाध्याय **तहा**-तथा **वेज्जावच्चाय**-वैय्यावृत्ति के लिए **मुणी**-मुनि **साहगा**-साधक **आहारंति**-आहार ग्रहण करते हैं।

आहार त्याग कारण

तव-विड्ढि-सील-संजम-सल्लेहणाणं ममत्त-चागाय।
रायदोस-णिवट्टीइ, जोगी मुंचेज्ज आहारं।।344।।

अन्वयार्थ-तव-विड्ढि-सील-संजम-सल्लेहणाणं-तप वृद्धि, शील, संयम, सल्लेखना के लिए **ममत्त-चागाय**-ममत्व-त्याग (व) **रायदोस-णिवट्टीइ**-राग-द्वेष की निवृत्ति के लिए **जोगी**-योगी **आहारं**-आहार का **मुंचेज्ज**-त्याग करते हैं।

सल्लेखना फल

गहदि सल्लेहणं जो, भुंजदि सुहं सो दीहयालंतं।
इंदाइ-सुहं भुंजिय, णियमेण लहेदि णिव्वाणं।।345।।

अन्वयार्थ-जो-जो **सल्लेहणं**-सल्लेखना **गहदि**-ग्रहण करता है **सो**-वह **दीहयालंतं**-दीर्घ काल तक **सुहं**-सुख **भुंजदि**-भोगता है (तथा) **इंदाइ-सुहं**-इंद्र आदि के सुख **भुंजिय**-भोगकर **णियमेण**-नियम से **णिव्वाणं**-निर्वाण **लहेदि**-प्राप्त करता है।

इदि एयारहमाहियारो

अह बारस-समयसाराहियारो

द्वादशाधिकार मंगलाचरण

समत्त-वाउणा जस्स, संवड्ढिदो सुक्कझाणग्गी तं।
थुवमि उवसग्ग-जइणं, विग्घंतस्स पासणाहं च।।346।।

अन्वयार्थ-समत्त-वाउणा-समत्व रूपी वायु के द्वारा **जस्स**-जिनकी **सुक्कझाणग्गी**-शुक्ल ध्यान रूपी अग्नि **संवड्ढिदो**-संवर्द्धित है **तं**-उन **उवसग्ग-जइणं**-उपसर्ग जयी **पासणाहं**-श्री पार्श्वनाथ भगवान् की **विग्घंतस्स**-विघ्नों के अंत के लिए **थुवमि**-स्तुति करता हूँ।

णिक्कम्म-सील-सहिदं, संलीणं हु सुद्धप्प-सहावम्मि।
वंदित्ता धीर-वीरं, समयसारहियारं वोच्छं।।347।।

अन्वयार्थ-हु-निश्चय से **णिक्कम्म-सील-सहिदं**-निष्कर्म स्वभाव से सहित **सुद्धप्प-सहावम्मि**-शुद्धात्म स्वभाव में **संलीणं**-संलीन **धीर-वीरं**-धीर वीर जिनेन्द्र की **वंदित्ता**-वंदना करके **समयसारहियारं**-समयसार अधिकार को **वोच्छं**-कहूँगा।

समयार्थ

समयो णेयो अप्पा, कालो सत्थं च सासणं धम्मो।
अप्पं हु गहेज्ज एत्थ, सासमि सुद्धसहावं तस्स।।348।।

अन्वयार्थ-समयो-समय को **अप्पा**-आत्मा **कालो**-काल **सत्थं**-शास्त्र **सासणं**-शासन **च**-और **धम्मो**-धर्म **णेयो**-जानना चाहिए (किन्तु) **एत्थ**-यहाँ **हु**-निश्चय से **अप्पं**-आत्मा **गहेज्ज**-ग्रहण करना चाहिए (मैं) **तस्स**-उसके ही **सुद्धसहावं**-शुद्ध स्वभाव को **सासमि**-कहता हूँ।

सिद्धत्व ही समयसार

समयसारो सिद्धत्त-ममुस्स हेदू रयणत्तयं जाण।
तस्स जिण-सुद-मुणी ते, हेदू वि ववहार-धम्मस्स।।349।।

अन्वयार्थ-**सिद्धत्तं**-सिद्धत्व **समयसारो**-समयसार है **अमुस्स**-इसका **हेदू**-हेतु **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **जाण**-जानो। **तस्स**-उसका **वि**-भी **हेदू**-हेतु **जिण-सुद-मुणी**-जिन, शास्त्र व मुनि हैं **ते**-वे ही **ववहार-धम्मस्स**-व्यवहार धर्म के कारण हैं।

व्यवहार व मोक्षमार्ग

सम्मदंसणं णाणं, चरियं च ववहारेण सिवमग्गो।
रयणत्तय-जुत्तप्पा, मोक्ख-मग्गो तह णिच्छयेण।।350।।

अन्वयार्थ-**सम्मदंसणं-णाणं**-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान **च**-और **चरियं**-सम्यक् चारित्र **ववहारेण**-व्यवहार से **सिवमग्गो**-मोक्षमार्ग है **तह**-तथा **रयणत्तय-जुत्तप्पा**-रत्नत्रय से युक्त आत्मा **णिच्छयेण**-निश्चय से **मोक्खमग्गो**-मोक्षमार्ग है।

आत्मरत्नत्रय

अप्पं विणा ण वट्टदि, रयणत्तयं खलु अण्ण-दव्वेसुं।
णिच्छयेण सिव-मग्गो, रयणत्तय-जुदो अप्पा तं।।351।।

अन्वयार्थ-**खलु**-निश्चय से **अप्पं विणा**-आत्मा के बिना **रयणत्तयं**-रत्नत्रय **अण्ण-दव्वेसुं**-अन्य द्रव्यों में **ण वट्टदि**-वर्तन नहीं करता **तं**-इसीलिए **रयणत्तय-जुदो**-रत्नत्रय से युक्त **अप्पा**-आत्मा **णिच्छयेण**-निश्चय से **सिव-मग्गो**-मोक्षमार्ग है।

निश्चय से जीव अभेद

आसवो णत्थि जीवे, बंधो संवरो णिज्जरा मोक्खो।
णिच्छयेण ण पोग्गलो, ण मुत्त-संसारीण भेदो।।352।।

अन्वयार्थ-**णिच्छयेण**-निश्चय से **जीवे**-जीव में **आसवो**-आस्रव **बंधो**-बंध **संवरो**-संवर **णिज्जरा**-निर्जरा **मोक्खो**-मोक्ष **णत्थि**-नहीं है **ण**-न **पोग्गलो**-पुद्गल है (और) **ण**-न **मुत्त-संसारीण**-मुक्त व संसारी का **भेदो**-भेद है।

सुद्धणिच्छयणयेण ण, होदि विरदाविरद-भाव-जुदप्पा।
णो होदि पमत्तो सो, णेव अपमत्तो तह कया वि।।353।।

अन्वयार्थ-सुद्धणिच्छयणयेण-शुद्ध निश्चय नय से **विरदाविरद-भाव-जुदप्पा**-विरत-अविरत भाव से युक्त आत्मा **ण**-नहीं **होदि**-होती। **सो**-वह **णो**-ना **पमत्तो**-प्रमत्त **होदि**-होती है **तह**-तथा **कया वि**-कभी भी **अपमत्तो**-अप्रमत्त **णेव**-नहीं होती।

रायदोसो ण जीवे, ण मोहो ण इंदिय-विसया कया वि।
ण कसायो णो वेदो, णो सोगादि-दुब्भावणा हि।।354।।

अन्वयार्थ-जीवे-जीव में **कया वि**-कभी भी **राय-दोसो**-राग-द्वेष **ण**-नहीं है **ण**-न **मोहो**-मोह है **ण**-न **इंदिय-विसया**-इंद्रिय-विषय हैं **ण**-न **कसायो**-कषाय है **णो**-न **वेदो**-वेद है **णो**-न **सोगादि-दुब्भावणा**-शोक आदि दुर्भावना **वि**-भी है।

णिच्छयेणं जीवस्स-गदि-आदि-मग्गणा ण कुलं जादी।
होज्ज णो गुणट्ठाणं, जीव-समासो णो सण्णा य।।355।।

अन्वयार्थ-णिच्छयेणं-निश्चय से **जीवस्स**-जीव के **गदि-आदि-मग्गणा**-गति आदि मार्गणा **ण**-नहीं है **कुलं**-कुल **जादी**-जाति नहीं है (उसके) **गुणट्ठाणं**-गुणस्थान **णो**-नहीं **होज्ज**-होता **णो**-न **जीव-समासो**-जीव-समास **य**-और (न) **सण्णा**-संज्ञा ही होती है।

रागी ही कर्म बंधक

जहा चिक्कण-मल्लस्स, रादे धूली कणं सरीरेणं।
तह राग-जुत्त-जीवो, णियमेण भव-बंधगो होदि।।356।।

अन्वयार्थ-जहा-जिस प्रकार **चिक्कण-मल्लस्स**-स्निग्धता युक्त पहलवान के **सरीरेणं**-शरीर से **धूली कणं**-धूली कण **रादे**-चिपकते हैं **तह**-उसी प्रकार **राग-जुत्त-जीवो**-राग से युक्त जीव **णियमेण**-नियम से **भव-बंधगो**-भव-बंधक **होदि**-होता है।

राग रहित बंध नहीं

मसण-लुक्खेहि रहिदो, गहिदुं धूलिं समत्थो ण मल्लो।
वीयरायो मुणी जह, कम्म-बंधिदुं ण सक्को तह।।357।।

अन्वयार्थ-जह-जिस प्रकार **मसण-लुक्खेहि**-स्निग्ध व रूक्ष से **रहिदो**-रहित **मल्लो**-पहलवान **धूलिं**-धूली **गहिदुं**-ग्रहण करने में **समत्थो**-समर्थ **ण**-नहीं है **तह**-उसी प्रकार **वीयरायो**-वीतरागी **मुणी**-मुनि **कम्म-बंधिदुं**-कर्म बंध करने में **सक्को**-शक्य **ण**-नहीं है।

संकोच-विस्तार शक्ति युतात्मा

कम्म-संजुदे अप्पे, होदि णियमा संकोड-वित्थारं।
कम्म-रहिद-सुद्धप्पा, संकोड-वित्थार-विहीणो।।358।।

अन्वयार्थ-कम्म-संजुदे-कर्म से संयुक्त **अप्पे**-आत्मा में **णियमा**-नियम से **संकोड-वित्थारं**-संकोच व विस्तार **होदि**-होता है (तथा) **कम्म**-रहिद-**सुद्धप्पा**-कर्म से रहित शुद्धात्मा **संकोड-वित्थार-विहीणो**-संकोच व विस्तार से विहीन है।

आत्म प्रदेश समान

अप्पस्स असंखेज्जा, पदेसा हसंति वड्ढंति ण कया।
होंति समाण-पदेसा, सुहुमकुंथुम्मि राघवे वा।।359।।

अन्वयार्थ-अप्पस्स-आत्मा के **असंखेज्जा**-असंख्यात **पदेसा**-प्रदेश **ण**-न **कया**-कभी **हसंति**-घटते हैं, (न) **वड्ढंति**-वृद्धिंगत होते **सुहुमकुंथुम्मि**-सूक्ष्म कुंथु जीव **वा**-अथवा **राघवे**-राघव मच्छ में **समाण-पदेसा**-आत्मा के प्रदेश समान **होंति**-होते हैं।

असंख्यात प्रदेशी द्रव्य

लोग-धम्माधम्माण, जावइय-पदेसा कालणू होंति।
तावइय-असंखेज्जा, पदेसा जीवस्स तिक्काले।।360।।

अन्वयार्थ-लोग-धम्माधम्माण-लोकाकाश, धर्म, अधर्म द्रव्य के

जावइय-पदेसा-जितने प्रदेश व **कालणू**-कालाणु **होंति**-होते हैं **जीवस्स**-जीव के **तिक्काले**-तीनों काल में **तावइय-असंखेज्जा**-उतने ही असंख्यात **पदेसा**-प्रदेश होते हैं।

शुद्ध नय से जीव शुद्ध

ववहारेणं जीवो, संसारी य परिअट्टयो गदीसु।
जम्म-मरण-रहिदो सो, सुद्धणयेण सिद्धो सुद्धो।।361।।

अन्वयार्थ-ववहारेणं-व्यवहार से **जीवो**-जीव **संसारी**-संसारी **य**-और **गदीसु**-गतियों में **परिअट्टयो**-भ्रमण करने वाला है **सो**-वह **सुद्धणयेण**-शुद्ध नय से **जम्म-मरण-रहिदो**-जन्म व मरण से रहित **सुद्धो**-शुद्ध व **सिद्धो**-सिद्ध है।

बंधापेक्षा जीव मूर्तिक

ववहारेणं जीवो, बंधावेक्खाइ मुत्तिगो भणिदो।
कत्तू अवि कज्जाणं, होदि ताण फलाण भोत्तू य।।362।।

अन्वयार्थ-ववहारेणं-व्यवहार से **जीवो**-जीव **बंधावेक्खाइ**-बंध की अपेक्षा **मुत्तिगो**-मूर्त्तिक **भणिदो**-कहा गया है (वह) **कज्जाणं**-कार्यों का **कत्तू**-कर्ता **य**-और **ताण**-उनके **फलाण**-फलों का **भोत्तू**-भोक्ता **अवि**-भी **होदि**-होता है।

व्यवहार से विकारी भावों का कर्ता व भोक्ता

ववहारेणं जीवो, पोग्गल-कम्माण वियारि-भावाण।
कत्तू तहा वि भोत्तू, इत्थं णाणी मुणेज्जा खलु।।363।।

अन्वयार्थ-ववहारेणं-व्यवहार से **जीवो**-जीव **पोग्गल-कम्माण**-पुद्गल कर्मों व **वियारि-भावाण**-विकारी भावों का **कत्तू**-कर्त्ता **तहा**-तथा **भोत्तू**-भोक्ता **वि**-भी है **खलु**-निश्चय से **इत्थं**-इस प्रकार **णाणी**-ज्ञानी को **मुणेज्जा**-जानना चाहिए।

शुद्ध नय से शुद्ध भाव कर्ता

सुद्धणयेणं जीवो, कत्तू भोत्तू य सुद्धभावाणं।
परं अमुत्तिगो सो हु, होदि सय सचदुट्ठय-सहिदो।।364।।

अन्वयार्थ-सुद्धणयेणं-शुद्ध नय से **जीवो**-जीव **सुद्धभावाणं**-शुद्ध भावों का **कत्तू**-कर्त्ता **य**-और **भोत्तू**-भोक्ता है **परं**-किन्तु **सो**-वह **हु**-निश्चय से **अमुत्तिगो**-अमूर्तिक व **सय**-सदा **सचदुट्ठय-सहिदो**-स्व-चतुष्टय से सहित **होदि**-होता है।

स्वभावात्मा शुद्ध है

सम्मत्त-णाणादि-गुण-सहिदो य मोहादि-विहाव-रहिदो।
सस्सद-चिम्मय-सहाव-सहिदप्पा सुद्धो सत्तीइ।।365।।

अन्वयार्थ-सम्मत्त-णाणादि-गुण-सहिदो सम्यक्त्व, ज्ञानादि गुणों से सहित **य**-और **मोहादि-विहाव-रहिदो**-मोह आदि विभाव से रहित **सस्सद-चिम्मय-सहाव-सहिदप्पा**-शाश्वत, चिन्मय स्वभाव से सहित आत्मा **सत्तीइ**-शक्ति से **सुद्धो**-शुद्ध है।

अप्पा-सुद्धावत्थं, लहदे जीवो सुद्धुवजोगेणं।
असुद्धुवजोग-चागं, विणा ण छुट्टदि तस्स फलादु।।366।।

अन्वयार्थ-जीवो जीव **सुद्धुवजोगेणं**-शुद्धोपयोग से **अप्पा-सुद्धावत्थं**-आत्मा की शुद्धावस्था को **लहदे** प्राप्त करता है **असुद्धुवजोग-चागं**-अशुद्ध उपयोग के त्याग के बिना जीव **तस्स**-उसके **फलादु**-(सुख-दुःख रूप) फलों से **ण** नहीं **छुट्टदि**-छूटता।

अंतिम मंगलाचरण

तिभत्तीए उसहादु, वीरंतं थवमि सव्व-तित्थयरा।
जम्मु-सामि-पेरंतं, केवली अणंतवीरिआदु।।367।।

अन्वयार्थ-उसहादु-श्री ऋषभदेव भगवान् से **वीरंतं**-श्री महावीर स्वामी तक **सव्व-तित्थयरा**-सभी तीर्थंकरों की व **अणंतवीरिआदु**-

श्री अनंतवीर्य से **जम्मु-सामि-पेरंतं**-श्री जंबूस्वामी पर्यंत (केवली) सभी केवलियों की **थवमि**-स्तुति करता हूँ।

सव्व-सुद-केवली गणहरा एय-वि-इड्ढि-धारग-मुणिणो।
मुणी पंचमयालस्स, वंदामि सगप्प-सुद्धीए।।368।।

अन्वयार्थ-सव्व-सुद-केवली-सभी श्रुत केवलि **गणहरा**-गणधर **एय-वि-इड्ढि-धारग-मुणिणो**-एक भी ऋद्धि के धारक मुनियों (व) **पंचमयालस्स**-पंचमकाल के सभी **मुणी**-मुनियों की **सगप्प-सुद्धीए**-अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए **वंदामि**-वंदना करता हूँ।

चरियचक्कि-सूरिसंति-सिंधुं अइसेसिं णिरामगंधं।
जिणधम्म-सुपहावगं, विसेसेण संपइ पणमामि।।369।।

अन्वयार्थ-अइसेसिं-महिमान्वित **णिरामगंधं**-निर्दोष चारित्र वाले **विसेसेण**-विशेष रूप से **संपइ**-वर्तमान काल में **जिणधम्म-सुपहावगं**-जिनधर्म के सुप्रभावक **चरियचक्कि-सूरिसंति-सिंधुं**-चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सिंधु को **पणमामि**-नमस्कार करता हूँ।

तस्स सिस्सं तवस्सिं, णमोयारस्स य कोडि-जव-कत्तुं।
पाय-सिंधु-मइभद्दं, णमामि सुहभत्ति-रायेणं।।370।।

अन्वयार्थ-तस्स-उनके (आचार्य शांतिसागर जी के) **सिस्सं**-शिष्य **णमोयारस्स**-णमोकार की **कोडि-जव-कत्तुं**-करोड़ों जाप के कर्ता **य**-और **अइभद्दं**-अतिभद्र **तवस्सिं**-तपस्वी **पाय-सिंधुं**-पाप सिंधु को **सुह-भत्ति-रायेणं**-शुभ भक्ति के राग से **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

इंदिय-मण-जेदुं हं, अज्झप्प-संतं जयकित्ति-सूरिं।
स-विहाव-वियडि-जिणिदुं, पणिवयामि तियसंझाए।।371।।

अन्वयार्थ-इंदिय-मण-जेदुं-इन्द्रिय और मन के जेता **अज्झप्प-संतं**-अध्यात्म संत **जयकित्ति-सूरिं**-आचार्य श्री जयकीर्ति जी को **स-विहाव-वियडि-जिणिदुं**-स्वविभाव व विकृति को जीतने के लिए **हं**-मैं **तियसंझाए**-तीनों संध्याकाल में **पणिवयामि**-नमस्कार करता हूँ।

णिब्भीगं पडिसंतं, सहज-साहग-पडुसं विण्णाणिं।
देसस्स भूसणं सय, सूरि-देसभूसणं णमामि।।372।।

अन्वयार्थ-णिब्भीगं-निर्भीक **पडिसंतं**-प्रशांत **सहज-साहग-पडुसं**-सहज साधक, सुसंयमी **विण्णाणिं**-विज्ञानी **देसस्स**-देश के **भूषणं**-भूषण **सूरि-देसभूसणं**-आचार्य श्री देशभूषण को **सय**-सदा **णमामि**-नमस्कार करता हूँ।

जेण किवा-दिट्ठीए, लिहिदो गंथो पणोल्लियासीए।
तं बालजदिं कुसलं, देसपसिद्धं रट्ठसंत-पच्चइयं।।373।।
सिद्धंत-चक्किं च सिद-पिच्छाइरिय-विज्जाणंदं।
णमंसामि कारुणियं, गुरुं सस्सद-णंदं लहिदुं।।374।।

अन्वयार्थ-जेण-जिनकी **किवा-दिट्ठीए**-कृपा दृष्टि और **पणोल्लियासीए**-प्रेरकाशीष से (यह) **गंथो**-ग्रंथ **लहिदो**-लिखा गया **तं**-उन **बालजदिं**-बालयति **कुसलं**-कुशल **पच्चइय**-ज्ञानवान् **देस-पसिद्धं**-देश प्रसिद्ध **कारुणियं**-कृपालु **रट्ठसंतं**-राष्ट्रसंत **सिद्धंत-चक्किं**-सिद्धांत चक्रवर्ती **च**-और **सिद-पिच्छाइरियं**-श्वेत पिच्छाचार्य **विज्जाणंद**-श्री विद्यानंद जी **गुरुं**-गुरु को **सस्सद-णंदं**-शाश्वत आनंद को **लहिदुं**-प्राप्त करने के लिए **णमंसामि**-नमस्कार करता हूँ।

ग्रंथकार की लघुता

सम्मणाण-विसुईए, पमादेणं वा अप्पणाणेणं।
णाणी खमंतु मे सय, जदि खलिदा वण्णमत्तादी।।375।।

अन्वयार्थ-सम्मणाण-विसुईए-सम्यग्ज्ञान की विस्मृति से **पमादेणं**-प्रमाद से **वा**-अथवा **अप्पणाणेणं**-अज्ञान से **जदि**-यदि **वण्णमत्तादी**-वर्ण, मात्रा आदि **खलिदा**-स्खलित हुए हों तो **णाणी**-ज्ञानीजन **मे**-मुझे **सय**-सदा **खमंतु**-क्षमा करें।

हंसोव्व सुदिट्ठीए, पढंतु गंथं गुणगाहगा होच्चु।
सारभूदं हिदत्थं, लहंतु सेयत्थी भावेहि।।376।।

अन्वयार्थ-हंसोव्व-हंस के समान **सुदिट्ठीए**-सुदृष्टि से **गुणगाहगा**-गुणग्राहक **होच्चु**-होकर (इस) **गंथं**-ग्रंथ को **पढंतु**-पढें **सेयत्थी**-श्रेयार्थी **भावेहि**-भावों के द्वारा **सारभूदं**-सारभूत (और) **हिदत्थं**-हितार्थ को **लहंतु**-प्राप्त करें।

प्रशस्ति

अंबर-गदि-वण्ण-सेणि-वीरद्धे जिट्ठ-सुक्क-पणमीए।
ससि-वारे पुण्णाहे, सुह-उडु-जोगम्मि थिर-लगणे।।377।।
भारदे इंदपत्थे, पसिद्धे रत्तजिणालयम्मि तहा।
पासणाह-सम्मुहम्मि, पुण्णो गंथो अप्पविहवो।।378।।

अन्वयार्थ-अंबर-गदि-वण्ण-सेणि-वीरद्धे-अंबर (0) गदि (4), वर्ण (5), श्रेणी (2) किंतु अंकानां वामतो गतिः से 254 वीर निर्वाणाब्धि **जिट्ठ-सुक्क-पणमीए**-ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी **ससि-वारे**-सोमवार **पुण्णाहे**-शुभ दिन **सुह-उडु-जोगम्मि**-शुभ नक्षत्र, शुभ योग **तह**-तथा **थिर-लगणे**-स्थिर लगन में **भारदे**-भारत देश **इंदपत्थे**-इंद्रप्रस्थ में **पसिद्धे**-प्रसिद्ध **रत्तजिणालयम्मि**-लाल जिनालय में **पासणाह-सम्मुहम्मि**-श्रीपार्श्वनाथ भगवान् के सम्मुख (यह) **अप्पविहवो**-अप्पविहवो (आत्मवैभव) नामक **गंथो**-ग्रंथ **पुण्णो**-पूर्ण हुआ।